अनुक्रम भूमिका आदि ख़रीज ग्रंथ आदि लिखतकी अनुक्रमः॥

श्रीपार्श्वपुराणभाषाछंदवद्धअनुक्रमः

❀ भजन राग सोरठ ❀

अंतरउज्जल करनारे 'भइ' अंतर उज्जलकरनारे । आचली कपट कृपाणतनै नहीं तवलौं, करनी काज न सरनारे ॥१॥ अंतर उज्जल करनारे । जपतप तीरथ यज्ञ व्रतादिक, आगम अरथ उचरनारे । विषय कषाय कीच नहिं धोई, योंही पचपचि मरनारे ॥ २ ॥ अंतर उज्जल करनारे । बाहर भेष क्रियाउर शुचिसों, कीये पार उतरनारे । नाहीं है सबलोक रंजना, ऐसे वेदन वरनारे ॥ ३ ॥ अंतर उज्जल करनारे । कामादिक मलसोंमन मैला, भजनकिये क्या तरनारे । भूधर नील वसनपर कैसे केसररंग उघरनारे ॥ ४ ॥ अंतर उज्जल करनारे ॥



* भूमिका *

॥ २८ मात्रा हरिगीत छंद ॥

शुभ देशकाशी नगर वाना, रस विषै जिनरवि उगे ।
पितु अश्वसेनरु मात वामा, देवि उर पंकज जगे ॥
धरयोग लघु वयमांहि सह, उपसर्ग शम्बर मदहरो ।
पुनिवरी शिवसो पार्श्वप्रभु मम, बुद्धि को निर्मल करो ॥ १ ॥

विद्वज्जन चरणाम्बुज रज अमनसिंह विष्णुसिंह आत्मज अग्रवाल गोयल गोत्र जिनमत दिगम्बर आम्नाय धारक सुनपत नगर निवाशी हाल अपील नवीस दिल्ली इंद्रप्रस्थ कश्मीरी दरवाजा धर्म अनुरागी पुरुषों की सेवा में सविनय निवेदन करता है कि जब मेरी अवस्था अनुमान चौंतीस वर्ष की हुई तब मुझको सकल गुण निवास पण्डित मेहरचन्ददासजी लघुभ्राता पंडित मथुरादासजी

१—यह एक छोटासा नगर अनुमान तेरहहजार (१३०००) मनुष्यों की बसासत का दिल्ली नगर से अट्ठाईस मील वायव्य कोन में बसता है जो अढ़ाईसौ घर अग्रवाल जैनियों और तीन जैनमंदिर शिखर बंद एक चैत्यालयसे शोभायमानहै॥

२—पंडित मेहरचन्द दासजी लाला गंगादास जी अग्रवाल के लघुपुत्र संस्कृत हिंदी भाषा के सिवाय फारसी भाषा के भी भलीभांति ज्ञाताहैं श्री सज्जन चित्तवल्लभ काव्य मुनि मल्लिसेन जैन आचार्य रचित की अन्वय पदच्छेद सहित संस्कृत और हिंदी भाषा टीका लिखकर प्रति संस्कृत श्लोक हिंदी मत्तगयन्द नाम अति ललित छंद बनाये-गुलिस्तां-पंदनामा फारसी पुस्तक विद्वान नीतिज्ञ शेख सादी शीराज़ी रचित जो नीतमार्ग में बड़ी प्रशंसनीय प्रसिद्ध पुस्तक हैं हिंदी भाषा में पुष्पोवन-शिक्षापत्री नामकर बड़ा उत्तम अनुवाद (तर्जमा) किया जो देखने योग्य है पंडित मथुरादासजी आपके बड़े भ्राता जैन पंडितों में खंडन मंडन विषय बड़े विख्यात वाद विजई पंडित थे कातिक मास सम्वत उन्नीस सौ चवालीस (१९४४) विक्रमि में स्वर्ग वाशी हुये ॥

सुनपत नगर शोभित की प्रेरणा से भाषा जैन शास्त्रौं के अवलोकन का मन में उत्साह बढ़ा सो मैंने भाषा छंद बध भूधर जैन शतक कविवर भूधरदासजी रचितको जो अति निर्ग्रन्थ ललित पद्यौं के समुदाय औ बहु निर्मल उपदेशक अभिप्राय से नाना प्रकार के मन हरण छन्दों में रचा हुआ एक अनूठा विचित्र कुसुमाकर है विन.र कर शब्दार्थ सरलार्थ अर्थ प्रकाशनी नामा टीका से संशोभित कर प्रकाशित किया और तत्काल अति दृढ़ता के साथ यह विचार निश्चल करा कि श्री पार्श्वपुराण भाषा छंदबध कविवर भूधरदास जी रचित को जो प्रायः मूर्ख लेखकौं की अज्ञानता कारण शब्दौं और छंद मात्राओं से बहुत कुछ अशुद्ध होरहा था शुद्ध करूं सो अपने विचार पूर्वक बड़े परिश्रम से कई एक प्रति प्राचीन पुस्तक भाषा पार्श्वपुराण और अनेक संस्कृत हिंदी भाषा शब्दार्थ कोष पिंगल शास्त्र संचय कर बुद्धिवानों की सहायता लें धीर्यता सहित अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार सम्वत उन्नीस सौ चव्वन विक्रमी में ग्रन्थ संशोधन कर एक ऐसा विचित्र यंत्र वनाकर लगाया जिससे सर्व छंद ग्रन्थ प्रति अधिकार की नामौं सहित गणिता प्रघट हो पुनि अनुक्रम से छंद प्रति पिंगल शास्त्र अनुसार लक्षण लिख दिया जिससे पाठकगण छंद लक्षण जानकर छंद चाल भलीभांति उच्चारण करने लगें और एक शब्दार्थ कोष (१४०८) शब्द संस्कृत हिंदी भाषा ग्रन्थ सम्बधिका ग्रन्थ के अन्त में लिखागया जिसका लाभ भी पाठक गणों को जैसा कुछ है प्रत्यक्ष है और एक ऐसी अनुक्रमणिका ग्रन्थ के आदि में लिखकर लगाई गई है जिससे जो विषय ग्रन्थका देखना चाहो छंद संख्या सहित तुरत मिलजावें पुनि एक यंत्र ऐसा वनाया गया है कि जो शब्द वाक्य इस पुस्तक विषय मैंने लिखा है और किसी पुस्तक में उसी शब्द वाक्य के स्थानपर दूसरी प्रकार दृष्टिगोचर हुवाहै उसको भी पाठक पुरुष देखकर भले बुरेका विचारकरलें अब समयपाकर यह कहनाभी अवश्यहै कि कविवर भूधरदासजी

१— कविवर भूधर दासजी खंडेलवाल मुहम्मदशाह वादशाह के वारे संवत् १७८० सत्रहसौ अस्सी विक्रमी में आगरे नगर संशोभित थे जैनकविमंडली में आप बड़े विख्यात थे निम्न लिखे हिंदी भाषा पुस्तक आपके रचे हुए प्रसिद्ध हैं। श्रीपार्श्वनाथ पुराणछंदबध १ चरचासमाधान वचनका २ पुरुषार्थसिद्धुपाय वचनका ३ भूधर-

ने यह हिंदी भाषा पार्श्वपुराण किसी विशेष पार्श्व पुराण प्राकृत संस्कृत भाषा का अनुवाद नहीं करा है वरन किसी ग्रन्थ से कथाका मूल आशय लेकर अपनी बुद्धि अनुसार ग्रन्थ के हरएक स्थलको ऐसा विस्तार पूर्वक वर्णन करा जिस की प्रशंसा में द्विजिव्हा लेखनी असमर्थ है इस विद्वान पुरुषके समय योग्य सुन्दर ललित पदों में शिक्षित वचन ऐसे मनमोहन हैं जिनको श्रवण करने से ऐसा कौन कठोर चित्त मनुष्य होगा जिसके हृदय पर उपका विचित्र चित्रांम चित्रित न होगा नरक दुःख कथा जोगीरासा बारह भावना बाईस परीषह सप्त

विलास छंदबंध ४ इस विलास में भूधर जैनशतक १ प्रस्तावीक शतक २ भूपाल चतुर्विंशतिकास्तोत्र ३ एकीभाव स्तोत्र ४ भजन विनती स्तुति कई प्रकार की छोटी कथा आदि खरीज ५ ॥

२—हिंदी भाषा में पुस्तकों की रचना अनुमान बारहसै वर्ष से पाई जाती है अवंतीपुरके प्राचीन इतिहास राजिस्तान पुस्तक लिखत में ऐसा लिखा मिला है कि संवत् सातसौ सत्तर में पुण्य नाम कवि ने संस्कृत अलंकार को हिंदी भाषा दोहों में वर्णन करा मानो उसी समयसे इस प्रफुल्लित वृक्ष की जड़ जमी शनैः शनैः संवत् सोलहसै में यह वृक्ष भली प्रकार फूला फला हिंदी भाषा ने यथावत बहुत कुछ उन्नति करी काव्य साहित नायका भेद पिंगल वैदक गणित गायन आदि विद्या की बड़ी बड़ी पुस्तकें रची गईं जैनियों में भी इस भाषा के प्रचार का विशेष कर येही समय संवत् सोलहसै पाया जाता है जैनियों में पंडित बनारसीदास जी शाहजहां बादशाह के बारे में आगरा नगर विषै हिंदी भाषा के महान कवि हुये आपका रचाहुआ समयसार नाटक द्रव्यांग कथनी में बड़ा अनूपम ग्रंथ है इस समय यह हिंदी भाषा बड़ी प्रचलित है परन्तु व्याकरण का प्रबंध कोई नहीं हुआ लिखने पढ़ने में अपनी २ बोली अनुसार निम्न लिखे वर्णों वा शब्दों में कुछ भी विवेक और अन्तर नहीं करते (ख,ष,) (श, स, ष,) (ब, व,) (ज, य,) (र, ल,) (क्ष, प, छ,) (ण, न,) (बनता, बनिता,) (भरम, भिरम, भ्रम,) (पाय, पांय पाव,) (भान, भानु,) (मार्ग, मारग,) (कृपा, किरपा,) कोई किसी शब्द पर अनुस्वार कोई अर्द्ध अनुस्वार कोई नहीं लिखता है ॥

विपन निंदा आदि कैसी कुछ उत्तम योग्य कथनी हैं आपने हर एक अंग कवि धर्म का पूरा २ निर्वाह करा है साधूजन कभी पाप कर्म के उदय औ क्रोधादिक कषायन के प्रबल होने से क्लेशित हो अपने निज धर्म से डिगने लगते है तो ऐसी ही यज्ञ पुरुषों की पुनीत कथा उत्तम कवियों की रची हुईका श्रवण उनको उस निज धर्म पर स्थिर कर देता है ॥ उक्तंच दोहा छंद ॥ साधूजन के चित्तको, जथ कर्मन अनुसार । घेरैं पाप प्रकृतिन के, काम क्रोध बटमार ॥ तिन इक तिर्थंकर कथा, दूजो को वर वीर । जो इन दुष्टन मंडली, करैं नाश धर धीर ॥ सो यह हिंदी भाषा पार्श्वपुराण कविवर भूधरदास जी ने पांच वर्ष कुछ सरस काल विषै रच कर संवत् सत्तरहसौ नवासी आषाढ़ सुदी ५ को संपूरण करा जो मान्य होकर सूर्यवत प्रकाशित है, खोजने से विदित हुआ कि श्रीपार्श्वनाथ स्वामी सनबंधि पुराण वा चरित्र इस समय तक देखे वा सुने जाते हैं सो यह हैं ॥

ग्रन्थ नाम	भाषा	आचार्य नाम	आचार्य इतिहास
१ पार्श्वपुराण	प्राकृत	नागदेव	इस आचार्य ने शीतलनाथ पुराण प्राकृत भाषा और मदनराज ग्रंथ संस्कृत में रचा ।
२ ,,	करनाटकी	पार्श्वनाथ	यह आचार्य गृहस्थाचारी आचार्य थे ।
३ ,,	संस्कृत	सकल कीर्त्तिभट्टारक	यह आचार्य संवत् १४९५ विक्रमी में हुए आप के रचे ग्रंथ संस्कृत में महापुराण १ शांतिनाथपुराण २ धर्मनाथपुराण ३ मल्लिनाथ पुराण ४ बर्द्धमानपुराण ५ आदिपुराण ६ शांतिचरित्र ७ सुभाषितसार ८ ।
४ ,,	,,	वादीचंद्र	यह कवि संवत् १६८३ मेंहुए आप के रचे हुए संस्कृत में ज्ञान सूर्यउदय नाटक १ पांडव पुराण २ ।
५ ,,	हिंदीभाषा	भूधरदास	खँडेलवाल आगरे निवासी थे इनके रचेहुए भाषा ग्रंथोंकी सूचना पहले भूमिका में दिखा चुके हैं ।
६ पार्श्वाभ्युदयः	संस्कृत	जिनसेनाचार्य	आदि पुराण विवाह पद्धति आदि संस्कृत में आपके रचे हुए हैं ।

* ग्रंथ शुद्धकाल *

॥ दोहा छन्द ॥

वेदवाँख ग्रह उदधि सुत, विक्रम वर्ष महान ।
उत्तमता से शुद्ध भया श्रीजिन पास पुराण ॥

सज्जन जन प्रति प्रार्थना है यदि ग्रंथके शुद्ध करने में प्रमाद वश वा तुच्छ बुद्धि कारण कुछ भूल चूक होगई हो तो मुझको अज्ञात ज्ञात कर क्षमादान दे कृतार्थ कर मेरा उत्साह बढ़ावेंगे और अपनी ओर निहार मेरे अपराधन पर कभी ध्यान न देंगे ॥

॥ सोरठा छन्द ॥

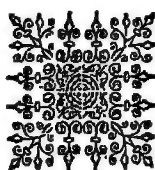
सज्जन जन की रीति करैं प्रीत विपरीत तज ।
यह विध परम पुनीत बड़े बड़ाई ना तजैं ॥

॥ शुभम् ॥

कृपाभिलाषी

अमनसिंह जैनी

अग्रवाल



श्रीपार्श्वपुराणकाप्रतिअधिकारसंख्यासहितछंदनामावलीयंत्र

* छन्द नामावली संख्या * / अधिकारगणती	१	२	३	४	५	६	७	८	९	ग्रन्थके प्रति प्रकारछंदों का जोड़
ग्रंथके प्रति अधिकार छंदों का जोड़	१२५	८६	२३३	२४३	१७७	१२८	१३८	१६४	३३७	१६३४ (ग्रन्थके सर्व छंदोंका जोड़)
२ प्रकारकी ढाल के छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	१३	१३
१ प्रकारकी ढाल के छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	९	९
३१ मात्रा सवैया छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	३	३
१५ मात्रा अर्द्ध चौपाई छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
शार्दूल विक्रीड़ित छंद	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
हरिगीत छंद	०	०	०	०	०	२	४	९	०	१५
आर्या छंद	०	०	०	०	१	०	०	१	०	२
कुसुमलता छंद	०	०	०	१३	७	०	०	०	०	२०
पौमावती छंद	०	०	०	२२	०	०	०	०	२	२४
चामर छंद	०	०	१	०	०	०	०	०	०	१
सोरठा छंद	०	०	४	४	०	१	१	६	११	२७
नरिंद्र छंद	०	०	३०	०	०	०	०	०	०	३०
२३ मात्रा छंद	०	१५	०	०	०	०	०	०	०	१५
पद्धड़ी छंद	०	८	०	०	८	३८	०	१०	१०	७४
चाल छंद	१०	७	०	०	०	०	१५	०	०	३२
अड़िल छंद	१	०	१	१	०	०	०	०	६	९
द्रुति विलंब छंद	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१
वाला छंद	१	०	०	०	०	०	०	०	१	२
घनाक्षरी छंद	२	०	०	१	०	०	०	०	१	४
१५ मत्राचौपाईछंद	६८	४२	४७	१४१	११७	९८	९९	११९	१९६	९२७
छप्पै छंद	५	०	०	१	०	०	०	१	६	१३
दोहाछंद	३७	१६	११	६०	४४	२९	२०	१७	८५	३१९

श्रीजिनायनमः ॥

कबिवर भूधरदासजी रचित छंद बंद्ध भाषा पार्श्वपुराण ॥

श्री पार्श्वनाथजी स्तुति ।

दोहाछंद्द ।

मोह महातम दलन दिन, तप लक्षमी[1] भर्तार ॥
सो पारस परमेश मुझ, होउ सुमति दातार ॥ १ ॥
बामा नंदन कल्प तरु, जयो जगत हितकार ॥
मुनि जन जाकी आसकर, याचैं शिव फल सार ॥ २ ॥

छप्पै छंद

भुवन तिलक भगवंत, संत जन कमल दिवायर ।
जगत जंतु बंधव अनंत अनुपम गुण सायर ॥
राग नाग मय मंत, दंत उच्छेपण बलि अति ।
रमाकंत अर्हंत, अतुल यशवंत जगत पति ॥

---

१ मोक्षरूप लक्ष्मी के पति ।

महिमामहंत मुनिजन जपत, आदि अंतसबकोसरण।
सो परमदेव मुझ मनबसो, पार्स नाह मंगल करण॥३॥
बिमल बोध दातार, विश्व विद्या परमेश्वर।
लछमी कमल कुमार, मार मातंग मृगेश्वर॥
मुख मयंक अवि लोक, रंक रजनी पतिलागें।
नाम मंत्र परताप, पाप पन्नग डर भागें॥
जय अश्वसेन कुल चंद्र जिन, शक्र चक्र पूजत चरण।
तारो अपार भव जलधि तैं, तुम तरंड तारण तरण॥४॥
बाघ सिंह बश होहिं, विषम विषधर नाहिं डंकै।
भूत प्रेत बेताल, व्याल वैरी मन शंकै॥
शाकिनि डाकिनि अग्नि, चोर नहिं भय उपजावें।
रोग सोग सब जाहिं, बिपत नेरे नहिं आवें॥
श्री पार्श्वदेव के पद कमल, हिये धरत निज एकमन।
छूटैं अनादि बंधन बंधे, कौन कथा बिनशै विघन॥५॥
चहुं गति भ्रमत अनादि, बाद बहु काल गमायो।
रही सदा सुख आस, प्यास जल कहीं न पायो॥
सुख करता जिन राज, आजलों हिये न आयो।
अब मुझ माथे भाग, चरण चिंतामणि पायो॥
राखूँ संभाल उर कोष मैं, नहिं बिसरूं पल रंक धन।

१ यहां यथा वाचक शब्द लुप्त है।

परमाद चोर टालन निमत करूं पार्सजिन गुण कथन ॥ ६ ॥

पंच परमेष्टी स्तुति ॥

१५ मात्रा चौपाई छन्द ॥

बंदूं तिर्थंकर चौबीस । बंदूं सिद्ध बसैं जगसीस ॥
बंदूं आचारय उज्झाय । बंदूं परम साधु केपाय । ७ ।
येही पद पांचों परमेठ । येही सार और सब हेठ ॥
येही मंगल पूजअतीव । येहीउत्तम सरण सदीव । ८ ।

जिनबाणी स्तुति ॥

१५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बंदूं जिनबाणी मन सोध । आदि अंत जो बिगल बिरोध ॥
सकल वस्तु दर्शावनहार । भ्रम बिषहरण औषधीसार । ९ ।

॥ दोहा छंद ॥

बरतो जग जयवंत नित, जिन प्रवचन अमलान ॥
लोक महल में जग मगै, माणक दीप समान । १० ।
हरो भिरम दालिद्र दुख, भरो हमारी आस ॥
करो सारदा लक्ष्मी, मुझ उर अंबुज बास । ११ ।

गणधर वा आचार्यों की स्तुति ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बंदूं वृषभ सेन गण राज । गुरु गौतम भव जलधि जहाज ॥
कुंद कुंद मुनि प्रमुख सुपंथ । ते सब आचारय निर्ग्रंथ । १२ ।
जैन तत्व के जानन हार । भये यथारथ कथिक उदार ॥
तिनकेचरणकमलकरजोर । करूंप्रणाममानमदछोर । १३ ।

॥ कवि नम्रता वा ग्रंथ करणकारण ॥

॥ दोहा छंद ॥

सकल पूज्य पद पूजकै, अल्प बुद्धि अनुसार ॥
भाषा पार्स पुराण की, करूं स्व पर हितकार । १४ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जिन गुणकथन अगमाविस्तार।बुधिबल कौनलहै कविपार॥
जिनसेनादिक सूरि महंत । बर्णन कर पायो नहिं अंत । १५ ।
तौ अबअल्प मती जनऔर । कौनगणति मैं तिनकी दौर ॥
जो बहुभार गयंदन बहै । सो क्यों दीन ससक निर्बहै । १६ ।

॥ दोहा छंद ॥

कह जानैं ते यों कहैं, हम कुछ बरणों नाहिं ॥

जे कह जानैंही नहीं, ते अब कहा कहाहिं। १७।
बिलस्त नभ नापै नहीं, चलू न सागर तोय ॥
श्री जिन गुण संख्या सुयश, त्यों कवि करै न कोय। १८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पै यह उत्तम नर अवतार। जिन चरचा बिन अफल असार ॥
सुन पुराण जो घूमन सीस। सो थोथे नारियल सरीस। १९।
जिन चरित्र न सुनैं ते कान। देह गेह के छिद्र समान ॥
जा मुख जैन कथा नहिं होय। जीभ भुजंगनि का बिल सोय। २०।
या प्रकार यह उद्यम जोग। कहत पुराण पण्डित लोग ॥
जिन गुण गान सुधारस न्याय। सेवत अल्प जन्म जुर जाय। २१।

॥ घनाक्षरी छंद ॥

जो लों कवि काव्य हेत आगम के अक्षर को,
अरथ बिचारैं तोलों सिद्ध शुभ ध्यान की।
और बहु पाठ जब भूपर प्रघट होय,
पढ़ैं सुनैं जीव तिनै प्रापति है ज्ञान की ॥
ऐसैं निज परको बिचार हित हेतु हम,
उद्यम कियो है नहीं बान अभिमान की।

१ श्री जिनके गुण वा सुयश की संख्या कोई नहीं करसक्ता–यह देहली दीपक न्याय अलंकार है।

ज्ञान अंश चाखा भई ऐसी अभिलाषा अब,
करूं जोड़ भाषा जिन पारस पुराण की। २२।
आगे जिन ग्रंथन के करता कवींद्र भये,
करी देव भाषा महा बुद्धि फल लीनो है।
अक्षर मिताई तथा, अर्थ की गंभीर ताई,
पद ललताई जहां आई रीति तीनों है ॥
काल के प्रभाव तिन, ग्रंथन को पाठी अब,
दीषत अलप ऐसो, आयो दिन हीनो है।
तातैं इस समै योग, पढ़ैं बालवृद्धि लोग,
पारस पुराण पाठ भाषा बंद कीनो है। २३।

॥ दोहा छंद ॥

शक्ति भक्ति बल कविनपै, जिन गुण वरणे जाहिं ॥
मैं अब वरणूं भक्ति बल, शक्ति मूल मुझ नाहिं। २४।
वरणुं पूरब कथित क्रम, ग्रंथ अर्थ अवधार ॥
सुगमरूप संछेप सौं, सुनौ सबै नरनार। २५।

॥ कथा विख्यात कारण ॥

॥ १५ मात्रा चौपाइ छंद॥

मगधदेश देशन परधान। राजग्रही नगरी शुभथान ॥

राज करै श्रेणक भूपाल । नीतवंत नृप पुण्य विशाल । २६ ।
क्षायक सम्यक दरशन धार । रूपशील सबगुण आधार ॥
तिनके घर अंतेवर घना । पटरानी रानी चेलना । २७ ।
जाके गुण वरणत बहुभाय । बरयाँलगै कथा बढ़जाय ॥
एकदिना निज सभा नरेश । निवसैं जैसैं स्वर्ग सुरेश । २८ ॥
रोमाँचित बनपालक ताम । आय रायप्रति कियो प्रणाम ।
छह ऋतुके फलफूल अनूप । आगेधरे अनूपम रूप । २९ ।
हाथजोर बिनवै बनपाल । विपुलाचल पर्वत की भाल ॥
वर्द्धमान तिर्थंकर आप । आये राजन पुण्य प्रताप । ३० ।
महिमा कछु वरणी नहिं जाय । इन्द्रादिक सेवैंसब पाँय ॥
समोसरण संपति की कथा । मोपै कहीजाय किमतथा । ३१ ।
माली बचन सुनैं सुखदाय । हर्ष्योंराजा अंगन माय ॥
दीने भूषण बसन उतार । वनमाली लीने सिरधार । ३२ ।
सातपेंड़ गिर सन्मुख जाय । कियो परोक्ष बिनै नरराय ।
आनँद भेरि नगर मैं दई । सबहीं को दर्शनरुचिभई । ३३ ॥
चलोसंग परियन समुदाय । बंदे वर्द्धमान जिनराय ॥
लोकोन्तर लक्ष्मी अवलोक । गयेसकल भूपति केशोक ३४
थुति आरंभ कियो बहुभाय । बार बार भुमिसीसनिवाय ॥
गौतम गुरु पूजेकर जोर । निज कोठे बैठ्यो मदछोर । ३५ ।

१ अर्थात् ममाय ।

करीप्रश्न श्रेणक बड़ भूप । प्रभु पारस जिन कथा अनूप ॥
जाके सुनत पाप छै होय। कहिये देव कृपाकर सोय । ३६ ।
तब गणधर बोले हितकाज । जोगप्रश्न कीनो नरराज ॥
सुन पुनीत पारस जिनकथा।सफल होय मानुष भवयथा ३७

दोहाछंद

इहिं विधि जो मघदेश प्रति, कह्यो चरित गणराज ॥
ताहीक्रम आये कहत, आचारज परकाज । ३८ ।
तिनही के अनुसार अब, कहूँ किमप विस्तार ॥
जैनकथा कलिपत नहीं, यह जानो निर्धार । ३९ ।
जैन बचन वारिधि अगम, पानी अर्थ अनूप ॥
मति भाजन भर २ लिये यह जिन आगम रूप । ४० ।

कथाप्रारंभ प्रथम अधिकार

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जंबूदीप दिपै यह सार । सूर्य मण्डल की उनहार ॥
मध्यसुमेरु कर्णिका भास । बने क्षेत्र दल दीरघजास ।४१।
तारागण मकरंद मनोग । सूर्य चन्द्र भ्रमर कुल योग ॥
लवणसमुद्रसरोबरथान । दीप किधौंयहकमलमहान । ४२।

१ आचार्यों ने अपनी अपनी मति के अनुसार यह जिन आगम रूप अर्थात् शास्त्र के भाजन भर लिये भावार्थ शास्त्र रचे ।

लक्षमहा योजन विस्तार। बसै बिविध रचना आधार ॥
दक्षणभरतधनुषसंठान। पर्बत पणाच नदीजुगबान।४३।
मानो सागर प्रति अनुमान। तानत तीर धार जलजान ॥
ऐसीभांतबिराजत खेत। छहों खण्डमंडितछबि देत।४४।
पांच मलेच्छ बसैं तामाहिं। धर्म कर्म कछु जानैं नाहिं ॥
उत्तम आर्यखण्ड मझार। देश सुरम्य बसै मन हार।४५।
जन कुल जहां रहैं बहु भांत। पास पास सोहैं पुरपांत ॥
सरवर नदी शैल उदयान। बन उपबन सों शोभामान। ४६।
तहां नगर पोदन पुरनाम। मानो भूमि तिलक अभिराम ॥
देव लोक की उपमा धरै। सबही विध देखत मन हरै। ४७।

॥ दोहा छंद ॥

तुंग कोट खाई सजल, सघन बाग ग्रह पांत ॥
चोपथ चौंक बजारं सों, सोहे पुर बहु भांत ॥ ४८ ॥
ठाम ठाम गोपुर लसैं, वापी सरवर कूप।
किधों स्वर्ग ने भूमि को, भेजी भेट अनूप ॥ ४९ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जैनी प्रजा जहां परवीन। बसै दान पूजा व्रतलीन ॥
जैन भ मौतचेअति बने। शिखरधुजासोंशोभित घने।५०।

इहिं विध पुर शोभा अधिकार । बरणन करत लगै बहुवार ॥
राज करै राजा अर विंद । सोहै मानों स्वर्ग सुरिंद्र । ५१ ।
पालै प्रजा कुमति जिन दली । नीत बेल मण्डित भुजवली ॥
दया धाम सज्जन गंभीर । गुणरागी त्यागी रणधीर । ५२ ।
तिस भूपति कै विप्र सुजान । विश्व भूत मंत्री बुधिमान ॥
ताकै त्रिया अनुँधर संती । रूपशील गुण लच्छणवती । ५३ ।
दोय पुत्र तिनकै अवतरे । पाप पुन्य की पट तर धरे ॥
जेठो नंदन कमठ कपूत । दूजो पुत्र सुधी मरु भूत । ५४ ।

॥ दोहा छंद ॥

जेठो मत हेठो कुटिल, लघु सुत सरल सुभाव ॥
विष अमृत उपजे युगल, विप्र जलधि कै जाव । ५५ ।
बड़े पुत्र नै भार्या, ब्याही वरुणा नाम ॥
लघुनै बरी विसुन्दरी, रूपवंत अभिराम । ५६ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यों सुख निबसैं बंधव दोय । निज निज टेव न टारै कोय ॥
वक्रचालविषधर नहिं तजै । हंसवक्रता मूल न भजै । ५७ ।

॥ दोहा छंद ॥

उपजे एकहि गर्भ सों, सज्जन दुर्जन रूप अर्थ

लोह कवच रक्षा करै, षाँडा षंडै देह। ५८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अति सज्जन मरुभूत कुमार। नीत शास्त्र को जाननहार॥
सबको इष्ट सकलगुणगेह। राजाप्रजाकरैं सब नेह। ५९।

॥ उक्तंच संस्कृत बाला छंद ॥

विद्यासदभ्यास बशादुपैति। सौजन्य मभ्यासवशाद गम्यं॥
कर्णौ सपत्न्यः पृविशाल मीयुः॥विशालमीयुर्नतुनेत्रयुग्मं।६०

॥ भाषा टीका ॥

विद्या अर्थात् ज्ञान सच्चे विचार के आधीन प्राप्त होजाता है परन्तु सज्जनता अर्थात् भलापन जो स्वाभाविक धर्म है विचार आधीन प्राप्त नहीं होता— दृष्टांत—यथा शौकीन स्त्री अपने कानों को इस अभिप्राय से कि कर्ण भूषण पहरकर अपने पति को मोहित करूंगी मोर के पर वा तुली के गूदे आदि डालकर चौड़ा कर लेती है परन्तु अपने नेत्रों को बड़ा नहीं करसक्ती किसलिये कि नेत्र का विशाल होना उस्का स्वभाविक धर्म नहीं है।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिना भूपति मंत्रीश। स्वेत बाल देखो निज शीश॥
उपजो विप्र हिये वैराग॥ जानोंसब जग अथिर सुहाग। ६१

॥ दोहा छंद ॥

जरा मौतकी लघु बहन। या मैं संशय नाहिं॥

तो भी सुहित न चिंतवै। बड़ी भूल जगमाहिं। ६२।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यह बिचार मंत्री मनमाहिं। निज सुत सौंप राय की बांहिं॥
सुगुरुसाषजिनचारितलियो। बनोबासआत्महितकियो। ६३।
अबमरुभूत विप्र सुख करै। अहनिशनीत पंथ पगधरै॥
राजाप्रीतकरैबहुभाय। सोम प्रकृति सबकौंसुखदाय। ६४।
एक समय आपनअरिविंद। मंत्री सेना सहित नरिंद्र॥
राय बज्र बीरज पर चढ़े। क्रोधभाव उरमैंअतिबढ़े। ६५।
पीछे कमठनिरंकुश होय। लगो अनीत करण शठ सोय॥
जो मनआवैसो हठ गहै। मैं राजासब सों इमकहै। ६६।
एक दिना निज भ्राता नार। भूषण भूषित रूप निहार॥
रागअंधअतिविहवलभयो। तिक्षणकामतापउरतयो। ६७।
महा मलिन उर बसैंकुभाव। दुर्गति गामी जीव सुभाव॥
पुत्री सम लघुभ्रातानार। तहां कुदिष्टधरी अविचार। ६८।

॥ दोहाछंद ॥

पाप कर्म को डर नहीं, नहीं लोक की लाज॥
कामी जनकी रीतयह, धिकतिसजन्म अकाज। ६९।
कामी काज अकाज मैं, हो हैं अंध अवेव॥
मदनमत्तमद मत्तसम, जरो जरोयह टेव। ७०।

पिता नीर परसै नहीं, दूर रहै रवि यार ॥
ता अंबुज मै मूढ़ अलि, अरभ्रमरैअविचार ।७१।
त्योंही कुविसनरति पुरुष, होयअवश अविवेक ॥
हितअनहितसोचै नहीं, हिये विसनकी टेक। ७२।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बन मैं सघन लता ग्रह जहां। गयो कमठ कामातुरतहां ॥
बढ़ीविदनाकल नाहिं परै। छिनछिन काम विथादुखकरै।७३।

॥ उक्तंचसंस्कृत द्रुतिविलंबछंद ॥

परमधर्म नदाज्जनमीनकान शशि मुखी बडि शेनसमुद्धृतान
अतिसमुल्लसितेरतिमुर्मुरेपचाति हाहतकस्मरधीवरः ।७४।

॥ भाषा टीका ॥

हाय कामदेव रूप हिंसक धीवर परम धर्म रूप समुद्र जन मच्छों (अर्थात् धर्मात्मा पुरुषों) को जो चंद्रमुखी स्त्री रूप वडिश कहिये लोहे के कांटे कर उस धर्म रूप समुद्र से बाहर निकाले गये हैं अति तेज विषय रूप भूभल अग्नि में पकाता है भावार्थ कामदेव धर्मात्मा पुरुषों को स्त्रियों के हाव भावपर मोहितकर व्याकुल कर देता है–सो बड़े शोक का स्थान है।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

कमठ सखा कलहंस विशेष।पूछत भयो दुखी तिस देष ॥
कौनव्याधि उपजीतुमअंग। अतिव्याकुलदीषेसर्वंग ।७५।

तबतिनलाज छोर सब सही । मन कीबात मित्रसों कही ॥
सुनकलहंस कथा विपरीत । शिक्षा वचनकेहकर प्रीत । ७६ ।
अतिअयोगकारजयह वीर । सो तुम चिंत्यो साहासिधीर ॥
परनारीसमपापनआन । परभवदुखइहिंभवयशहान । ७७ ।
इसही बंछा सों अघभरे । रावण आदि नरक में परे । ॥
जगमेंजेठपितासम तूल । बात कहतलाजैनहिंमूल । ७८ ।
तातैं यह हठ मूल न करौ । सुहित सीख मेरी मन धरौ ॥
लोक निंद कारज यहजान । धर्मनिंदानिश्चैउरआन ।७६ ।

॥ दोहा छंद ॥

यों कल हंस अनेक बिध, दई सीख सुख दैन ॥
ते सबकमठकुशीलप्रति, भराबिफलाहित वैन । ८० ।
आयुहीन नर को यथा, औषधि लगै न लेश ॥
त्योंहीं रागी पुरुष प्रति, वृथा धर्म उपदेश । ८१ ।
बोलो तब कामी कमठ, सुनो मित्र निर्धार ॥
जो नहिं मिलै विसुंदरी, तो मुझमरण विचार । ८२ ।
देख कमठ की अधिक हठ, कुमति करीकल हंस ।
जाय कहे ता नार सों झूठ बचन अपशंस । ८३ ।

॥ अडिल छंद ॥

सुन विसुंदरी आज कमठ बन मैं दुखी ।

तू ताकी सुध लेहु होय जिहिं विधसुखी ॥
सुनतेही सत्भाव गई बन मैं तहां ।
निवसै कर परपंच कमठ कपटी जहां । ८४ ।

॥ दोहा छंद ॥

छलबल कर भीतर लई, बनता गई अजान ॥
राग बचन भाषे बिविध, दुरा चार की खान । ८५ ।

॥ १४ मात्रा चाल छंद ॥

गज मातो कमठ कलंकी । अघसों मन्सा नाहिं शंकी ॥
भावज वन करनी रंजो । जिन शील तरोवर भंजो ॥ ८६ ॥
रिपुजीत विजय यश पायो । अरविंद नृपति घर आयो ॥
जे कर्म कमठ नै कीने । राजा सबते सुन लीने ॥ ८७ ॥
मंत्री मरुभूत बुलायो । ताको सब भेद सुनायो ॥
कहु विप्र सुधी क्या कीजै । क्या दण्ड इसै अब दीजै॥८८॥
दुज कहै सरल परिणामी । अपराध छमा कर स्वामी ॥
जो एक दोष सुनलीजै । ताको प्रभु दण्ड न दीजै ॥ ८९ ॥
तब भूप कहै सुन भाई । जो निग्रह योग अन्याई ॥
तापै करुणा किम होहै । यह न्याय नृपति नहिं सोहै ॥ ९०॥
तातैं ग्रह गच्छ सयाने । मत खेद हिये कुछ आने ॥
ऐसै कह बिप्र पठायो । तिस पीछै कमठ बुलायो ॥ ९१ ॥

अति निंदो नीच कुकर्मी। जानो निर्धार अधर्मी॥
राजा अतिही रिस कीनी। सिर मुण्ड दंड वहु दीनी।९२॥
मुखकै कालोस लगाई। खर रोप्यो पीर न आई॥
फिरसारे नगर फिरायो। प्रति बीथी ढोल बजायो॥ ९३॥
इस भांत कमठ की ख्वारी। देषैं सबही नर नारी॥
पुरबासी लोक धिकारैं। बालक मिल कांकर मारैं॥ ९४॥
यों दण्ड दियो अति भारी। फिर दीनी देश निकारी॥
जो दीरघ पाप कमाये। ततकाल उदै वहु आये॥ ९५॥

॥ दोहा छन्द ॥

इहि बिधि फूल्यो पाप तरु, देष्यो सब संसार॥
आगे फलहै नरक फल, धिक दुर्विसन असार।९६।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

महादण्ड भूपति जबदियो। कमठकुशील दुखीअतिभयो॥
बिलषत बदन गयोचल तहां। भूताचलपर्वत हैजहां।९७।
रहै तहां तपसी समुदाय। ज्ञान बिना सब सोखैं काय॥
केईरहे अधोमुख झूल। धूँवां पान करैं अघ मूल।९८।
केई ऊर्ध मुखी आघोर। देखैं सबै गगन की ओर॥
केई निवसैं ऊरध वाहिं। दुविध[1] दयासों परचैं नाहिं।९९।

१ दुविध दया—त्रस जीविकी १ थावर जीविकी २।

पार्श्वपुराण छंदनामावली लिखित छंदों के संक्षेप लक्षण

१ (दोहा छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-३-चर्ण में १३ मात्रा अंत में १ वर्ण गुरु या २ वर्ण लघु से पहला वर्ण लघु देखो-२.४ चर्ण में ११ मात्रा अन्तका वर्ण लघु देखो २ (छप्पै छंद) इस छंद में ६ चर्ण होते हैं यह छंद २ छंद रसावलि १ उल्लाला २ से मिलकर बनता है रसावलि छंद लक्षण इस छंद मे ४ चर्ण होते हैं ११ मात्रा पर विश्राम देकर १३ मात्रा आगे देने से चर्ण पूरा होता है प्रति चर्ण २४ मात्रा जानो और लघू दीर्घका कुछ नेम नहीं है उल्लाला छंद लक्षण इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-३-चर्ण में १५ मात्रा २-४-चर्ण में १३ मात्रा देखो और कुछ नेम नहीं ३ (१५ मात्रा चौपाई छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १५ मात्रा अंतका वर्ण लघु देखो ४ (घनाक्षरी छंद (इस छंदमें ४ चर्ण होतेहैं १६ वर्ण पर विश्राम होकर १५ वर्ण आगे लिखने से चर्ण पूरा होता है चर्ण के अन्त में गुरु वर्ण का नेम है और कुछ नेम नहीं प्रति चर्ण ३१ वर्ण देखनो ५ (बालाछंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-२-३-चर्ण इंद्रवज्रा छंद ४ चर्ण उपेन्द्रवज्रा छंद का होता है इन्द्रवज्रा छंद लक्षण इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण ११ वर्ण १८ मात्रा इस भांति गिनो १-२-वर्णगुरु ३ लघु ४-५-गुरु ६ ७-लघु ८ गुरु ९ लघु १०-११गुरु उपेन्द्रवज्रा छंद लक्षण इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण ११ वर्ण १७ मात्रा जानो १ वर्ण लघु शेष वर्ण इंद्रवज्रावत ६ (द्रुतिविलंब छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १२ वर्ण १६ मात्रा इस भांति जानो १-२-३ वर्ण लघु ४ गुरु ५ ६ लघु ७ गुरु ८-९ लघु १० गुरु ११ लघु १२ गुरु ७ (अडिल छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं ११ मात्रा पर विश्राम देकर १५ मात्रा आगे देने से चर्ण पूरा होता है चर्ण के अन्त का वर्ण गुरु गुरु वर्ण से पहला वर्ण लघु जानो (८ चाल छंद जिसका असली नाम सखी छंद है) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १४ मात्रा गिनो प्रायः अन्त के २ वर्ण गुरु होते हैं ९ (पद्धड़ी छंद)

इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रतिचर्ण १६ मात्रा चर्ण के अन्त का वर्ण लघु लघु से पहला वर्ण गुरू गुरू से पहला वर्ण लघु होताहै १० (२३मात्रा छंद) इस छंद के नाम का पता नहीं लगा परन्तु विचार से ऐसा जाना गया कि इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १ ३चर्णमें ११ मात्रा अन्त का वर्ण लघू लघूसे पहला वर्ण गुरू होता है २-४ चर्ण में १२ मात्रा अन्त के २ वर्ण गुरू होंगे ११ (नरिंद्र छंद) इस छंदमें ४ चर्ण होते हैं १-३ चर्ण में १६ मात्रा २-४ चर्ण में १२ मात्रा गिनो २ ४ चर्ण में अंत के दो वर्ण गुरू होंगे १२ (सोरठा छंद) इस छंदमें ४ चर्ण होते हैं १-३ चर्ण में ११ मात्रा अंतका वर्ण लघू २-४ चर्ण में १३ मात्रा अंतका वर्ण गुरू वा दो वर्ण लघू से पहला वर्णलघू–दोहा उलटा जान और बात दूजी नहीं १३ (चामर छंद) इस छंदमें ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १५ वर्ण २३ मात्रा इस भांति देखो १ वर्णगुरू २ वर्णलघू ३ गुरू ४ लघू इसक्रम से ७ वर्णगुरू ७ वर्णलघू अंतका वर्णगुरू देखो १४ (पौमावती छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १६ मात्रापर विश्राम देकर १६ मात्रा आगे मिलाने से ३२ मात्रापर चर्ण पूरा होता है चर्ण के अंतके २ वर्ण गुरू देखो १५ (कुसुमलता छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-३ चर्ण में १६ मात्रा २-४ चर्ण में १४ मात्रा और अंतका वर्ण गुरू गुरू से पहला वर्ण लघू होगा १६ (आर्या छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १ ३ चर्णमें १२ मात्रा२ चर्णमें १८मात्रा ४ चर्णमें १५ मात्रा गिनो अंतका वर्ण सर्व चर्णों का गुरू होगा १७ (हरिगीत छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १६ मात्रापर विश्राम देकर १२ मात्रा आगे मिलाने से चर्ण पूरा होता है प्रति चर्ण २८ मात्रा गिनो चर्ण के अंतका वर्ण प्रायः गुरू देखो १८ (शार्दूल विक्रीड़ित छंद) इस छंद में ४ चर्ण होतेहैं प्रतिचर्ण १९वर्ण ३० मात्रा इस भांतिजानो १-२ ३ वर्ण गुरू ४-५ लघू ६ गुरू ७ लघू ८-९ गुरू १० ११ लघू १२ गुरू १३-१४ गुरू १५ लघू १६-१७ गुरू १८ लघू १९ गुरू बारा वर्ण १८ मात्रापर विश्राम देकर ७ वर्ण १२ मात्रा आगे मिलाने से चर्ण पूरा होता है १९ (१५ मात्रा अर्द्ध चौपाई छंद) इस छंद में २ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १५ मात्रा अंतका वर्ण लघू देखलो यह छंद १५ मात्रा चौपाई छंद के २ चर्ण हैं॥ २० (३१ मात्रा सवैया छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १६ मात्रापर विश्राम देकर १५ मात्रा आगे मिलाने से चर्ण पूरा होता है चर्ण के अंतका वर्ण लघू लघू से पहला वर्ण गुरू होगा।

२१ (ढालछंद) विचार से प्रगट होता है कि पिंगल शास्त्र अनुसार ढाल नाम कोई विशेष छंद नहीं है सामान छंदो में १-२ वर्ण और १-२ शब्द टेकके बढ़ा लेते हैं उसी को ढाल कहते हैं दक्षिण देश में गुजराती भाषा विषे ऐसी ढालोंका बहुत कुछ प्रचार है यहां दोनों ढालों में असल में दोहे छंद हैं २-४ चर्ण में लघू वर्ण के स्थान में गुरू वर्ण रखकर एक गुरू वर्ण और आगे बढ़ादिया दो चरणों के बीच में एक ढाल में (ज्ञानी) शब्द की दूसरी ढाल में ४ चर्ण के अन्त में (बारह विधतप वरनउँ) की टेक लगादी है—इति ॥

कई यक पुस्तकों में जो शब्द इस पुस्तकसे विमुख देखे गये उन का प्रगट करनेवाला यन्त्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	इसपुस्तकविषै	कई यक पुस्तकों में	पृष्ठ	पंक्ति	इसपुस्तकविषै	कई यक पुस्तकों में
३	६	और	जगत	२३	७	बैल	गैल
३	७	सरण	परम	३०	१४	हिमागिर	हरिगिर
६	१७	बल	वश	३४	१३	विभूति	भूपति
८	१६	सूर्य चंद्र	सुरनर संग	३४	१७	कोटकोट	कोटओट
९	३	धार	पार	३६	२	देहबल	होउबल
१०	१६	मूल	भूल	३६	६	लखकोट	एककोट
१९	८	गजमातो	मदमातो	३७	५	बनी	भनी
१५	१५	दोष	गुनह	३८	१३	महादेह	महादेव
१६	२	दंड	सज़ा	४०	१५	बई	छई
१६	१५	सब	सठ	४३	१	सन्तति	सम्पति
१६	१७	सबै	सदा	४४	७	संकट	संकल
१७	४	योंअज्ञानतप	योंतपसीतप	४९	४	श्रुति	शुभ
१८	३	अवश	अधिक	४६	६	देखत	दीपत
२१	२	तरुपत्र	तिनपत्र	५९	१७	जिन	अति
२१	१४	छिरकै	डांहै	५६	६	बसा	नसा
२२	८	तन धन	तवधन	५६	८	कंटकतलतक	कंटितकलित
२३	७	गैल	बैल			सूर	करूर

पृष्ठ	पंक्ति	इसपुस्तकविषै	कई यक पुस्तकों में	पृष्ठ	पंक्ति	इसपुस्तकविषै	कई यक पुस्तकों में
६५	३	विहसाय	शुभभाय	१५७	४	शाप	भाप
६९	१८	मनंकंप्यो	तवबैठो	१६३	८	अट्ठावन	उनसट
७४	५	सब	षट	१६९	८	छई	मई
८२	५	जैनयतीनिज	तेमुनितारण	१६९	९	चारोंदिश	दसोंदिशा
		नेमनिवाहै	तरणकहावै	१६६	११	चहूं	दुहूं
८६	६	वृचि	प्रति	१८०	३	विरद	तुमी
८८	६	आतम	आपत	१८२	४	प्रपान	परधान
९०	१६	सोमर	सप्तम	१८२	१६	भेद	वेद
१०८	१७	दीपक	जोतिष	१८९	११	समान	प्रमान
१२९	१२	रची	मची	१९१	४	सों	वश
१३२	११	नाय	तिलक	२२२	८	लवधि	अवधि
१३६	८	पानन	आनन	२३५	८	भगवान	अर्हंत
१३६	१६	सोवंत	शोभंत				
१४१	१	निर्मलछाय	गुणअनंतली				
		कदर्शनवंत	येबहुभंत				



* १ समालोचना *

मुन्शी श्रीराम (अज़ीज़) क़ानूगोय गुहाना नगर निवासी टीचर नौरमलस्कूल देहली ॥

* दोहा छन्द *

गुरू ग्रंथ औ देव की, अहनिश मन वच काय ॥
करो सर्व सच्ची विनय, भाव सहित शिरनाय ॥ १ ॥
पढ़ो गुनो नित शास्त्रजी, सत्त धर्म अधिकार ॥
केवल बुगला भक्त बन, करो न मायाचार ॥ २ ॥

* हरिगीत छन्द *

कविराय भूधरदास जी जिन, आगरा शुभथान है । तिनका रचित भाषा ललित, तिर्थेश पास पुराण है ॥ शिक्षित वचन भंडार है अति, भक्ति है श्रुति में भरी । पुन पाप की विस्तार से विधि, पूर्वक कथनी करी ॥ ३ ॥ नरकों के दुख स्वर्गोंके सुख दर, सादिये समझाय के । अंत तत्त्व औ षट द्रव्यका की, ना कथन दर्शायके ॥ यह ग्रंथ मानो कोष है नव, निद्धि आठो रिद्धि का । नव रत्न नव अधिकार इक इक, शब्द जिनका नौलखा ॥ ४ ॥ तिस कोष को अहनिश सदा अहिं, तुल्य हम लख २ जिये । पर नेत्र या परना पड़े बहु, यत्न इस कारन किये ॥ निरधन नहीं हम सूझहैं निर्धन भये होकर धनी । खावें न खाने दें यही बस, स्वानमत मनमें ठनी ॥ ५ ॥ संचय करे ढूंढे सदा निर्धन धनी हो जायगा । पर रेत पत्थर तुल्य है कन, सूम का धन संपदा ॥ क्या सूम आदर धन का करता, है नहीं बेआदरी । निज को न पर को लाभ मानो, बंध में सम्पति करी ॥ ६ ॥ इस भांति करते हैं विनय हम, जैन ग्रंथों की सदा । करजोड़ माथा टेकते वे, ठन लपेटें जगमगा ॥ पर सूचना हम को नहीं जब, लौंकि क्या खटराग

है । क्या अर्थ क्या आशय है इसका, पुण्य अथवा आग है ॥ ७ ॥ तब लौं कहो क्या वह विनय पू, री विनय कहलायेगी । क्या शास्त्र औ गुरुदेवकी स, ची विनय होजायगी ॥ योंही जो होजावे विनय पू, रीतु अच्छा काम है । करना पड़े कुछ भी नहीं बस, स्वर्ग अपना धाम है ॥ ८ ॥ भ्राता नहीं है यह विनय के, बल विनय अविनय हये । सच्चो विनय अब हम बताते, हैं सुनो तुम ध्यानदे ॥ पढ़ना पढ़ाना शुद्ध कर पर, चार करना भाव सूं । आशै को इसके जानकर वर, ताव करना चावसूं ॥ ६ ॥ केवल उन्हीं का है सुफल जी,वन मरन संसारमें कटिबद्ध रहते हैं सदा जो, धर्म के परचार में ॥ मुनशी अमनसिंह जिनमती हो, नी पती धरमात्मा । करते हैं सेवन धर्म का इस, काल तन मन धन लगा ॥ ॥ १० ॥ दिन रैन अभिलाषा यही निज, धर्मका परचार हो । जिन देववाणी नाव तिष्ठें, सर्वबेड़ा पारहो ॥ बहुग्रंथ बहुपरयत्न से अति, शुद्धकर मुद्रित किये। रुचना सहित जिन वाक्य अमृत, घूंटतृष्कोंने पिये ॥ ११ ॥ इसग्रन्थ की बहुप्रतें लेखक, की लिखी संचयकरी । जो शब्द थे उन में विमुख सब, लिख दिये सं शयहरी ॥ बहु बुद्धजन सम्मतिलई फिर, शुद्ध करने के लिये । टीका लिखी विस्तार से जो, वाक्य टीका योग थे ॥ १२ ॥ पुनिछंद संख्या यंत्रसूची पत्र लिक्खे मनलगा । पाठकजनों हितकार फिरइक, कोष शब्दों का दिया । चव्वन अधिक उन्नीस सौ श्री, राम संवत् विक्रमी । मुद्रित कराया ग्रन्थ परउप कार ताकी जड़जमी ॥ १३ ॥

॥ २ समालोचना ॥

ज्योतिषरत्न पण्डित जियालालजी चौधरी रईस
॥ फर्रुख़ नगर ॥

मुंशी अमन सिंह साहिब की सच्ची जाति हितैषिता का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण होसकता है कि आप तन मन धन तीनों द्वारा जैन जाति में फैले हुये अज्ञान अंधकार का नाश कररहे हैं और शुद्ध जैन धर्म ग्रन्थाभिलाषियों के लिये

जो उत्तम पदार्थ है उसको और भी परमोत्तम बनाकर चाहनें वालों की भेंट करते हैं, आजतक आपने भूधरजैन शतक, सज्जन चितवल्लभ काव्य, भाषा सन्दूर प्रकरण, भक्तामर, कल्याण मंदिर, छहढाला, आलोचना पाठ, इत्यादिक अनेक रत्न निज बुद्धिरूपी चर्खपर चढ़ा सरलार्थ टीका और कोषादिक को लगाके ऐसे उत्तम कर दिखाये जो अकथनीय हैं, आजकल जब सम्पूर्ण भारत में छपे जैन शास्त्रों के प्रचारकी अधिक धूम है तो आपनेभी जगत विख्यात जैन धर्म के प्रसिद्ध तीर्थंकर श्रीस्वामी पार्श्वनाथ भगवान का भाषा छंद बद्ध पुराण मुद्रित कराया है, यद्यपि यह पुराण जैन के एक प्रसिद्ध कवि भूधरदास जी का रचा होने से स्वतःही अनुपम है, किंतु मुनशी अमन सिंह जीने इसके छपाने में अनेक प्रतियों से शुद्ध करने गूढ़ शब्दों का कोष बनाने आदि का जो श्रम उठाया है उससे यह ग्रन्थ ऐसा बहु मूल्य रत्न बनगया है जो विद्या रसिक जैनियों के देखनेही योग्य है और यद्यपि जैन धर्म्म के लाखों ग्रन्थ विद्यमान हैं परन्तु इस एकही ग्रन्थ के मन लगाकर देखलेने से जैन धर्म्मका पूरा भेद जाना जाता है इस जातिहितैषिता का मैं मुनशी जी को सच्चे मन से धन्यवाद देताहूं—

जियालाल.





केई पंच अग्नि झल सहैं। केई सदा मौन मुख रहैं ॥
केई बैठे भस्म चढ़ाय। केई मृग छाला तन लाय। १००।
नख बढ़ाय केई दुख भरैं। केई जटा भार सिर धरैं ॥
यों अज्ञान तप लीन मलीन। करैं खेद परमारथहीन॥१०१॥
तिनमें एक तापसी नाथ। प्रणम्यो ताहि धरे सिरहाथ ॥
तिन अशीस दे आदर कियो। दिक्षादान कमठ तहँ लियो॥१०२।
करन लगो तब काय कलेश। उर वैराग बिवेक न लेश॥
ठाडो भयो शिला कर लिये। किधों फणी फण ऊंचो किये ॥१०३॥
मंत्री बंधव की शुध पाय। राजा सों विनयो इम आय ॥
भूताचल पर्बत की ओर। भ्राता कमठ करै तप घोर ।१०४।
जो नरनायक आज्ञा होय। देखूँ जाय सहोदर सोय॥
पूछै नृपति कौन तप करै। भो प्रभु तापस के व्रत धरै।१०५।
एक बार मिल आऊं ताहि। राय कहै मंत्री मत जाय॥
खल सों मिले कहा सुख होय॥ विषधर भेंटे लाभ न कोय।१०६।
बरज्यो रह्यो न बारम्बार। महा सरल चित्त बिप्रकुमार ॥
भ्रात मोह बस उद्यम कियो॥ कोमल होत सुजन को हियो।१०७।

॥ दोहा छंद ॥

दुर्जन दूखित संत को, सरल सुभाव न जाय॥

१ इस प्रकार जैसे ऊपर कह आये वे सर्व तपसी जो मलीन थे अज्ञान तपमें लीन हो रहे थे ॥

दर्पण की छवि छारसों, अधिकहिं उज्जल थाय । १०८।
सज्जन टरै न टेव सों, जो दुर्जन दुख देय ॥
चंदन कटत कुठार मुख, अवश सुवास करेय। १०६ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

गयो बिप्र एकाकी तहां । कमठ कठोर करै तप जहां ॥
विनयवंतहोविनयोतास । महासरलवायकमुखभास ।११०।
भो बंधव तौ उर गंभीर । यह अपराध छिमाकर बीर ॥
मैतोरायबहुत बीनयो । भानी नाहिं तुमैं दुख दियो । १११।
होन हार सों कहा बसाय। तुम बिन मोहि कछू न सुहाय ॥
यों कहपांयनलागोजाम।कोपोअधिक कमठदुठताम।११२।

॥ दोहा छंद ॥

दुर्जन और शलेषमा, ये समान जग माहिं ॥
ज्यों ज्यों मधुरो दीजिये, त्योंत्यों कोपकराहिं।११३।
शिला सहोदर शीश पै, डारी बज्र समान ॥
पीरनआई पिशुनको, धिकदुर्जन की बान।११४।
दुर्जन को विश्वास जे, कर हैं नर अविचार ॥
ते मंत्री मरु भूत सम, दुख पावैं निर्धार । ११५ ।
दुर्जन जन की प्रीत सों, कह कैसे सुख होय ॥

विषधरपोष पियूष की, प्राप्ति सुनीनहि लोय।११६।
मंत्री तन तैं रुधिर की, उछली छींट कराल ॥
दुर्जन हिततरुतैंकिधौं, निकसी कोंपललाल।११७।
इहिं विध पापी कमठ नै, हत्या करी महान ॥
तब तपसीमिल नीचनर, काढ़ दियो दुठजान।११८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

फेर दुष्ट भीलन तैं मिलो। भयो चोर घर मूसन हिलो ॥
पाप करतकर आयो जबै। बांध बुरी बिध मारो तबै।११९।

॥ दोहा छंद ॥

जैसी करनी आचरै, तैसो ही फल होय ॥
इन्द्रायन की बेलकै, आंब न लागै कोय।१२०॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिना अरविंद नरिंद्र। पूछै कर जुग जोर मुनिंद्र।
भोप्रभुमुझ मंत्रीमरु भूत।क्यों नाहिं आयोबाह्मनपूत।१२१।
यह सुन अवधिवंतमुनिराय । सबबिरतंतकह्योसम भाय ॥
राजा मन अतिभयो मलीन।हा मंत्री सज्जनता लीन। १२२।
बरजत गयो दुष्ट के पास । कुमरण लह्यो सह्यो बहु त्रास॥

होनहार सोई विध होय । ताहि मिटाय सकै नाहिं कोय। १२३।
यों बिचार मन शोक मिटाय। साधु पूज घर आये राय ॥
यहसुनदुष्टसंग परिहरो। सुखदायक सत संगतिकरो। १२४।

॥ छप्पै छंद ॥

तपे तवापर आय स्वात जल बूंद विनठ्ठी।
कमल पत्र पर संग वही मोती सम दिट्ठी ॥
सागर सीप समीप भयो मुक्ताफल सोई।
संगत को परिभाव प्रघट देखो सब कोई ॥
योंनीच संगतैं नीचफल, मध्यमतैं मध्यम सही ॥
उत्तम संजोगतैं जीवकों, उत्तमफल प्राप्तिकही। १२५।

इतिश्री पार्श्वपुराण भाषामरुभूतभववर्णननाम प्रथमअधिकार संपूर्णम् ॥

॥ द्वितिय अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

अश्वसेन कुल चंद्रमा, बामा उर अवतार ॥
बंदूँ पारस पद कमल, भविजन अलिआधार। १।

॥ पद्धड़ी छंद ॥

इसभाँततजे मरुभूत प्रान। अबसुनो कथाआगे सुजान ॥

अतिसघनसघनकीबनबिशाल।जहँतरुवरतुंगतमालताल २।
वहु बेलजाल छाये निकुंज। कहिं सूकपरे तरुपत्र पुंज॥
कहिंसिकताथलकहिंशुद्धभूम।कहिंकपितरुडारनरहेभूम।३।
कहिंसजलथानकहिंगिरउतंग। कहिंरीछरोभविचरैँकुरंग॥
तिसथानकआरतिध्यानदोष। उपजाबनहस्तीवज्रघोष।४।
अतिउन्नतमस्तकशिखरजास। मदजीवनझरनाझरैतास॥
दीषैतमबरण विशाल देह। मानो गिरजंगम दुरस येह।५।
जाको तन नख चोभवंत। मुसलोपम दीरघ धवलदंत॥
मदभीजेझलकैंयुगलगंड। छिनछिनसोंफेरैसुंडदण्ड।६।
जो वरुना नामैं कमठ नार। पोदनपुर निवसै निराधार॥
सोमरतिहिंहथनीहुईआन। तिससंगरमैं नितरंजमान।७।
कबही घनज्योंगरजे विशेष। कबही ढुकआवैपथिक देष॥
कबही बहुखंडे बिरछबेल। कबही रजरंजित करहिकेल।८।
कबही सरवरमैं तिरहि जाय। कबही जलछिरकैमत्तकाय॥
कबही मुखपंकज तोर देय। कबही दहकादोअंगलेय॥९॥

॥ दोहा छंद ॥

योंसुछंद क्रीड़ा करै, बरुना हथनीं सत्थ॥
बन निवसै बारण बली, मारण शील समत्थ।१०।

१ मारणशील कहिये मारणे का स्वभाव जिसमें समत्थ कहिये सामर्थ अर्थात बलवानथा॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिवस अरविंद नरेश । ज्यों विंमानमैं स्वर्ग सुरेश ॥
योंनिज महलन निवसैभूप । देखो बादल एक अनूप । ११।
तुंग शिखर अति उज्जलमहा । मानो मंदिरही बनरहा ॥
नरवैं निरख चिंतवै ताम । ऐसोही करये जिन धाम ।१२।
लिखन हेतकागद कर लियो । इतने सौंसरूप मिटगयो ॥
तबभूपतिउरकरैविचार । जगतरीतसबअथिरअसार ।१३।
तन धन राज संपदा सबै । योंही विनश जांयगी अबै ॥
मोहमत्त प्राणी हठगहै । अथिर वस्तुको थिरसरदहै ।१४।
जो पररूप पदारथ जात । ते अपने मानै दिनरात ॥
भोगभाव सब दुखके हेत । तिनहीको जानै सुखखेत ।१५।
जों माचन को दों परभाव । जाय यथारथ दिष्टि स्वभाव ॥
समभै पुरुष और की और । त्योंही जगजीवन की दौर ।१६।
पुत्र कलत्र मित्रजन जेह । स्वारथ लगे सगे सबयेह ॥
सुपन सरूप सकल संजोग । निज हितहेत विलंबनयोग १७
योंभूपति वैराग विचार । डारी पोट परिग्रह भार ॥
राज समाज पुत्रको दियो । सुगुरु साखनृप चारित लियो १६
धरी दिगंबर मुद्रासार । करै उचित आहार विहार ॥
१२ बारह विध दुद्धर तपलीन । ६ छहों कायपीहरपरबीन ।२०।
एक समैं अराविंद मुनीश । सारथ वाहीके संग ईश ॥

शिखर सुमेर वंदना हेत। चलेईर्या पथपग देत। २१।
गये सल्लकी बनमैं लंघ। तहां जाय उतरो सब संघ॥
निजासिज्झायसमैंमनलाय। प्रत्मायोगदियोमुनिराय।२२।
ताव्रत बज्र घोष गजराज। आयो कोपकाल समगाज॥
सकल संगमें खलबल परी। भाजें लोक कोकधुनि करी२३
गजके धकैपरो जोकोय। सो प्राणी पहुचों परलोय॥
मारे तुरग तिसाये गैल। मारे मारग हारे बैल। २४।
मारे भूखे करहा खरे। मारे जन भाजेभय भरे॥
इहिंविधहाथीकरतसँघार।मुनिसन्मुखआयोकिलकार।२५।
अति बिकराल रोषबिषभरो।मुनि मारणको उद्यमकरो॥
साधसुदर्शन मेरु समान। श्रीवत्स लच्छन उर थान। २६।
सोसुचिन्ह गज देषो जाम।जाती सुमरण उपजो ताम॥
ततखिनशाँतभयोगजईश। मुनिकेचरणधरीनिजशीश२७
तब मुनिचवे मधुर धुनिमहा। रेगयंद यह कीनो कहा॥
हिंसा कर्म परम अघहेत। हिंसा दुर्गत्ति के दुखदेत।२८।
हिंसासों भ्रमये संसार। हिंसा निजपर को दुखकार॥
तैं येजीव विध्वंसे आय। पातक तैंनडरो गजराय।२८।
देख देख अघके फलकौन। लई विप्रतैं कुंजर जौन।

१ सारे संगमैं हलचल पड़गई और मनुष कोक कहिये मैंडक कैसी धुनि अर्थात रुका पुकार करते हुये भागें॥

तूमंत्री मरुभूत सुजान। मैं अरविंद क्यों न पहिचान।२९।
धर्म विमुख आरत के दोष । पशु परयाय लईदुखपोष ॥
अब गजपति यह भाव निवार। धर्म भावना हिरदैधार।३०।
सम्यक दरशन पूरब जान । पाल अणू व्रतजबलों प्रान ॥
सुन करिंद्रउरकोमल थयो।किये पापनिज निंदकभयो।३१।

॥ दोहा छंद ॥

फिर गुरु पायन सिर धरो, धर्म गहन उर हेत ॥
तव सत्यारथ धर्म बिध, कही साधु समचेत ॥ ३२।

॥ चौपाई छंद ॥

सुन हस्ती शासन अनुकूल । सकल धर्म को दर्शनमूल॥
सब गुण रत्न कोषयहजान मुक्तिधवलहरिधुरसोपान।३३।
सबैनेम व्रतविंदी कही । सम्यक अंकएक सो सही ।३४।
तातैं यह सबही कों सार । याबिन सब आचर्ण असार॥
जहां यथारथ दिष्टि प्रकास । दर्शननाम कहावैतास ॥
जोसरदहै और की और । सोमिथ्यातभाव कीदौर ।३५।

१–पाप जो किये इस कारण अपने को निंदक भयो ॥
२–सम्यक दर्शन मुक्ति रूप उजले पहाड़ की हदतक चढ़ने के लिये सीढ़ी है ॥

दोषअठारहैं वरजित देव । दुविध संगत्यागी गुरुएव ॥
हिंसावरजितधर्मअनूप । यहसरधासमकितकोरूप । ३६ ।

॥ दोहा छंद ॥

शंकादिक दूषन बिना, आठो अंग समेत ॥
मोखवृत्त अंकूर यह उपजै भविउर खेत । ३७ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अंगहीन दर्शन जगमाहिं । भवदुख मेटन समरथनाहिं ॥
अक्षर ऊनमंत्र जोहोय । विष वाधामेटै नाहिं सोय ।३८।
तातैं यह निरखौ उरआन । धराहिरदै सम्यक सरधान ॥

१—भूख १ प्यास २ भय ३ द्वेष ४ राग ५ मोह ६ चिंता ७ बुढ़ापा ८ मृत्यु ९ खेद १० स्वेद अर्थात् पसीना ११ मद १२ रति १३ विस्मय १४ जन्म १५ निद्रा १६ रोग १७ शोक १८ ॥

२ बाहर के परिग्रह १ जो १० हैं, अंतर के परिग्रह २ जो १४ हैं ॥

३ सम्यक्त के आठदोष—शांकित अर्थात् जिन वचन मैं शंका करना १ कांक्षित अर्थात संसार के सुखकी इच्छा करना २ विचिकित्सा मुनीजन वा धर्मी पुरुष से ग्लानी करना ३ मूढ़ता अर्थात तत्व कुतत्व की पहिचान न करना ४ अनुपगुहणना अर्थात पराये औगुण अपने गुण न ढकना ५ अप्रभावना अर्थात अपने धर्मकी उन्नति की उमंग न करना ६ असुस्थीकरण अर्थात आप वा परको धर्म सैं डिगती अवस्था में धर्मपर स्थिर न करना ७ अवात्सल्य अर्थात धर्मी पुरुषों से गऊवच्छ सम प्रीत न करना ८ इनके विपरीत आठ अंग सम्यक्त के जानना यथा निशांकित १ निकांक्षित २ निर्विचिकित्सा ३ अमूढ़ता ४ उपगुहणता ५ प्रभावना ६ सुस्थीकरण ७ वात्सल्य ८

पंचे उदंबर[1] तीन[2] मकार। इनकौं तज बारह[3] ब्रतधार।३९।
इहिविध गुरु दीनो उपदेश। बारण हरषित भयो विशेष॥
सुगुरु बचन सब हिरदै धरै। सम्यक पूरब ब्रत आदरै।४०।
बार बार भुमिसों सिरलाय। मुनिवर चरण नमै गजराय॥
चलेसाध तिहिंहितउपजाय। तबहाथीआयोपहुँचाय।४१।

॥ दोहा छंद ॥

कर उपगार मुनीश तहां, कीनो सुविध बिहार॥
वन निवसै गजपति ब्रती, सुगुरु सीख उरधार।४२।

॥ १४ मात्रा चाल छंद ॥

अबहस्ती संजम साधै। त्रसजीव न मूल विराधै॥
समभाव छिमा उरआनै। अरि मित्र बराबर जानै।४३।
काया कस इंद्री दंडै। साहस धर प्रोषद मंडै॥
सूके तृण पल्लव भच्छै। पर मर्दित मारग गच्छै।४४।
हाथीगण डोहो पानी। सोपीवै गजपति ज्ञानी॥
देषेबिन पाँव नराषै। तन पानी पंक न नाषै।४५।
निजशील कभी नहिं खोवै। हथनी दिश मूलन जोवै॥

1—ऊँवरफल १ कठूँवर फल २ पीपल फल ३ बड़फल ४ गूलर फल ५॥
2—मांस, मधु, मदिरा॥
3—देखो चतुर्थ अधिकार मध्ये ६९ चौपाई आदि १०७ पर्यंत॥

उपसर्ग सहे अतिभारी । दुर्ध्यान तजे दुखकारी । ४६ ।
अघके भय अंग न हालै । दिढ़धीर प्रतिज्ञा पालै ॥
चिरलों दुद्धर तप कीनो । बलहीन भयो तनछीनो । ४७ ।
परमेष्टि परम पद ध्यावै । ऐसे गज काल गमावै ॥
एकै दिन अधिक तिसायो । तब वेगवती तट आयो । ४८ ।
जल पीवन उद्यम कीधो । कांदोद्रह कुंजर बीधो ॥
निश्चै जब मरण बिचारो । संन्यास सुधीतव धारो । ४९ ।
सो कमठ कलंकी मूयो । तावन कुरकट अहि हूयो ॥
तिनआय डसो गजज्ञाता । यह बैर महादुख दाता । ५० ।

॥ दोहा छंद ॥

मरण करो गजराज तब, राखे निर्मल भाव ॥
स्वर्ग बारवें सुरभयो, देखोधर्म प्रभाव । ५१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तहां स्वयंप्रभनामविमान । शशिप्रभदेवभयोतिहिंथान ॥
अवधिजोड़सबजानोदेव । व्रतकोफलपूरवभवभेव । ५२ ।
जिनशासन शंसो बहुभाय । धर्म विषै दिढ़ता मनलाय ॥
सदा सास्ते श्रीजिन धाम । पूजाकरी तहाँ अभिराम । ५३ ।
महामेरु नंदीसुर आदि । पूजे तहँ जिन बिंब अनादि ॥

कल्याणक पूजा विस्तरै। पुन्न भँडार देव यों भरै। ५४।
सोलह[16] सागर आयु प्रमान। साढ़े[3½] तीन हाथ तनजान॥
सोलहसहसवर्षजबजाहिं[16000]। अशनचाहउपजैउरमाहिं।५५।
अनुपम अमृत मय आहार। मनसों भुंजे देव कुमार॥
आठदुगन[16] पषबीतैंजास। तबसोलैयसुगंधउसाँस।५६।
अवधि चतुर्थ अवनी परयंत। यही विक्रयाबलविरतंत॥
अवधिछेत्रजावतपरमान। होयविक्रयातावतमान।५७।

॥ दोहा छंद ॥

बदन चंद्र उपमाधरै, बिकसत बारिज नैन॥
अंग अंग भूषण लसैं, सब बानक सुखदैन।५८।
सुंदर तन सुंदर बचन, सुंदर स्वर्ग निवास॥
सुंदर बनता मंडली, सुंदर सुरगण दास।५९।
अणिमा महिमा आदि दे, आठ ऋद्ध फलपाय॥
सुर सुछंद क्रीड़ा करै, जो मन बरतै आय।६०।
सुनत गीत संगीत धुनि, निषत निरत रसाल॥
सुख सागरमैं मगन सुर, जात नजानैकाल।६१।
लोकोत्तम सब संपदा, अनुपम इंद्री भोग॥
सुफलफलोतपकलपतरु, मिलोसकलसुखजोग।६२।

१—अर्थात सोलह पखवारे॥

जैवंतो बरतो सदा, जैन धर्म जग माहिं ॥
जाके सेवत दुख समुद, पशुपंक्षी तिरजाहिं। ६३।

२३ मात्रा छंद चाल—यह परमादी जीव, जग जंजाल परोजी,

इसही जंबूदीप, पुर्व विदेह मझारे।
पहुप कलावती देश, विकसंत नैन निहारे ।६४।
तहां विजयारध नाम, सोहै शैल रवानो ।
उज्जल वरण विशाल, रूप मई गिररानो। ६५।
योजन परम पचांस, भूमि विषै चोड़ाई।
तुंग पँचीस प्रमाण, शोभा कहियनजाई। ६६।
चौथाई भूमांझ, नौसिर कूट विराजै।
सिद्ध शिखरजिन धाम,मणिप्रत्मातहां छाजैं। ६७।
उत्तर दक्षण ओर, श्रेणी दोय जहां हैं।
दोय गुफा गिरहेठ,अति अंधियारतहां हैं। ६८।
तापर स्वर्ग समान, लोकोत्तम पुरसो है ।
वापी कूप तलाव, मण्डित सुरमन मोहै। ६९।
विद्युत गतिभूपाल,न्यायप्रजाप्रत पालै।
नीत निपुण धर्मज्ञ, संत सुमारग चालै। ७०।
विद्युत मालानांव, ताघर नार सयानी।

मानो मन मथ जोग, आय मिली रतिरानी ।७१।
तिनकैंसो सुरआय पुत्र भयोवड़भागी।
अग्नि वेग तसुनाम, अति सुंदर सौं भागी।७२।
सोमप्रकृतिपरवीन,सकलसुलक्षण धारी।
जिन पद भक्ति पुनीत, सवहीं को सुखकारी।७३।
राज संपदा भोग, भुंजित पुन्न नियोगे।
एक दिना इनसाध, भेटे भाग संजोगे।७४।
श्रवन सुनो उपदेश, भर योवन वैराग्यो।
आसन भव्य कुमार, संजम सों अनुराग्यो।७५।
तज परिग्रह गुरसाष, पंचमहा व्रतलीने।
दुद्धर तप आराध, रागादिक कृषकीने।७६।
छीन किये परमाद, विचरैं एक विहारी।
बारेह अंग समुद्र, पार भयो श्रुत धारी।७७।
एक दिवसधर योग,हिमगिर कंदरमाहीं।
निवसै आतम लीन, वाहर की शुधनाहीं।७८।

॥ दोहा छंद ॥

कुर्कट नामा कमठचर, दुष्टनाग दुखदाय।
सोमर पंचम नरकमें, परो पाप वशजाय।७९।

१–शास्त्र अंग ११ पूर्व १४ अंग १ सर्व १२ हुये।

छेदन भेदन आदि बहु, तहां वेदना घोर।
सहस[३०००] जीभसों वरणये, तउव न आवै ओर।८०।
ऐसे दुख में कमठजी, कीनी पूरण आव।
सत्रह[१७] सागर[1] भुगतकै, निकसो कूरसुभाव।८१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

वैर भाव उरतैं नहिं टरो। फेर आय अजगर अवतरो॥
संसकारवशआयोतहां। हिमगिरगुफामुनीश्वरजहां।८२।
गिले[2] साध संजम धरधीर। सम भावन तैं तजो शरीर॥
लीनोस्वर्गसोलह[१६]वैंवास। जोनितनिरुपमभोगनिवास।८३।
जन्म सेज तैं योबन पाय। उठो अमर संपूरण काय॥
देखसंपदाविस्मय भयो। अवधि होत संशयसवगयो।८४।
पूजाकरी जिनालय जाय। भाव भक्ति रोमांचित काय॥
पूरबसंचितपुन्नसंजोग। करै तहां सुर वंछित भोग।८५।
गए वर्ष बाईसहजार[२२०००]। भोजन भुंजै मनसाहार॥
तावतमानपक्ष जब जाय। तब ऊसाँसो दिशमहकाय।८६।
देषै पंचम भूपरयंत। अवधि ज्ञान बलैं[3] मूरति वंत।
तितने मानविक्रिया करै। गमनागमन हिये जवधरै।८७॥

१--ऐसे स्थान में सागर बड़ा समझना चाहिये।
२--अर्थात् निगले॥
३--भावार्थ मूर्तिवंत पदार्थ कोदेखैं॥

तीनहाथअति सुंदर काय। लेश्या शुकलमहा सुखदाय॥
थितसागरबाईसविशाल। इहिविधबीतेसुखमेंकाल।८८।

॥ दोहा छंद ॥

आदि अंत जिस धर्मको, सुखी होंय सबजीव।
ताको तनमन वचनकर, हेनर सेव सदीव।८९।

श्री पार्श्वपुराण भाषा वज्र घोष गजका बारवें स्वर्ग में देव होकर फिर
विद्युतगति नाम भूपालघर जन्मलेसोलवें स्वर्ग में देव होना
वर्णननाम द्वितिय अधिकार संपूर्णम्

॥ तृतिय अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

अश्व सेन कुल कमल रवि, बामा कुमर कृपाल॥
वंदू पारस चरण युग, सरनागति प्रतिपाल।१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जंबू दीप बसै बहु फेर। जाके मध्य सुदर्शन मेर॥
कंचन मणिमयअतुल सुहाग। ता पर्वत केपश्चिमभाग।२।
अपर विदेह बिराजे खेत। सो नित चौथे काल समेत॥

पदपद जहांदिपै जिन धाम। नहींकुदेवन कोविश्राम। ३।
जैनेयती जन दीखें सोय। नहीं कुलिंगी दीखे कोय॥
उत्तम धर्म सदाथिर रहै। हिंसा धर्म प्रकाशनलहै। ४।
तीनों बरणबसैं जहां लोय। बाह्मनबरण कभी नहिंहोय॥
तामें पद्म देश अभिराम। सोहै नगर अश्वपुरनाम।५।
तहां बज्रवीरज भूपाल। न्यायैं प्रजा करै प्रतिपाल॥
गुणनिवास सूरजसमदिपै। आनभूपउड़गणछबिछिपै।६।
विजया नामैं नरपति नार। रूपवंत रतिकी उनहार॥
पटरानी सब मैं परधान। पूरब पुन्न उदय गुणखान। ७।
एकसमैं निश पश्चिम जाम। पंच सुपन देषे अभिराम॥
मेरु दिवाकर चंद्र बिमान। सजल सरोवर सिंधुसमान।८।
प्रातभये आई पियपास। बिकसत लोचन हिये हुलास॥
रात सुपन अवलोके जेह। नृप आगे परकाशे तेह। ९।
तब नरेन्द्र बोले बिकसाय। सुंदर बचन श्रवन सुखदाय॥
सुनरानी इनको फल जोय। पुत्र प्रधान तुम्हारे होय।१०।
ऐस बचन पियके अवधार। अति आनंद भयो नृपनार।
अचुत स्वर्गतें सोसुरचयो। बज्रनाभि नामा सुतभयो।११॥
चौसठ लच्छण लच्छितकाय। पुन्नयोग जिम उतरोआय॥
जन्ममहोच्छवराजाकियो। जिनपूजेयाचकधनदियो।१२।

१–जोजन दीखैं सो जैन यती दीखैं॥
२–पुन्नके समय की तरह आ उतरा॥

बढ़ै बालजिमबालक चंद। सुजन लोक लोचन सुखकंद ॥
क्रमक्रमसोंशिशुभयोकुमार। पढ़लीनीविद्यासबसार।१३।
जोबनवंत कुमर जबभयो। निर्मल नीतपंथ पगठयो ॥
रूपतेजबलबुद्धिविज्ञान। सकल सारगुणरत्ननिधान।१४।
कीनी पिता ब्याह विधयोग। राजसुता बहुवरी मनोग ॥
क्रमकरकुमरपितापदपाय। राजकरैथुतिकरियनजाय।१५।
पुन्नजोग आयुध ग्रह जहाँ। चक्ररत्न वरउपजो तहाँ ॥
छहों खण्ड बरती भूपाल। बशकीने नाये निजभाल।१६।
देवदैत्य विद्याधर नये। नृप मलेच्छ सब सेवक भये ॥
बढ़ी संपदा पुन्न संयोग। इन्द्रसमानकरैसुखभोग।१७।

॥ दोहा छंद ॥

संपूरण सुख भोगवै, बज्रनाभि चक्रेश ॥
तिस बिभूति बल बरनऊँ, यथाशक्ति लवलेश।१८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सहस[३२०००]बतीस सास्ते देश। धनकन कंचन भरे विशेष ॥
बिपुलबाड़ बेढ़े चहुंओर। तेसब गांव छानवै[९६०००००००] कोर। १९।
कोट कोट दरवाजे चौंर[१]। ऐसे पुर छब्बीसहजार[२६०००] ॥

१– प्रति पुरके कोट में चार दरवाजे ॥

जिनकैलगैं पांचसौ गांव। तेअटंबचउसहससुठांव।२०।
पर्वत और नदी के पेट । सोलहसहसकहे वेखेट॥
कर्वट नाम सहसचौवीस। केवल गिरवरबेढ़े दीष।२१।
पत्तन अड़तालीसहैंजार। रत्न जहां उपजैं अतिसार॥
एकलाख द्रोणामुख वीर। सहसघाट सागर के तीर।२२।
गिर ऊपर संबाहन जान। चौदहसहस मनोहर थान॥
अट्ठाईस हजार अशेश। दुर्गजहां रिपुको न प्रवेश।२३।
उपसमुद्रके मध्यमहान। अंतर दीप छपन परिमान॥
रत्नाकर छबीसहैंजार। बहु विधसार बस्तु भंडार।२४।
रत्नकुच्छ सुंदर सातसै। रत्नधरा थानक जहँ लसै॥
इनपुर सूबस राजैं खरे। जैनधाम धरमी जनभरे।२५।
बरगयंद चौरासीलाष। इतनेही रथ आगम साष॥
तेजतुरंग अठारह कोर। जेवढ़चलैं पवनतैंजोर।२६।
पुनिचौरासीकोट प्रमाण। पायक संघ बड़े बलवान॥
सहसछानवे बनता गेह। तिनको अबविवर्ण सुनलेह।२७।
आरजखण्ड बसैं नरईश। तिनकीकन्या सहसबतीस॥
इतनीही अतिरूप रसाल। विद्याधर पुत्री गुणमाल।२८।
पुनिमलेच्छ भूपन कीजान। राजकुमारी तावत मान॥
नाटकगण बत्तीसहैंजार। चक्री नृपको सुख दातार।२९।
आदि शरीर आदि संठान। पूर्व कथित तन लक्षणजान॥

बहुबिधविंजनसहितमनोग। हेमवर्णतनसहजनिरोग।३०।
छहोंखण्ड भूपति बलरास। तिनसौंअधिकदेहबलजास॥
सहंसबतीसचरण तलरमैं। मुकटबंधराजानितनमैं।३१।
भूपमलेच्छ छोड़ अभिमान। सहंसअठारह मानैआन॥
पुनिगण बद्धबखाने देव। सोलेहंसहस करें नृपसेव।३२।
कोटथाल कंचननिर्मान। लक्षकोट हलसहित किषान॥
नाना वरण गऊकुल भरे। तीनकोटब्रजआगमधरे।३३।

॥ दोहा छंद ॥

अब नवनिधि के नामगुण, सुनोयथारथ रूप॥
जैनीबिन जानै नहीं, जिनको सहज स्वरूप।३४।

॥ नवनिधनाम ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथम कालनिधि शुभ आकार। सो अनेक पुस्तक दातार॥
महाकालनिधिदूजी कही। याकी महिमासुनयोसही।३५।
असिमसि आदिक साधन जोग। सामग्रीसबदेय मनोग॥
तीजी निधि नैसर्पमहान। नाना बिधि भाजनकी खान।३६।

१—छहोंखण्ड के राजाओं की देह के बल के समूहसे चक्रवर्त की देहका बल अधिक है॥

पांडुकनाम चतुंरथी होय। सबरसधान समप्यैं सोय ॥
पदम पंचमी सुकृतखेत। बंछितबसन निरंतर देत। ३७।
मानव नाम छठी निधिजेह। आयुधजाति जन्मभुमि तेह ॥
सप्तम सुभग पिंगलानाम। वहुभूषण अर्पैंअभिराम। ३८।
शंखनिधान आठमी गनी। सब बाजित्र भूमिका बनी ॥
सर्वरत्ननौमी निधिसार। सोनितसर्व रत्न भंडार। ३९।

॥ दोहा छंद ॥

ये नौनिधि चक्रेश के, सकटाकृत संठान ॥
आठचक्र संयुक्त शुभ, चौखूँटी सभजान। ४०।
जोजनआठ उतंग अति, नवंजोजन विस्तार ॥
बारहमित दीरघसकल, बसैंगगन निर्धार ।४१।
एकएक के सँहँसमित, रखवाले यँषदेव ॥
येनिधि नरपति पुन्नसों, सुखदायक स्वयमेव।४२।

॥ चौदह रत्न नाम ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथमसुदंरशन चक्रपसत्थ। छंहो खण्डसाधन समरत्थ ॥
चंडवेग दिढ़ दंडदुतीय। जिसवल खुलैगुफा गिरकीय।४३।

१—यक्षदेव ॥

चर्मरत्न सोत्रतिय निर्वेद । महा बज्रमई नीर अभेद ॥
चतुरथ चूँड़ामणि मणि रैन। अंधकारनाशक सुखदैन।४४।
पंचमरत्न काँकणी जान। चिंतामणि जाको अभिधान ॥
इनदोनों तैं गुफामंझार। शशिसूरज लखयैनिर्धार। ४५।
सूरजप्रभ शुभ छत्र महान। सोअति जगमगाय ज्यों भान॥
सौनंदक असिअधिक प्रचंड। डरैंदेख बैरी बलवंड। ४६।
पुनिअजोध सेनापति सूर। जोदिग विजे करैबल पूर ॥
बुधसागर प्रोहित परबीन। बुधिनिधान विद्यागुणलीन।४७।
थपितभद्र मुखनाम महंत। शिल्प कला कोविद गुणवंत ॥
कामवृद्धि ग्रहपति विख्यात। सभग्रह काजकरैंदिनरात।४८।
व्याल बिजैगिरअति अभिराम। तुरगतेज पवनंजे नाम॥
बनतानाम सुभद्राकही। चूरै बज्र पानसों सही। ४९।
महादेह बलधारै सोय। जापटतर तिय और न कोय॥
मुख्यरत्नयह चौदहजान। औररत्नको कौनप्रमान। ५०।

॥ दोहा छंद ॥

राजअँग चौदह रतन, बिबिधिभांत सुखकार ॥
जिनकीसुर सेवाकरैं, पुन्न तरोवर डार। ५१।
चक्रछत्र असिदंड मणि, चर्म कांकणी नाम॥
सातँरत्न निर्जीवयह, चक्रवर्त्ति के धाम। ५२।

सेनापति ग्रहपतिथपितें, प्रोहितें नाग तुरंग ॥
बनतामिल सातों रतन, ये सजीवसरबंग ।५३।
चक्रछत्र असिदंडये, उपजैं आयुध थान ॥
चर्म कांकणी मणिरतन, श्रीग्रहउतपति जान।५४।
गजतुरंग तियें तीनये, रूपाचलपर होत ॥
चौंररतनवाकी बिमल, निजपुरलहैंउद्योत।५५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मुख्य संपदा को विरतंत। आगें और सुनो मतिवंत॥
सिंहवाहनी सेज मनोग। सिंहारूढ़ चक्रवे जोग। ५६।
आसनतुंग अनुत्तर नाम। माणिकजालजटितअभिराम॥
अनुपम नामा चमर अनूप। गंगातरल तरंग सरूप।५७।
विद्युति दुतिमणिकुंडल्ल जोट। छिपैऔर दुतिजाकीओट॥
कवचअभेद अभेदमहान। जामैंविधे न बैरीबान। ५८
विषमोचनी पादुका दोय। परपदसों विषमुंचै सोय॥
अजितंजे रथ महारवन्न। जलपैथलवत करैगवन्न। ५९।
वज्रकांड चक्रीघर चाप। जाहिचढ़ावै नरपति आप॥
बाणअमोघ जबैकरलेत। रणमेंसदा विजैवरदेत। ६०।
विकट वज्रतुंडा अभिधान। शत्रुखंडनी शकती जान॥
सिंहाटकबरछी विकराल। रत्नदंडलागी रिपुकाल। ६१।

लोहबाहनी तिक्षणछुरी । जिसचमके चपला दुतिदुरी ॥
येसबबस्तु जाति भूंमाहिं । चक्रीछूटऔर घरनाहिं । ६२ ।

॥ दोहा छंद ॥

मनोवेग नामाकणाय , ग्रंथन कहो विख्यात ॥
खेटभूत मुखनाम है , दोनोंआयुध जात । ६३ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आनंदन भेरी दंशदोय[1] । बारह जोजनलों धुनिहोय ॥
बज्रघोष पुनि जिनकोनाम।बारहपटह नृपतिकेंधाम । ६४ ।
बरगंभीरावर्त गरीश । शोभनरूप शंख चौवीसे ॥
नानाबरणधुजारमणीय । अड़तालीसकोटमितकीय ।६५।
ईत्यादिक बहुबस्तुअपार । वरणन करत न लहिये पार ॥
महलतणीरचनाअसमान । जिनमतकहीसोलीजोजान६६

॥ दोहा छंद ॥

चक्री नृपकी संपदा, कहै कहांलों कोय ॥
पुन्नबेल पूरबबई, फली सांघणी सोय । ६७ ।

१–बोई गई ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहि विधि वज्रनाभि नरराय । करै भोग चक्रीपदपाय ॥
धर्मध्यान अहनिश आचरै। निर्मल नीत पंथपगधरै ।६८।
पूजा कर चैत्यालय जाय । पूजै सदा सो गुरु के पाय ॥
सामायक साधै अघनास। करै परव प्रोषद उपवास ।६९।
चार प्रकार दान नित देय। औगुण त्यागै गुणगह लेय ॥
सन्तशील पालै बड़भाग ।मनबच काय धर्मसों राग।७०।
सिंहासन पर बैठ नरेश ।करै पुनीत धर्म उपदेश ॥
सुजनसभाजनकिंकरलोग। देयसुहितशिक्षासबजोग।७१।

॥ दोहा छंद ॥

बीजराख फल भोगवें, ज्यों किसान जग माहिं ॥
त्योंचक्री नृपसुख करै, धर्मबिसारै नाहिं।७२।

नरेन्द्र छंद जिसकी चाल जोगीरासा ॥ की ढाल है ॥

इहिं बिधि राजकरै नरनायक। भोगै पुन्न विशालो।
सुखसागर मैं रमत निरंतर।जात न जानै कालो।७३॥

१–औषधि १ शास्त्र २ अभय ३ अहार ४ ॥

एक दिना शुभकर्म सँजोगे । छेमाकर मुनि बन्दे ॥
देखे श्री गुरु के पद पँकज । लोचन अलि आनन्दे ।७४।
तीन प्रदच्छना दे सिर न्यायो । कर पूजा थुति कीनी ॥
साधु समीप विनै कर बैठो । पायन में दिठ[1] दीनी । ७५ ।
गुरु उपदेशो धर्म शिरोमणि । सुन राजा बैरागे ॥
राज रमा बनतादिक जेरस । ते रस बेरस लागे । ७६ ।
मुनिसूरज कथनी किरणावलि । लगत भिरम बुधभागी ॥
भवतन भोग सरूप बिचारे । परम धरम अनुरागी ।७७।
इस संसार महाबन भीतर । भ्रमते ओर न आवै ॥
जामण मरण जरादों दाझो । जीव महादुख पावे । ७८ ।
कबही जाय नरक थिति भुंजै । छेदन भेदन भारी ॥
कबही पशु पर्याय धरै तहां । बध बन्धन भैकारी । ७९ ।
सुरगति में पर संपति देखै । राग उदय दुख होई ॥
मानुष जौनि अनेक विपत मय । सर्बसुखी नहिं कोई ।८०।
कोई इष्ट वियोगी विलकै । कोई अशुभ संजोगी ॥
कोई दीन दालिद्र विगूचे । कोई तन के रोगी । ८१ ।
किसही घर कलहारी नारी । कै बैरी सम भाई ॥
किसही के दुख बाहर दीखै । किसही उर दुठताई । ८२।
कोई पुत्र बिना नित भूरै । होय मरै तब रोवै ॥

१—दृष्टिं अर्थात् नजर ॥

खोटी सन्तति सों दुख उपजत। क्यों प्रानीसुखसोवै। ८३।
पुन्नउदै जिनके तिनको भी। नाहिं सदा सुख साता ॥
यों जग वास यथारथ देषत। सब दीषै दुखदाता। ८४।
जो संसार विषे सुख होता। तिर्थंकर क्यों त्यागैं ॥
काहे को शिव साधन करते। संजम सों अनुरागैं। ८५।
देह अपावन अथिर घिनावन। यामैं सार न कोई ॥
सागर के जलसों शुचि कीजे। तौभी शुचि नहिं होई। ८६।
सात कुधात मई मल मूर्ति। चाम लपेटी सोहै ॥
अन्तर देखत यासम जगमें। और अपावन कोहै। ८७।
नवमल द्वारश्रवैं निशबासर। नाँव लिये घिनआवै ॥
व्याधि उपाधि अनेक जहांतहां। कौन सुधीसुख पावै। ८८।
पोषत तौ दुख दोष करैसब। सोखत सुख उपजावै ॥
दुर्जन देह स्वभाव बराबर। मूरख प्रीति बढ़ावै। ८९।
राचन जोग स्वरूप न याको। विरचन जोग सही है ॥
यहतन पाय महा तपकीजे। यामें सारयही है। ९०।
भोग बुरे भवरोग बढ़ावैं। वैरी हैं जग जीके ॥
बेरस होहिं विपाक समै अति। सेवत लागैं नीके। ९१।
वज्र अग्नि विषसों विषधर सों। ये अधिके दुखदाई ॥
धर्म रतन के चोर चपल हैं। दुर्गति पंथ सहाई। ९२।
ज्यों ज्यों भोग सँजोग मनोहर। मन वंछित जन पावै ॥
तृष्णा नागन त्यों त्यों डंकै। लहर जहर की आवै। ९३।

मोह उदै यह जीव अज्ञानी । भोग भले कर जानै ॥
ज्यों ज्यों कोइजन खाय धतूरा । सोसब कंचन मानै । ९४ ।
मैं चक्री पद पाय निरन्तर । भोगे भोग घनेरे ॥
तोभी तनक भएनहीं पूरन । भोग मनोरथ मेरे । ९५ ।
राज समाज महा अघ कारन । बैर बढ़ावन हारा ॥
वेश्यासम लक्ष्मी अति चंचल । इसका कौन पत्यारा । ९६ ।
मोह महा रिपु बैर बिचारा । जगजीय संकट डाले ॥
घर कारागृह बनिता बेड़ी । परियन जन रखवाले । ९७ ।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरनतप । ये जियके हितकारी ॥
येही सार असार और सब । यह चक्री चितधारी । ९८ ।
छोड़े चौदहैं[१४] रत्न नवों निधि । अरु छोड़े संग साथी ॥
कोड अठारहैं[१८०००००००] घोड़े छोड़े । चौरासी[८४०००००] लख हाथी । ९९ ।
इत्यादिक सम्पति बहुतेरी । जीरण तृण ज्यों त्यागी ॥
नीत बिचार नियोगी सुतको । राजदियो बड़भागी । १०० ।
होय निशल्य अनेक नृपति संग । भूषण बसन उतारे ॥
श्री गुरुचरन धरी जिन मुद्रा । पंचै महा व्रतधारे । १०१ ।
धन यह समझ सुबुधि जग उत्तम । धन यह धीरजधारी ॥
ऐसी संपति छोड़ बसे बन । तिनपद ढोक हमारी । १०२ ।

॥ दोहा छंद ॥

परिग्रह पोट उतार सब, लीनो चारित पंथ ॥

निज स्वभाव में थिर भये, बज्रनाभि निर्ग्रंथ । १०३ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बारह विधि दुद्धर तप करै । दस लाक्षनी धर्म आचरै ॥
पढ़ै अंगपूरब श्रुतिसार । एकाकी विचरै अनगार । १०४।
ग्रीषम काल बसै गिर शीश । बर्षा में तरुतल मुनिईश ॥
शीतमास तटनी तट रहैं। ध्यान अगिनि में कर्मनिदहैं[1]। १०५।
एक दिना बनमें थिरकाय । जोग दिये ठाड़े मुनिराय ॥
कमठजीव अजगर तन छोर। उपजो छठे नरक अतिघोर। १०६।
थित सागर बाईस प्रमाण । देखे दुख जानै भगवान ॥
पूरन आव भोगकर मरो । विहनकुरंग भील अवतरो । १०७।
काल सरूप वदन विकराल । बनचर जीवनको छैकाल ॥
धनुषबान लीयेनिजपान । भ्रमैमांस लोभीबनथान। १०८।
सो पापी चल आयो तहां । जोगारूढ़ खड़े मुनि जहां ॥
शत्रुमित्रसों समकरभाव । लगे आपमें शुद्धस्वभाव । १०९।
कुंकुम कादो महल मसान । कोमल सेज कठिन पाषान ॥
कंचनकाच दुष्ट अरुदास । जीवनमरन बराबरजास। ११०।
निर्ममत्त तनकी सुधि नाहिं। सातौंभय वराजित उरमाहिं ॥
देषदिगम्वरकोपोनीच । कंपतअधर दशनतलभींच। १११।

१—निदहैं अर्थात् जलावैं ॥

तान कमान कानलों लई । तिच्छण शर मारो निर्दई ॥
मुनिवरधर्म ध्यानआराध।दुखमें धीरजतजो नसाध।११२।
दर्शन ज्ञान चरन तपसार। चारो आराधन चितधार ॥
देहत्यागतव भयेमुनिंद्र। मध्यम ग्रैवेयक अहमिंद्र।११३।
तहां उत्पाद शिला निकलंक । हंसतूल युत रत्न पलंक ॥
उठोसेजतज देखतकाय। अल्पकाल में योवनपाय।११४।
देखे दिशिअति विस्मयरूप। महा मनोग विमानअनूप॥
अतुलतेजअहमिंद्रनिहार।अवधिज्ञानउपजोतिहिंवार ११५
जानोसम पूरब भव भेव। चारित वृक्षफलो सुख देव ॥
अनुपम आठों दरब संजोय।रत्नाबिंब पूजेथिरहोय। ११६ ।
आयोसुर हर्षित निजथान । महारिद्धि महिमा असमान ॥
तीनभवनबरतींजिनधाम।भावभक्तिनितकरैप्रणाम ।११७।
तिर्थंकर केवलि समुदाय । निज थानक थित पूजेपाय ॥
पंचकल्यानक कालविचार।प्रणामेंहस्त कमलसिरधार ११८।

॥ दोहा छंद ॥

अनाहूत अहमिंद्र गण, आवैं सहज स्वभाव ॥
धर्मकथा जिनगुण कथन, करैं सनेह बढ़ाव । ११९ ।

१—तिस स्थान में उत्पन्न होने की शिल्प निकलंक है और रत्न युत पलंग हंस कहिये सूर्य्य जिसकी तुल्य प्रकाशित है ॥

कबहीं रत्न बिमान मैं, कबहीं महल मझार ॥
कबहीं बनक्रीड़ा करैं, मिल अहमिंद्र कुमार। १२०।
और बास निज बासतैं, उत्तम देखै नाहिं ॥
ताहीते तैं अमर गण, और काहिंनहिं जाहिं। १२१।
प्रीत भरे गुण आगरे, शुभग सोम श्रीवन्त ॥
सातधात मलसौंरहित, लेश्या शुक्ल धरन्त। १२२।
सब समान संपति धनी, सब मानैं हम इन्द्र ॥
कलाज्ञान विज्ञानसम, ऐसेसुर अहमिंद्र। १२३।
शुकल बरन तन मन हरन, दोयहाथ परिमान ॥
मानोप्रत्मा फटक की, महातेज दुतिवान। १२४।
काम दाह उरमें नहीं, नहिं बनिता को राग ॥
कल्प लोक के सुरसुखी, असंख्यात वैं भाग। १२५।
सत्ताईस हजार मित, वर्षबीत जब जाहिं ॥
मानसीक आहारकी, रुचि उपजै मनमाहिं। १२६।
साढ़े तेरह पक्षपर, लेत सुगंध उसास ॥
छठीअवनिलौंजिनकही, अवधिबिक्रियाजास। १२७।
सागर सत्तांईस मित, परम आवतिहिं थान ॥
शुभग सुभद्र बिमान मैं, यों सुखकरै महान। १२८।

१—नरक में सर्व जन्म अस्थान अन्ध अधोमुख योनी और ढाल के आकार हैं घिनावनी कठिन वास दुख स्थान हैं

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अभसो भील महादुख दाय। रुद्रध्यान सों छोड़ीकाय ॥
मुनिहत्या पातक तैं मरो। चरम[1] शुभ्र सागर में परो। १२९।

॥ दोहा छंद ॥

कथा तहां के कष्टकी; कोकर सकै बखान ॥
भुगतै सो जानै सही, की जानै भगवान। १३०।

॥ नरक कथन ॥

॥ दोहा छंद ॥

जन्म थान सब नरक में, अन्धअधो मुखजौन ॥
घंटाकार घिनावनी, दुसह बास दुख भौन। १३१।
तिनमें उपजैं नारकी, तलासिर ऊपर पाय ॥
विषम बज्र कंटक मई, परैं भूमिपर आय। १३२।
जोविषलें बीछू सहँस, लगें देह दुखहोय ॥
नरक धराके परस तैं, सरस वेदना सोय। १३३।
तहां परत परवान अति, हाहा करते राम ॥

१—अंतिम नरक अर्थात् सातवां नरक

ऊँचे उछलैं नारकी, तये तवा तिल जेम।१३४।

॥ सोरठा छंद ॥

नरक साँतवें माहिं, उछलन जोजन पाँचसे ॥
और जिनागम माहिं, यथायोग सब जानियो।१३५।

॥ दोहा छंद ॥

फेर आन भू पर परैं, और कहां उठजाहिं ॥
छिन्नभिन्नतनअतिदुखित,लोटलोटविलकाहिं।१३६।
सबदिश देख अपूर्व थल, चकित चितभयवान ॥
मन सोचै मैं कौनहूं, परो कहां मैं आन।१३७।
कौन भयानक भूमि यह, सब दुख थानकनिंद ॥
रुद्र रूप ये कौन हैं निठुर नारकी वृन्द।१३८।
काले बरन कराल मुख, गुञ्जा लोचन धार ॥
हुँडक डील डरावने, करैं मारही मार।१३९।
सुजन न कोई दिठ परै, शरन न सेवक कोय ॥
ह्यां सो कुछ सूझै नहीं, जासों छिन सुखहोय।१४०।
होत विभंगा[१] अवधि तव; निजपर को दुखकार ॥
नरक कूप मैं आपको, परो जान निरधार।१४१।

१—पहले जन्मों के खोटे काम किये हुये याद आना ॥

पूरब पाप कलाप सब, आप जाप कर लेय ॥
तब विलापकी ताप तप, पश्चाताप करेय। १४२।
मैं मानुष परयायं धर, धन योवन मद लीन॥
अधम काज ऐसें किये, नरक बास जिन दीन। १४३।
सरसों समसुख हेततब, भयो लंपटी जान ॥
ताही को अबफल लगो, यह दुख मेरुसमान। १४४।
कंदमूल मद मांस मधु, और अभक्ष अनेक॥
अक्षरा बस भक्षरा किये, अटक न मानी एक।१४५।
जलथल नभचारी बिविध, बिलबासी बहुजीव ॥
मैं पापी अपराध बिन, मारे दीन अतीव। १४६।
नगर दाह कीनो निठुर, गाम जलाये जान ॥
अटबी में दीनी अगिन, हिंसाकर सुखमान।१४७।
अपने इन्द्री लोभको बोलो मृषा अलीन ॥
कलपित ग्रंथ बनायके, वहकाये बहुदीन। १४८।
दाव घात परपंच सों, पर लछमीहर लीय॥
छलबल हठबलदिखबल, परबनिताबशकीय। १४९।
बढ़ी परिग्रह पोटसिर, घटी न घटकी चाह ॥
जो ईंधनके योग सों, अगिन करै अतिदाह। १५०।
बिन छानो पानी पियो, निश भुंजो अबिचार ॥
देव दरब खायो सही रुद्रध्यान उर धार। १५१।

कीनी सेव कुदेव की, कुगुरुन को गुरु मान ॥
तिनहीं के उपदेश सों, पशु होमे हितजान।१५२।
दियो न उत्तम दानमैं, लियो न संयम भार ॥
पियो मूढ़ मिथ्यात मद, कियो न तप जग सार।१५३।
जो धर्मीजन दयाकर, दीनी शीष निहोर ॥
मैं तिनसों रिस कर अधम, भाषे वचन कठोर।१५४।
करी कमाई परजनम, सोआई मुझ तीर ॥
हाहा अब कैसेधरूं, नरक धरामें धीर। १५५।
दुर्लभ नर भव पायकै, केई पुरुष प्रधान ॥
तपकर साधैं स्वर्ग शिव, मैं अभाग यह थान। १५६।
पूरब संतन यों कहीं, करनी चालेलार ॥
सोअब आँपन सों दिखै, तव न करी निर्धार।१५७।
जिस कुटंब के हेत मैं, कीने बहुविधि पाप॥
ते सब साथी बीछड़े, परो नरक मैं आप। १५८।
मेरी लछमी खानकों, सीरी हुये अनेक ॥
अबइस विपत विलाप मैं, कोई न दीषै एक। १५९।
सारस सरवर तजगये, सूखो नीर निराट॥
फलबिन बिरष विलोक कै, पच्छी लागे बाट। १६०।
पंचकरण पोषण अरथ, अनरथ किये अपार ॥
ते रिपु ज्यों न्यारे भये, मोह नरक मैं डार। १६१।
तब तिलभर दुख सहन को, हुतो अधीरज भाव ॥

अबये कैसे दुसह दुख भरहूं दीरघ आव।१६२।
अघ वैरी के बश परो, कहाकरूं कितजाउं॥
सुनैकौन पूछे किसैं शरन कोन इसठाउं।१६३।
यहां कछू दुख हतन को, उक्त उपाव न मूर॥
थिति बिन विपत समुद्र यह, कब तिरहूं तट दूर।१६४।
ऐसी चिंता करतहूं, बढ़ै बेदना एम॥
घीव तेल के योग तें, पावक प्रज्वलै जेम।१६५।

॥ सोरठा छंद ॥

इहिं विधि पूरब पाप, तहां नारकी शुधकरैं॥
दुखउपजावन जाप, होय विभंगा अवधितें।१६६।

॥ दोहा छंद ॥

तबही नारकि निर्दई, नयो नारकी देष॥
धायधाय मारन उठै, महादुष्ट दुर्भेष।१६७।
सबक्रोधी कलही सकल सबके नेत्र फुलिंग॥
दुःख देनको अति निपुन, निठुर नपुंसक लिंग।१६८।
कुंत कृपान कमान शर शकती मुगदर दंड॥
इत्यादिक आयुध बिबिधि, लियेहाथ परचंड।१६९।
कहकठोर दुर्बचन बहु, तिलतिल खंडैं काय॥

सो तबही वहि कालतन, पारेवत मिलजाय।१७०।
कांटोंकर छेदैं चरन, भेदैं मरम विचार॥
अस्थिजाल चूरण करैं, कुचलैं खाल उपार।१७१।
चीरैं करवत काठ ज्यों, फारैं पकर कुठार॥
तोड़ैं अंतरमालका अंतर उदर बिदार।१७२।
पेलैं कोल्हू मेलके, पीसैं घरटी घाल॥
तावैं ताते तेल मैं, दहैं दहन परज्वाल।१७३।
पकरपांय पटकैं पहुमि, झटक परसपर लेहिं॥
कंटक सेज सुवावहीं, शूली पर धरदेहिं।१७४।
घसैं सकंटक रूखसों, बैतरनी ले जाहिं॥
घायल घेर घसीटयैं, किंचित करुणा नाहिं।१७५।
केईरक्त चुवाव तन, बिहवल भाजैं ताम॥
पर्बत अंतर जायके, करैं बैठ बिश्राम।१७६।
तहां भयानक नारकी धार विक्रया भेष॥
बाघ सिंह अहि रूप सों दारैं देह विशेष।१७७।
केई करसों पायँ गहि, गिरसोंदेहिं गिराय॥
परैंआन दुर्भूमि पर, खंड खंड होजाय।१७८।
दुखसों कायर चित्तकर, ढूंढैं शरन सहाय॥
वे अति नर्दय घातकी, यहअति दीन घिघाय।१७९।
व्रण वेदन नीकी करैं असेकर विश्वास॥
सींचैं खारे नीर सों, जोअति उपजे त्रास।१८०।

केई जकर जँजीर सों, खैंचथंभ अतिबांध ॥
शुध कराय अघ मारवैं, नाना आयुध साध। १८१।
जिनउद्धत अभिमान सों कीने परभव पाप ॥
तपत लोह आसन बिषे, त्रास दिषावैं थाप। १८२।
ताती पुतली लोहकी, लाय लगावैं अंग ॥
प्रीतकरी जिन पुर्वभव, परकामिनि के संग। १८३।
लोचन दोषी जानिकै, लोचन लोहिं निकाल ॥
मदिरा पानी पुरुष कों, प्यावैंताँबो गाल। १८४।
जिन अंगनसों अघकिये, तेई छेदे जाहिं ॥
पल भक्षण के पापतैं, तोड़ तोड़ तन खाहिं। १८५।
केई पूरब बैरके, याद दिवावैं नाम ॥
कह दुर्बचन अनेक बिधि, करैं कोप संग्राम। १८६।
भये विक्रिया देह सों बहुबिधि आयुध जात ॥
तिनही सों अति रिसभरे, करैं परस्पर घात। १८७।
शिथिल होंय चिर युद्धतैं, दीन नारकी जाम ॥
हिंसानंदी असुर दुठ, आन भिरावैं ताम। १८८।

॥ सोरठा छंद ॥

तृतिय नरक परयंत, असुरादिक दुखदेत हैं ॥
भाषोजैन सिधन्त, असुर गमन आगे नहीं। १८९।

॥ दोहा छंद ॥

इहिविधि नरक निवासमैं, चैनएकपलनाहिं ॥
तपैं निरंतर नारकी, दुख दावानल माहिं ।१९०।
मार मार सुनिये सदा, छेत्र महा दुर्गंध ॥
वहैबाल असुहावनी, अशुध छेत्र सम्बंध।१९१॥
तीनलोक को नाज सब, जो भक्षन कर लेय॥
तौभी भूख न उपशमैं, कौन एक कण देय।१९२॥
सागरके जलसो जहां, पीवतप्यास न जाय॥
लहै न पानी बूंदभर, दहै निरंतर काय। १९३।
बाय पित्त कफ, जनितजे, रोगजात जावंत॥
तिनसबही को नरक मैं, उदै कह्यो भगवंत।१९४।
कटुतुँबी सो कटुक रस, करवत कीसी फाँस॥
जिनकी मृतक मंझार सों, अधिक देह दुर्वास।१९५।
योजन लाख प्रमाण जहां, लोह पिंडगलजाय॥
ऐसीही अति उश्नता, ऐसीशीत सुभाय।१९६।

॥ आड़िल छंद ॥

पंकप्रभा परयंत उशनता जिन कही ।

१–चौथा नरक ॥

धूमप्रभामें शीतउश्न दोनो सही ॥
छेटी सांतमी भूमि न केवल शीत है ।
ताही उपमा नाहिं महा बिपरीत है । १९७।

॥ दोहा छंद ॥

स्वान स्याल मंजारकी, पड़ी कलेवर रास ॥
मासबसा अरु रुधिर को, कादा जहां कुबास।१९८।
ठाम ठाम असुहावने सेंभल तरु वर भूर ॥
पैंने दुखदैने विकट, कंटक तलतक सूर । १९९ ।
और जहां असिपत्र बन, भीम तरोवर खेत॥
जिनके दल तरवारसे, लगत घाव करदेत । २०० ।
वैतरनी सरिता समल, लोहित लहर भयान ॥
बहैषाद शोणित भरी, मासकीच घिन घान। २०१ ।
पक्षी बायस गीधगण, लोहतुंड सों जेह ॥
मरम बिदारैं दुख करैं चूंटैं चहुँदिश देह । २०२ ।
पंचेंद्री मनको महा. जे दुखदायक जोग ॥
तेसब नरक निकेत मैं, एक पिंड अमनोग । २०३ ।
कथा अपार कलेश की, कहै कहांलो कोय ॥
कोड़ जीभसों वरनिये, तबव न पूरीहोय । २०४ ।

१–पांचवा नरक ॥

सागरबंध प्रमाणथिति,छिनछिन तिनत्रास॥
येदुख देषैं नारकी, परवश परे निरास॥
जैसी परवश बेदना, सहै जीव बहु भाय।
स्ववश सहे जो अंशभी, तौ भवजल तिरजाय।२०६।
ऐसे नरकहि नारकी, भयो भील दुठ भाव॥
सागर सत्ताईसँ की, धारी मध्यम आव।२०७।
सागर काल प्रमाण अब, वरनूँ औसर पाय॥
जिनसौंनरकनिवास की, थितिसबजानीजाय।२०८।

॥ सागर प्रमाण कथन ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पहले तीन पल्ल के भेव। एक चित्त कर सो सुनलेव।
जिनसौंसागरउपजैसही।यथारीतजिनशासनकही॥२०९॥

॥ सोरठा छंद ॥

प्रथम पल्ल व्योहार, दुतिय नाम उद्धार भण।
अर्धात्रितियविचार, अवइनको विस्तारसुन॥२१०॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पहले गोल कूप कलपये। जोजन बड़े मान थरपये॥
इतनोही करये गंभीर। धी बल ताहि भरो नरधीर॥२११॥
सात दिवस के भीतर जेह। जने भेड़ के बालक लेह॥
उत्तम भोगभूमिके जान। तिनके रोमअग्र मनआन॥२१२॥
ऐसे सुक्षम करये सोय। फेर खंड जिन को नहिं होय॥
तिनसों महाकूपवह भरो। बारम बार कूटदिढ़करो॥२१३॥
तिन रोमन की संख्या जान। पैंतालीस अंक परवान॥
तेश्री जिन शासनमें कहे। करप्रतीत जैनीसरदहे॥२१४॥

॥ अंक संख्या कथन ॥

॥ चामर छंद ॥

[२]चार[४] एक[१] तीन[३] चार[४] पांच[५] दो[२] छ[६] तीन[३] ले।

१—प्रथम एक गोल कुआं ऐसा कल्पित करो जो एक महा जोजन (जो दो हजार कोश का माना गयाहै) गहरा हो और जिस्की व्यास रेखाभी इतनी ही हो फिर उत्तम भोग भूमि के सात दिन के अंदर जने हुये भेड़ के बच्चों के अग्र भाग रूम ऐसे सुक्ष्म कल्पित करो जिस्के खण्ड न होसकैं उन रूमन की संख्या जिन शास्त्र में ४५ अंकबताईहै देखो टिप्पण चामर छंद गणिता २१५ इन रूमन को उस कुयें में ऐसा कूट कूट भरो जो और न आसकै फिर सौ सौ वर्ष में एक एक रूम निकालो जितने वर्ष विदीत होंगे सो प्रथम पल्य की संख्या है इस पल्य का काल केवल गिणती बताने के अर्थ है और कोई प्रयोजन नहीं रूमन की संख्या पर दो बिंदु देने से वर्षों की संख्या जानो॥

२—सुगमता अर्थ अंक गिणती दिखावै हैं—
४१३४५२६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९२००००००००००००००००००

सुंन्न तीनैं सुंन्न आँठ दोयें अंक सुंन्न दे ॥
तीनैं एकें साँतैं साँतैं साँतैं चारैं नौंकरो।
पांचैंएकें दोयेंएकें नौंसिमार दोधेरो ॥२१५॥

॥ दोहा छंद ॥

सौंतबीस ये अंकलिख, और अठाँरह सुंन्न।
प्रथम पल्ल के रोम की, यह संख्या परिपुन्न[1]॥२१६॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद॥

सौ सौ बरस बीत जब जाहिं। एक एक काढ़ो या माहिं॥
ऐसीविधिसबकरतेसोय। कूप उदर जब खालीहोय॥२१७।
जो कुछ लगै काल परवान। सो ब्योहार पल्ल उरआन।
प्रथमपल्लसबतैंलघुरूप। बीजभूतभाष्योजगभूप।२१८।

॥ दोहा छंद॥

संख्या कारण जिनकह्यो, और न यासों काज॥
दुतिय पल्ल विवरण सुनो, जोभाषो जिनराज।२१९।

१५ ॥ मात्रा चौपाई छंद ॥

पूरबै[2] कथित रोम सबधरो। तिंनके अंश कल्पना करो ॥

१—संपूर्ण॥ २—पहले कहेहुये रूमनसे प्रतिरूमइतने अंश कल्पनाकरो जितने असंख्य क्रोड़ वर्षके समय हों फिर इस कल्पित रूम रासिसे समय समय में एक एक निकालो जितना काललगै सो दुतिय पल्यकाल है, पैंच्चीस कोड़ गुणे हुई एक कोड़ दुतिय पल्यके रूमन की जितनी संख्या है उतनेही दीप समुद्र मध्वीपर जानो ॥

बरसअसंखकोटके जिते । समैंहोहिं आतम परिमिते ।२२०।
एक एक के तावत मान । करोभाग बिकलप मन आन ॥
याविधिठान रोमकीरास । समैंसमैं प्रतिएकनिकास ।२२१।
जितनो काल होय सबयेह । सोउद्धार पल्ल सुन लेह ॥
याकेरोमनसों परवान । दीपोदधिकी संख्या जान । २२२ ।

॥ दोहा छंद ॥

कोड़ाकोड़ पचीस के, पल्ल रोम जावन्त ॥
तितनेदीप समुद्रसब, बरने जैन सिद्धन्त । २२३ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबसुनत्रितियपल्लकीकथा । श्रीजिन शासन बरनी यथा॥
दुतियपल्लके अमितअपार । रोमअंश लीजे निर्धार ।२२४।
एक एक के भाग प्रमान । कर सौ वर्ष समय परवान ॥
इहिबिधिरासिहोयफिरएह । समैंसमैंप्रतिलीजे तेह । २२५।
ऐसे करत लगै जे काल । सोई अर्धापल्ल विशाल ॥
करमनकीतिथियासोंजान । यहउत्कृष्टकहीभगवान ।२२६।

१–दुतिय पल्यके रूम संख्या से प्रतिरूम उतने अंश कल्पना करो जितने सौवर्ष के समय होंय फिर समय २ में एक एक निकालो जोकाल लगै सो तीसरी अर्धापल्य के काल की संख्या है जो असंख्यात तीनो पल्य मैं यह अर्धापल्य वड़ी है–दश कोड़ अर्धापल्य को एक कोड़ अर्धापल्य में गुणो जो गुणलब्धि प्राप्तहो उसके कालकी वराबर एक अर्धा कहिये बड़ा सागर होता है इसही सागर से यहजीव पुन्य पापकर स्वर्ग नर्क मैं स्थित रहता है ॥

॥ दोहा छंद ॥

प्रथमपल्लसंख्यातमित,दुतिय असंख्यपरिमान॥
असंख्यातगुणतीसरी, लिखोजिनागमजान। २२७।
इन सब तीनो पल्ल मैं, अर्धापल्ल महान ॥
दश कोड़ा कोड़ी गये, अर्धासागर ठान ।२२८।
इसही अर्धा सिंधुसों, पुन्न पाप परिभाव॥
संसारीजन भोगवै, स्वर्ग नर्क की आव ।२२९।
ऐसे दीरघ काललों, नर्क सातवें थान ॥
कमठ जीव दुखभोगवे, परो कर्म बश आन। २३०।
धिकधिकविशयकषायमल, येवैरीजगमाहिं॥
येहीमोहित जीवको, अवश नरक लेजाहिं । २३१।
धर्म पदारथ धन्यजग, जापटतर कछुनाहिं ॥
दुर्गति बास वचायकै, धरैस्वर्ग शिवमाहिं । २३२।
यही जान जिन धर्मको, सेवो बुद्धि विशाल॥
मनतन बचन लगाय कै,तिहुँपन तीनोकाल । २३३।

इतिश्रीपार्श्वपुराण भाषा वज्रनाभिनाम चक्रवर्तहोकर फिर स्वर्गमें अहर्मिंद्रहोसुख बाभीलका नरकमैं दुख भोगननाम तृतीय अधिकार संपूर्णम्॥

॥ चतुर्थ अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

मारूथल संसार, बामा नंदन कल्प तरु ॥

बंछितफल दातार, सुखकामी सेवो सदा। १।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इसही जम्बूदीप मझार। भरथ खण्ड दक्षिन दिशसार॥
कौशलदेशवसैअभिराम। नगर अयोध्या उत्तमठाम। २।
आरज खण्ड माहिं परधान। मध्य भाग राजै शुभथान॥
गढ़गोपुर खाईगृह पांत। बन घन सों सोहैं बहुभांत। ३।
ऊंचे जिन मंदिर मनहरैं। कंचन कलश धुजा फरहरैं॥
बज्रबाहु भूपति तिहिंथान। बरइष्वाक बंश नभ भान। ४।
जैनधर्म पालै बड़भाग। जिनपद कमलनि मधुप सराग॥
प्रभाकरी तियताघरसती। जीतीजिन रंभा रति रती। ५।

॥ दोहा छंद ॥

यथाहंस के बंश को, चाल न सिखवै कोय॥
त्यों कुलीन नर नारिके, सहज नमन गुणहोय। ६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

वह अहमिंद्र तहां तै चयो। तिनके सुदिन पुत्र सो भयो॥

१–जिस प्रभाकरीनै रंभा कहियै पार्वती शिवकी स्त्री रतिकहियै कामदेवकी स्त्री का भाग जीत लिया॥

नामधरो आनन्द कुमार। अतुलतेज सब लक्षणसार।७।
सुभग सोम श्रीवंत महान। बलबीरज धीरज गुणथान ॥
नरनारी मन माणक चोर। देखत नयन रहैं जा ओर। ८।
जाके सुगुण शेष कह थके। और कौन वरनन करसके ॥
जोबनवन्तजनक तिसदेष। ब्याहमहोत्सव कियो विशेष।९।
परनी राज सुता बहु भाय। जिनकी छबि बरनी नहिंजाय ॥
क्रमसों कुमर पिता पद पाय। बलसे बश कीये बहुराय।१०।

॥ दोहा छंद ॥

योबन वय संपति बढ़ी, मिलो सकल सुख योग ॥
महा मंडली पद लह्यो, पूरब पुन्न नियोग। ११।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबसुन आठजातिके भूप। जिनको जिनमत कह्योसरूप ॥
कोट ग्राम को अधिपति होय। राजा नाम कहावे सोय।१२।
नवैं पांच सो राजा जाहि। अधि राजा नृप कहिये ताहि ॥
सहस राय जिस मानै आन। महाराज राजा बहुजान।१३।
दोय सहस नृप नवैं अशेश। मंडलीक वह अर्ध नरेश ॥
चार सहस जिस पूजैं पाय। सोई मंडलीक नरराय। १४।
आठ सहस भूपति को ईश। मंडलीक सो महा महीश ॥

सोलह सहस नवैं भूपाल । सोअधचक्री पुन्यविशाल । १५ ।
सहस बतीस आन जिस वहैं । ताहि सकल चक्री बुधकहैं ॥
इनमें श्री आनंद नरेश । महा मंडली पद परमेश । १६ ।

॥ सोरठा छंद ॥

आठ सहस सुख हेत, नृप नक्षत्र सेवैं सदा ।
कीरति किरण समेत, सोहै नरपति चंद्रमा ॥ १७ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिना आनंद महीश । बैठो सभा सिंहासन शीश ॥
मंत्री तहां स्वामि हित नाम । कहै विवेकी सुबचन ताम । १८ ।
स्वामी यह वसंत ऋतुराज । सब जनकरैं महोछवकाज ॥
नंदीस्वर व्रत औसर येह । करिये प्रभु पूजा जिन गेह । १९ ।
पूजा सदा पाप निर्दलै । पर्व संजोग महा फल फलै ॥
परम पुन्यको कारनआन । नहीं जगतमैं याहि समान । २० ।

॥ दोहा छंद ॥

जिनपूजा की भावना, सब दुख हरन उपाय ॥
करते जोफल संपजै, सो वरणो किमजाय । २१ ।

१—अधअर्थातअर्ध ॥ २—नंदीस्वर आठवैं दीपकानाम जिसमें ५२ चैत्यालयअकृत्रिमहै

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सुनराजा मंत्री उपदेश। नगर महोछव कियो विशेश ॥
करसनान जिन मंदिरजाय। जैन बिंब पूजे विहसाय। २२।
बहु बिधि पूजा दरब मनोग। धरे आन जिन पूजनयोग ॥
भाव भक्ति सों मंगल ठयो। राजा के मन संशयभयो।२३।
बिपुलमती मुनिवर तिंहि थान। दरशन कारण आयेजान॥
तिनै पूज नृप पूछै येह। भो मुनिंद्र मुझ मनसंदेह। २४।

॥ दोहा छंद ॥

प्रतमा धात पषान की, प्रघट अचेतन अंग।
पूजक जन को पुन्यफल, क्योंकर देय अभंग। २५।
तुम जगमें संशय तिमर, दूरकरण रवि रूप ॥
यह मुझ भिरम मिटाइये, करै बीनती भूप। २६।
तब ज्ञानी गणधर कहैं, समाधान सुन राय ॥
भवि जनको प्रतमा भगत, महा पुन्य फलदाय। २७।
भाव शुभाशुभ जीव के, उपजैं कारण पाय ॥
पुन्य पाप तिनसों बँधे, यो भाषो जिनराय। २८।
कुसुम वरणको जोग लहि, जैसे फटक पषान ॥
अरुन श्याम दुतिकों धरै, यही जीवकीवान। २९।

सो कारन है दोय विधि, अंत रंग बहि रंग ॥
तिनके ही उर आय है, जे समझै सरवंग। ३०।
बाहिज कारण जानयो, अंतरंग को हेत ॥
सोई अंतर भाव नित, कर्म बंधको देत। ३१।
जिन परिणामन पुन्यबहु, बंधै अन्यथा नाहिं ॥
तिन भावनको निमतहै, जिनप्रत्मा जगमाहिं। ३२
वीत राग मुद्रा निरख, शुध आवै भगवान ॥
वही भाव कारण महा, पुन्य बंधको जान। ३३।
रागद्वेषबरजित अमल,सुखदुख दातानाहिं ॥
दर्पन वत भगवान हैं, यह आनो उरमाहिं। ३४।
तिनको चिंतनध्यानजप, थुतिपूजादिबिधान ॥
सुफल फलै निज भावसों, हैमुक्ती सुखदान। ३५।
जैसे गुण प्रभु के कहे, ते जिन मुद्रा माहिं ॥
थिर सरूप रागादिबिन, भूषनआयुध नाहिं। ३६
यद्यपिशिलपी कृतकृतम, जिनवराविंवअचेत ॥
तदपि सही अंतर बिषे, शुभ भावनको हेत। ३७।
और एक द्रष्टांत अब, सुनअवनीपतिसोय ॥

१–जीव के परिणाम पलटने के दोकारण हैं एक अंतरंग कारण जैसे सत्ता में स्थितकर्म परिमाण जो उदयावली में आकर आत्मा को रागीद्वेषी करते हैं वहिरंग कारण यथा कठोर बचन श्रवन, स्त्रीदर्शनादि से॥

जियके उर द्रष्टांत सों, संशय रहै न कोय। ३८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

गणिका धरी चितामै जाय। बिसनी पुरुष देखपछताय ॥
जोजीवतमुभमिलतोजोग। तोमैंकरतोवंछितभोग। ३९।
स्वान कहै उरक्यों यह दही। मैं निज भक्षण करतो सही ॥
पुनितिसदेषकहैमुनिराय। क्योंनकियोतपयहतनपाय।४०।
इहिविधि देष अचेतन अंग। उपजे भावपाय परसंग ॥
तिनहीभावनकेअनुसार। लाग्योफलतिनकोतिहिंबार।४१।

॥ दोहा छंद ॥

बिसनी नर नरकहुँ गयो, लहो छुदादुख स्वान ॥
साधु सुरग पहुँचेसही, भावन को फलजान। ४२।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

योंजिनबिंब अचेतन रूप। सुखदायक तुम जानो भूप ॥
कारनसम कारज संपजै। यामैं बुधसंशय नहिं भजै।४३।

॥ दोहा छंद ॥

जैसे चिंतामणि रतन, मन बंछित दातार ॥

१—जीवके अर्थात् प्राणी के ॥

तथा अचेतन बिंब यह, बंछापूरण हार । ४४ ।
जोयांचत सुखकल्प तरु, दानी जनको देय॥
त्यों अचेत यह देत है, पूजक को सुख श्रेय ॥ ४५ ॥
मणि मंत्रादिक औषधी, हैं प्रत्यक्ष जड़ रूप ॥
विष रोगादिक को हरैं, त्यों यह अघहरभूप ॥ ४६ ॥
जड़ सरूप को पूज पद, प्रघट देखये लोय ॥
राजपत्र सिर धारयै, मुद्रा अंकित होय ॥ ४७ ॥
राजपत्र सिर धारयै, राजा को भयमान ॥
जिनवर मुद्रा पूजयै, पातक को डर जान ॥ ४८ ॥
प्रत्मा पूजन चिंतवन, दरशनआदि विधान ॥
हैं प्रमान तिहुं कालमें, तीन लोक मैं जान ॥ ४९ ॥
जे प्रत्मा पूजै नहीं, निंद्या करैं अजान ॥
तीनलोकतिहुं कालमें, तिनसम अधमनआन । ५० ।
जे प्रत्मा पूजैं सदा, भाव भक्ति विधि शुद्ध ।
तिनको जन्म सराहिये, धन तिनकी सद बुद्ध ॥ ५१ ॥
इत्यादिक उपदेश सुन, आई उर परतीत ॥
जिन प्रत्मा पूजन विषै, धरी राय दिढ़ प्रीत ॥ ५२ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तिस औसर मुनि वरनै ताम । तीन भवन बरती[1] जिन धाम ॥

1—बरतने वाले ॥

भानु विंमान विषै जिन गेह। सो पहले बरने धरनेह। ५३।
रत्न मई प्रत्मा जग मगै। कोट भानु छवि छीणी लगै ॥
निरुपमरचनाविविधविशाल।सूरयदेवल मैं तिहुंकाल। ५४।
सुन आनंदो आनंद राय। विकसत आनन अंगनमाय ॥
जब संदेह शल्य निर्वरै। तव अवश्य उर सुख विस्तरै।५५।
प्रात सांझ मंदिर चढ़ सोय। अर्घ देय रवि सन्मुख होय ॥
करजिनबिंबनकोमनध्यान।अस्तुतिकरै राग मनआन। ५६।
रबि विमाण मणि कंचन मई। निर्मापो अद्भुत छवि छई ॥
जैनभवनकरमंडितसोय। देखत जनमनअचरज होय।५७।
पूजा तहां करै नित राय। महा महोछव हर्ष बढ़ाय ॥
प्रतिदिनदेयदयाउरआन। दीन दुखितजनकोबहुदान।५८।
यह नित नेम करै भूपाल। चली नगर मैं सोई चाल ॥
सब सूरज को करैं प्रणाम। देखा देख चलो मततास।५९।
समझे नहीं मूढ़ परणाये। भानु उपासक तब सों भये ॥
जो महंत नर कारज करै। ताकी रीत जगत आचरै। ६०।
यों बहु पुन्न करै भूपाल। सुख मैं जात न जानो काल ॥
एक दिना निजसभा नरेश। निवसै मानो स्वर्ग सुरेश। ६१।
धवल केश देषो निज शीश। मन कंप्यो शोचै नरईश ॥
जाहि देष मनउत्सव घटै। कामी जीवनको उर फटै। ६२।

१–समाप ॥

सो लख शेत बाल भूपाल । भोग उदास भये ततकाल ॥
जगतरीतसबअथिरअसार। चिंतैचितमैं मोह निवार।६३।
बाल अवस्था भई वितीत। तरुणाई आई निज रीत ॥
सो अब बीती जरा पसाय। मरण दिवस यों पहुंचै आय।६४।
बालक काया कूँपल सोय। पत्र रूप जोवन मैं होय ॥
पाको पात जरा तन करै। काल बयाल चलत झरपरै।६५।
कोई गर्भ माहिं खिर जाय। कोई जन्मत छोड़ै काय ॥
कोई बाल दशा धर मरै। तरुण अवस्था तन परिहरै।६६।
मरन दिवस को नेम न कोय। यातैं कछु सुध परै न लोय।
एक नेम यहतो परिवान। जन्म धरै सो मरै निदान। ६७।
महा पुरुष उपजे बड़ भाग। सब परलोक गएतन त्याग॥
संसारी जन अपनी बार। पूरब उदै करै अनुसार। ६८।
परबतपतत नदी के न्याय। छिनहींछिन थिति बीती जाय॥
राग अंधप्रानीजगमाहिं। भोग मगन कछुसोचैनाहिं। ६९।
अंतकाल जब पहुंचै आय। कहाहोय जो तब पछिताय।
पानी पहले बंधैपाल। वही काम आवै जलकाल। ७०।
यही जान आतमहित हेत। करैं विलंब न संत सुचेत॥
आजकालजेकरत रहाहिं। ते अजान पीछे पछताहिं।७१।
रात दिवस घटमाल सुभाव। भराहिंजल जीवन कीआव॥

१—संसारी जन अपनी बार अर्थात् समय को पूरब उदय कर्म के अनुसार विदीत करै है ॥

सूर्य चांद बैलये दोय। काल रहट नित फेरै सोय। ७२।

॥ बारहभावना विवर्ण ॥

१ अथिरभावना ॥

दोहा छंद

राजा राणा छत्रपति, हाथियन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार। ७३।

॥ २ अशरण भावना ॥

दल बल देवी देवता, मात पिता परवार ॥
मरती बरयां जीव को, कुइ न राखण हार। ७४।

॥ ३ संसार भावना ॥

दामबिना निर्धन दुखी, तिश्नावश धनवान ॥
कहींन सुख संसार में, सबजग देखो छान। ७५।

॥ ४ एकत्व भावना ॥

आप अकेला अवतरै, मरै अकेला होय ॥
योंकबही इस जीवका, साथी सगा न कोय। ७६।

॥ ५ अन्यत्व भावना ॥

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपनो कोय ॥
परसंपति पर प्रगट ये, पर हैं परयन लोय । ७७ ।

॥ ६ अशुचि भावना ॥

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह ॥
भीतर यासम जगत में, और नहीं घिनगेह । ७८ ।

॥ ७ आश्रवभावना ॥

॥ सोरठा छंद ॥

मोह नींद के जोर, जग बासी घूमैं सदा ॥
कर्म चोर चहुँ ओर, सरबस लूटैं सुधनहीं । ७६ ।

॥ ८ संबर भावना ॥

सतगुरु देह जगाय, मोह नींद जब उपशमैं ॥
तब कछु बने उपाय, कर्म चोर आवत रुकै । ८० ।

॥ ६ निर्जराभावना ॥

॥ दोहा छंद ॥

ज्ञानदीप तपतेल भर, घर सोधै भ्रम छोर ॥

१–यह बात प्रगट है कि परसंपति पर हैं ॥

याविधि विन निकसैं नहीं, बैठे पूरव चोर। ८१।
पंचमहाव्रत संचरन, समति पंच परकार॥
प्रवलपंच इन्द्री विजय, धार निर्जरा सार। ८२।

॥ १० लोक भावना ॥

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान॥
तामैं जीव अनादि सों, भरमत है बिन ज्ञान। ८३।

॥ ११ धर्म भावना ॥

यांचे सुरतरु देय सुख, चिंतन चिंत्यारैन॥
बिन यांचे बिन चिंतवे, धर्म सकल सुख दैन। ८४।

॥ १२ बोधदुर्लभ भावना ॥

धनकन कंचन राजसुख, सबै सुलभ करजान॥
दुर्लभ है संसारमें, एक यथारथ ज्ञान। ८५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहिविधि भूप भावना भाय। हितउद्यम चिंत्यो मनलाय॥
सबसों मोह ममत निर्वार। उठो धीर धीरज उरधार। ८६।

१—रैन प्राकृत शब्द रत्न अर्थ में है चिंत्यारैन चिंत्यामणि रत्न.

जेठे सुतको दीनो राज। आप चले शिव साधन काज॥
सागरदत्त मुनीश्वरपास। संयमलियोतजीजगआस।८७।
घने भूप भूपति के संग। धरे महाव्रत निर्भय अंग॥
अब आनंद महामुनि धीर। बननिवास बिचरै वरवीर।८८।
दुद्धरतप बारह बिधि करै। दुविधि संग ममता परिहरै॥
तिनके नाम कहूंकुछधार। जिनशासन जिनकोबिस्तार।८९।
प्रथम महातप अनशन नाम। दूजो ऊनोदर गुणधाम॥
तीजोहैव्रत परिसंख्यान। रसपरित्याग चतुर्थम मान।९०।
पंचम भिन सयनाशन सार। काय कलेश छठो अबिकार॥
यहषटबिधिबाहजतपजान। अबअन्तरतपसुनोसुजान।९१।
पहले प्रांछित बिनेय दुतीय। बैयाव्रत तीजो गनलीय॥
चौथो अंतरंग सिज्भाय। पंचमतपब्युत्सर्ग वताय।९२।
षष्टम ध्यान हरे सब खेद। ये अन्तरतप के सब भेद॥
अबइनको संछेप सरूप। सुनोसंततज भाव बिरूप।९३।
जिनके सुनत बँधे शुभध्यान। सेवत पद लहिये निर्वान॥
तपबिन तीनकाल तिहुँलोय। कर्मनाश कबही नहिंहोय।९४।
दिनसों लेय बरष लग करै। चार प्रकार अशन परिहरै॥
रागरोग निर्दलन उपाय। सोअनशन भाष्यो जिनराय।९५।

१—धारना कर के.

२—खाद्य यथा रोटीपूरी आदि १, स्वाद्य यथा चूसने की वस्तु आम्रआदि २, लेह्य यथा चाटने की वस्तु चटनी आदि ३, पेय यथा पीने की वस्तु दूध आदि ४;

पौन अर्ध चौथाई टेक। एक ग्रास अथवा कन एक ॥
ऐसीविधि जो भोजनलेत। ऊनोदर आलस हरलेत।९६।
जैसी प्रथम प्रतिज्ञा करै। ताही विधि भोजन आदरै ॥
सोकहियेव्रत परिसंख्यान।आशाब्याधि विनाशनजान।९७।
लवनादिक रस छार उपाध। नीरसभोजन भुंजै साध ॥
रसपरित्याग कहावैएम। इन्द्रीमद नाशन यह नेम।९८।
सूनगेह गिरगुफा मसान। नारि नपुंसक बरजित थान ॥
बसैभिन्न शयनासन सोय। यासों सिद्धिध्यानकीहोय।९९।
ग्रीषम काल बसै गिरि सीस। पावस में तरुवर तलदीस॥
शीतसमै तटनीतट रहै। काय कलेश कहावै यहै।१००।

॥ दोहा छंद ॥

यातप के आचरन सों, सहन शील मुनि होय ॥
अवअन्तर तपभेद छह, कहूं जिनागमजोय।१०१।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

जो प्रमाद वश लागै दोष। सोधै ताहि छोड़ छल रोष ॥
आचारय बानीअनुसार।यहीप्रथमप्राशिचततपसार।१०२।
जे[1] गुण जेठे साधु महंत। दरशन ज्ञानी चारित वंत।
तिनकी विनै करै मन लाय। विनैनामतपसो सुखदाय।१०३।

१—जे साधु गुणों में जेठे अर्थात् बड़े हैं ॥

रोगादिकपीड़ित अविलोय। बालविरध मुनिवर जोहोय॥
सेव करै निज संयमराख। सो वैयाव्रत आगमसाख।१०४।
शक्ति समान सकल गुण ठाठ। करै साधु परमागमपाठ॥
परमोतम तपसोसिज्झाय।जासोंसब संशय मिटजाय।१०५।
निज शरीर ममता परिहरै। काउसर्ग मुद्रा दिढ़ धरै॥
अंतर बाहर परिग्रह छार। सोई तपव्युत्सर्ग उदार।१०६।
आरत रुद्र निवारै सोय। धर्म शुकुल ध्यावै थिरहोय॥
जहांसकलचिंतामिटजाहि।वहीध्यानतपजिनमतमाहि।१०७

॥ दोहा छंद ॥

यह बारह विधि तप विषम, तपै महा मुनिधीर।
सहै परीषह बीस[२२]दो, ते अब वरणूंवीर।१०८।

॥ समुच्चय २२ परीषहनाम ॥

॥ छप्पै छंद ॥

छुधा[१] तृषा[२] हिम[३] उश्न[४] डंस मंसक[५] दुख भारी।
निरावरनतन[६] अरति[७] वेद उप जावन नारी[८]॥
चरया[९] आसन[१०] शयन[११] दुष्ट वायक[१२] वध बंधन[१३]।
यांचै नहीं[१४] अलाभ[१५] रोग[१६] तिण[१७] फरस निबंधन॥

मल जनित मान सैन मान वस, प्रज्ञा और अज्ञानकर॥
दरशन मलीन बाईससब, साधुपरीषहजाननर।१०९।

॥ दोहा छंद ॥

सूत्र पाठ अनुसार ये, कहे परीषह नाम ॥
इनके दुखजे मुनिसहैं, तिनप्रति सदा प्रणाम। ११०।

॥ भिन्न भिन्न २२ परीषह विवर्ण ॥

॥ पोमावती छंद ॥

॥ १ क्षुधा परीषह ॥

अनशन ऊनोदर तप पोषत, पाषमासादिन वीतगये हैं॥
जोग नबनै योग भिक्षा विधि, सूक अंगसब शिथलभये हैं॥
तबबहु दुसह भूखकी बेदन, सहत साधुनहिं नेक नये हैं॥
तिनकेचरणकमलप्रातिदिनादिन,हाथजोरहमसीसठयेहैं१११

॥ २ तृषापरीषह ॥

पराधीन मुनिवरकी भिक्षा , परघर लेहिं कहैं कछुनाहीं॥
प्रकृति विरोध पारना भुंजत , बढ़त प्यासकी त्रास तहांही॥

ग्रीषमकाल पित्त अति कोपै, लोचन दोय फिरै जबजाहीं ॥
नीर न चहैं सहैं ऐसे मुनि, जैवंते बरतो जगमाहीं ।११२।

॥ ३ शीतपरीषह ॥

शीतकाल सबहीजन कांपैं, खड़ेजहां बन विरक्ष डहे हैं ॥
झंझाबायु बहैं वरषाऋतु, वरषत बादल झूमरहे हैं ॥
तहां धीर तटनी तट चौबट, ताल पालपै कर्मदहे हैं ॥
सहैं सँभाल शीत की बाधा, तेमुनि तारन तरन कहे हैं।११३।

॥ ४ उष्णपरीषह ॥

भूखप्यास पीड़ै उर अंतर, प्रजलै आंत देह सब दागै ॥
अग्निसरूप धूप ग्रीषम की, ताती बाल झालसी लागै ॥
तपै पहार ताप तन उपजै, कोपै पित्त दाह ज्वरजागै ॥
इत्यादिकग्रीषमकीबाधा, सहतसाधुधीरजनहिंत्यागै।११४।

॥ ५ डंसमंसकपरीषह ॥

डंस मंस माखी तन काटैं, पीड़ैं बनपंछी बहुतेरे ॥
डसैं ब्याल विषयाले बीछू, लगैं खजूरे आन घनेरे ॥
सिंह स्याल सुंडाल सतावैं, रीछरोझ दुख देहिं बड़ेरे ॥
ऐसे कष्टसहैं समभावन, ते मुनिराज हरो अघ मेरे।११५।

॥ ६ नग्नपरीषह ॥

अंतर विषय बासना बरतै, बाहर लोकलाज भयभारी ॥
तातैं परम दिगंबर मुद्रा, धरनहिं सकैं दीन संसारी ॥
ऐसी दुद्धर नगन परीषह, जीतैं साधु शील ब्रत धारी ॥
निर्विकारबालकवतनिर्भय, तिनके पायन ढोकहमारी।११६।

॥ ७ अरतिपरीषह ॥

देश कालको कारन लहिकै, होत अचैन अनेक प्रकारै ॥
तबतहांखिन्नहोहिजगवासी, कलमलायथिरतापदछारै ॥
ऐसी अरति परीषह उपजत, तहां धीर धीरज उरधारै ॥
ऐसे साधनको उर अंतर, बसो निरंतर नाम हमारै।११७।

॥ ८ स्त्री परीषह ॥

जेप्रधान केहरि को पकरैं, पन्नग पकर पांवसों चांपै ॥
जिनकी तनक देषभौं बांकी, कोटक सूरदीनता जापै ॥
ऐसेपुरुष पहार उड़ावन, प्रलय पवन तिय वेदपयापै ॥
धन्यधन्यतेसाधुसाहसी, मनसुमेरुजिनकोनहिंकांपै।११८।

॥ ६ चर्यापरीषह ॥

चारहाथ परवान निरखपथ, चलत दिष्टइतउत नहिंतानैं॥

कोमलपांय कठिन धरती पर, धरतधीर बाधा नाहिं मानै॥
नाग तुरंगपालकी चढ़ते, ते सवाद उर याद न आनै॥
यों मुनिराज भरैं चर्यादुख, तब दिढ कर्म कुलाचल भानै।११९।

॥ १० आसनपरीषह ॥

गुफा मसान शैल तरु कोटर, निवसै जहां शुद्धि भू हेरै॥
परिमित कालरहैं निश्चलतन, वारबार आसन नाहिं फेरै॥
मानुषदेव अचेतन पशुकृत, बैठे बिपत आनजब घेरै॥
ठौर न तजै भजै थिरता पद, ते गुरु सदा बसो उरमेरै।१२०।

॥ ११ शयन परीषह ॥

जेमहान सोनेके महलन, सुंदरसेज सोय सुखजोवैं॥
तेअब अचलअंग एकासन, कोमल कठिन भूमिपरसोवैं॥
पाहन खंड कठोर कांकरी, गड़त कोर कायर नहिं होवैं॥
ऐसी शयन परीषह जीतत, ते मुनि कर्म कालमा धोवैं।१२१।

॥ १२ आक्रोश परीषह ॥

जगत जीव यावंत चराचर, सबके हित सबके सुखदानी॥
तिनै देख दुर्वचन कहैं दुठ, पाखंडी ठग यह अभिमानी॥
मारो याहि पकर पापीको, तपसी भेष चोर है छानी॥

ऐसेवचन बाँणकीवर्षा। छिमाढाल ओटैं मुनिज्ञानी।१२२।

॥ १३ बधबंधनपरीषह ।,

निर्पराध निर्वैर महामुनि । तिनको दुष्टलोग मिल मारैं ॥
केई खैंच थंभ सो बाँधत । केई पावक मैं परजारैं ॥
तहाँ कोप नाहिं कराहिं कदाचित। पूरब कर्म विपाक विचारैं॥
समरथहोय सहैंबधबंधन। ते गुरुसदा सहायहमारैं। १२३।

॥ १४ याँचनापरीषह ॥

घोरवीर तपकरत तपोधन[1], भयो छीण सूकी गल वाहीं ॥
अस्थिचामअवशेषरहोतन, नसाजाल झलकोजिसमाहीं ॥
औषधि अशन पान इत्यादिक, प्रानजाय परयांचतनाहीं॥
दुद्धर अयाचीकव्रतधारैं, कराहिंनमलिनधरमपरछाहीं १२४

॥ १५ अलाभपरीषह ॥

एकबार भोजन की बरयां, मौनसाध बसती मैं आवैं ॥
जो नवनै योग भिक्षाविधि, तौ महंत मन खेद न लावैं ॥
ऐसेभ्रमत बहुत दिन वीतैं, तव तप विरद भावना भावैं ॥
योंअलाभ की परम परीषह, सहैंसाधु सोई शिवपावैं।१२५।

१—तप है धन जिसके।

॥ १६ रोगपरीषह ॥

बायपित्त कफशोणित चारों, येजब घटैं बढ़ैं तन माहैं॥
रोग सँयोग सोग तन उपजत, जगत जीव कायर होजाहैं॥
ऐसींव्याधि वेदना दारुन, सहैं शूर उपचार न चाहैं॥
आत्मलीन देहसों बिरकत, जैनयती निजनेम निबाहैं।१२६।

॥ १७ तृणस्पर्शपरीषह ॥

सूकेतृण अरु तिच्रणकांटे, कठिन कांकरी पायविदारैं॥
रज उड़ आय परै लोचनमैं, तीरफांस तनपीर विथारैं॥
तापर पर सहाय नहिं बांछित, अपने करसों काढ़ न डारैं॥
योंतृण परस परीषह विजई, तेगुरु भवभव शरणहमारैं॥

॥ १८ मलपरीषह ॥

यावजीव जलन्होन तजो जिन, नग्नरूप बनथान खरेहैं॥
चलैं पसेवधूपकी बरयाँ, उड़त धूलसब अंगभरेहैं
मलिनदेहको देषमहामुनि, मलिन भावडर नाँहिकरेहैं॥
योंमलजनितपरीषहजीतैं, तिनैहाथहम सीसधरेहैं।१२८।

१—अर्थात् यावत्।

॥ १९ सत्कारपरीषह ॥

जेमहान विद्यानिधिविजई, चिरतपसी गुण अतुलभरेहैं॥
तिनकीविनयवचनसों अथवा, उठप्रणाम जननाहिंकरेहैं॥
तौमुनितहाँ खेद नाहिं मानैं, उर मलीनता भाव हरेहैं ॥
ऐसेपरमसाधुके अहनिशि, हाथजोरहम पांयपरेहैं ।१२९।

॥ २० प्रज्ञापरीषह ॥

तर्क छंद व्याकर्ण कलानिधि, आगम अलंकार पढ़जानैं॥
जाकी सुमतिदेख परवादी, विलखत्त होय लाजउरआनैं॥
जैसेनाद सुनत केहरकी, वन गयंद भागत भयमानैं ॥
ऐसी महाबुद्धिकेभाजन, परमुनीश मदरंचन ठानैं।१३०।

॥ २१ अज्ञानपरीषह ॥

सावधान बरतैं निशवासर, संयम शूर परम वैरागी ॥
पालत गुप्तिगए दीरघ दिन, सकल संगममता परत्यागी॥
अवधिज्ञानअथवामनपर्य्यै, केवलकिरणअभौंनहिंजागी॥
योंविकलपनाहिंकराहिंतपोधन,सोअज्ञानविजईवड़भागी।१३१

॥ २२ दर्शनपरीषह ॥

मैं चिरकाल घोरतप कीने, अजोंरिद्ध अतिशयनहिंजागे॥

तपबलसिद्धहोंहिं सबसुनिये, सोकुछबात झूठसी लागे ॥
योंकदापि चितमें नाहिंचिंतत, समकितशुद्धशांतरसपागे ॥
सोईसाधु अदर्शन बिजई, ताके दर्शनसोंअघभागे।१३२।

परीषह उदैविवर्ण

॥ घनाच्तरी छंद ॥

ज्ञानावरणीसोंदोय, प्रज्ञा औ अज्ञानहोय।
एक महा मोह तैं, अदर्शन बखानये ॥
अंतराय कर्मसेती, उपजे अलाभ दुख।
सप्त चारित्र मोहनी, केबल जानये ॥
नगन निषिद्या नारी, मान सन्मान गारी।
याचना अरति सब, ग्यारे ठीक ठानये ॥
एकादश बाकीरही, वेदनी उदोत कही।
बाइस परीषा उदै, ऐसे उर आनये।१३३।

॥ आड़िल छंद ॥

एकबार इनमाहिं, एक मुनि के कही।
सब उनीस उतकृष्ट, उदै आवैं सही ॥

आसन शैन विहार, दोय इनमाहिं की।
शीत उश्नमैं एक, तीनये नाहिं की। १३४।

॥ दोहा छंद ॥

अब दशलक्षण धर्मके, कहूँ मूल दश अंग।
जे नित श्री आनंद मुनि, पालत हैं सरवंग।१३५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बिनादोष दुर्जन दुखदेय। समरथ होय सकल सहलेय॥
क्रोधकषाय न उपजे जहां। उत्तम छिमा कहावै तहां।१३६।
आठ महामद पाय अनूप। निर्भिमान बरतै मृदुरूप॥
मानकषाय जहां नहिं होय। मार्दव नाम धर्म है सोय।१३७
जो मनचिंतै सोमुख कहै। करै कायसौं कारज वहै॥
माया चारन डर पाइये। आर्जव धर्म यही गाइये।१३८।
बोलै बचन स्वपर हितकार। सत्य सुरूप सुधा उनहार॥
मिथ्या बचन कहै नाहिं भूल। सोई सत्यधर्म तरुमूल।१३९।
पर कामिन पर दरब मझार। जो विरक्त बरतै छल छार॥
अंतर शुद्धहोय सरबंग। सोई शौच धर्म को अंग।१४०।

१–निरभिमान॥

मन समेत ये इन्द्री पंच । इनको शिथल करै नहिं[1] रंच ॥
त्रस थावर की रक्षा जोय । संयम धर्म बखानो सोय ।१४१।
ख्याति लाभ पूजा सब छंड । पंचकरण को दीजै दंड ॥
सोतपधर्मकहोजगसार । अनशनादिबारहपरकार । १४२।
संयमधारी व्रति परधान । दीजैचहुँ विधि उत्तम दान ॥
तथादुष्टविकलप[2]परिहार । त्यागधर्मबहुसुख दातार ।१४३।
बाहिजपरिग्रह को परित्याग । अंतर ममता रहै न लाग ॥
आकिंचनयहधर्ममहान।शिवपद दायक निश्चैजान ।१४४।
बड़ी नारि जननी सम जान । लघु पुत्री सम बहिनबखान ॥
तज विकार मन बरते जेह । ब्रह्मचर्य परिपूरण येह ।१४५।

॥ दोहा छंद ॥

सोलह कारण भावना, भावैं मुनि आनंद ।
तिनकोनाम सरूप कुछ, लिखूं सकलसुख कंद।१४६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आठ[3] दोष मद आठ मलीन । छै अनाय तन सठता तीन ॥

१–नहिं रंच—सर्व अर्थात् बिलकुल या यों कहो इन्द्रियों को ऐसा शिथल करै जो फिर राचै नहीं ॥ २–दुष्ट विकलप—खोटा विचार, भावार्थ राग द्वेष ॥
३—सम्यक्त के सर्व २५ दोष यह हैं, प्रथम आठ दोष–शांकित–जिन वचन में शंका करना १ कांक्षित–संसार के सुख की इच्छा करना२विचिकित्सा–मुनि जनों से ग्लानी करना ३ मूढ़ता–तत्व कुतत्व की पहिचान न करना ४ अनुपगुहणता–पराये औगुण अपने गुण प्रगट करना ५ अप्रभावना–अपने धर्म की उमंग

येपच्चीस मल वरजित होय । दर्शन शुद्धिकहावै सोय।१४७।
रत्नात्रय धारी मुनिराय । दर्शन ज्ञान चरित समुदाय ॥
इनकी विनयविषैपरवीन।दुतियभावनासोअमलीन।१४८।
शीलभार धारै समचेत । सहस अठारह अंग समेत ॥
अतीचार नहिंलागे जहां। तृतियभावना कहिये तहां । १४९।
आगमकथित अर्थ अवधार। यथाशक्तिनिजवुधि अनुसार॥
करैनिरंतरज्ञान अभ्यास।तुरवैभावना कहिये तास । १५० ।

॥ दोहा छंद ॥

धर्म धर्म के फलबिषै , बरतै प्रीत विशेष ।
यही भावना पंचमी , लिखी जिनागम देष । १५१ ।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

औषधि अभय ज्ञान आहार । महादान यह चार प्रकार ॥
शक्तिसमान सदानिर्वहै । छठीभावना धारक वहै । १५२ ।
अनशन आदि मुक्ति दातार । उत्तमतप बारह परकार ॥

न करना ६ अस्तुस्थि करण-आप वा परको धर्म से डिगती समय स्थिर न करना ७ अवात्सन्य-धर्मी पुरुषों से प्रीति न करना ८ द्वितीय आठमद-कुलका मद १ बड़ी जातिका मद २ रूपका मद ३ विद्या का मद ४ धनका मद ५ बलका मद ६ तपका मद ७ प्रभुताका मद ८ छै अनायतन-कुगुरु १ कुदेव २ कुधर्म ३ कुगुरु सेवक ४ कुदेव सेवक ५ कुधर्म सेवक ६ इनकी प्रशंसा करना, तीन शठता अर्थात् मूढ़ता-जिनदेव १ जिन मुनि २ जिन शास्त्र ३ इनके विपरीतों की मानता करनी ॥

बलअनुसार करैजोकोय। सोसातमी भावनाहोय। १५३।
यतीबर्ग को कारण पाय। विघ्न होत जो करै सहाय ॥
साधुसमाधि कहावैसोय। यहीभवना अष्टम होय । १५४।
[1]दशविधि साधु जिनागम कहे । पथपीड़तरोगादिक गहे ॥
तिनकी जो सेवा सत्कार। यहीभावना नौमीसार । १५५।
[2]परमपूज आतम अर्हंत । अतुल अनन्त[3] चतुष्टय वन्त ॥
तिनकीथुतिनतिपूजाभाव। दशमभावनाभवजलनाव। १५६
जिनवर कथित अर्थ अवधार । रचना करै अनेक प्रकार ॥
आचारजकी भक्तिविधान। एकादशम भावनाजान। १५७।
बिद्यादायक विद्यालीन । गुणगरिष्ट पाठक परवीन ॥
तिनकेचरण सदाचितरहे। बहुश्रुतिभक्ति बारमीयहै। १५८।
भगवत भाषत अर्थअनूप। गणधर ग्रंथित ग्रंथ सरूप ॥
तहांभक्तिबरतै अमलान। प्रबचनभक्ति तेरमीजान। १५९।
[4]खटआवश्यक क्रिया विधान । तिनकी कबही करै न हान ॥
सावधानवरतौथिरचित्त। सोचौदहमी परमपवित्त । १६०।
कर जप तप पूजा व्रत भाव। प्रघट करै जिनधर्म प्रभाव ॥
सोई मारग पर भावना। यहै पंच दशमी भावना। १६१ ।

१—आचार्य्य १ उपाध्याय २ तपस्वी ३ सैक्ष ४ गलाण ५ गण ६ कुल ७ संघ ८ साधु ९ मनोग १० ॥ २—परम पूज हैं आत्मा जिनकी ऐसे अर्हंत ॥
३—अनंत ज्ञान १ अनंत दर्शन २ अनंत सुख ३ अनंत वीर्य ४ ॥
४—समता धारण १स्तुतिउच्चारण २जिन देववंदना ३शास्त्र स्वाध्याय ४ प्रतिक्रमण-पिछले कियेहुये दोषोंकादंडलेना ५ अहमिन्द्र तनधारण की इच्छानकरना ६,

चार प्रकार[1] संघ सौं प्रीत। राखै गाय वच्छ की रीत ॥
यहीसोलमीसबसुखदाय। प्रबचनवात्सल्यअभिधाय।१६२

॥ दोहा छंद ॥

सोलह कारन भावना, परम पुन्य को खेत ॥
भिन्न भिन्न अरु सोलहों, तिर्थंकर पद[4] हेत।१६३।
बंध प्रकृति जिनमत विषे, कही एकसौ[2] बीस ॥
सौसैंतरह मिथ्यात मैं, बांधत है निश दीस।१६४।
तिर्थंकर आहार[3] दुक, तीन प्रकृति ये जान ॥
इनको बंध मिथ्यात मैं, कहो नहीं भगवान।१६५।
तातैं तिर्थंकर प्रकृति, तीनों समकित माहिं ॥
सोलह कारण सौं बँधै, सभको निश्चै नाहिं।१६६।

॥ सोरठा छंद ॥

पूजपाद मुनिराय, श्री सर्बारथ सिद्ध मैं ॥
कह्योकथनइस न्याय, देखि लीजियो सुबुधजन।१६७।

१—मुनि १ आर्जिका २ श्रावक ३ श्राविका ॥
२—अर्थात् एक सौसैंतरह. ३—आहारदुक—आहारक १आहारक मिश्र २ देंपोसूत्र जी की टीका, गोमठसारजी काया मारगणा ४—तिर्थंकर पदकी प्रकृति का बंध यह निश्चय नहीं है कि सोलहू कारण भावना के समूह सेही हो भिन्न भिन्न कारण भावना से भी होसकता है

॥ कुसुमलता छंद ॥

सोलह कारन ये भव तारन, सुमरत पावन होय हियो ॥
भावैंश्री आनंद महामुनि, तिर्थंकर पद बंध कियो। १६८।
काय कषाय करी कृष अतिही, सत संयम गुण पोढ़ किये॥
तपबल नानारिद्ध उपन्नी, राग विरोध निवारदिये।१६९।
जिसबन योगधरैं योगेश्वर, तिस बन की सब विपत टलैं॥
पानीभरहिं सरोवर सूके, सबऋतु के फलफूल फलैं।१७०।
सिंहादिक जे जात विरोधी, ते सब बैरी बैर तजैं॥
मोर भुयंगम मूश मजारी, आपस में मिल प्रीतभजैं।१७१।
सोहैं साधु समता रथ बैठे, परमारथ पथ गमन करैं॥
शिवपुर पहुँचन की उरबंछा, औरनकुछ चितचाहधरैं।१७२।
देह विरक्त ममत्त बिना मुनि, सबसों मैत्री भाव धरैं॥
आत्मलीनअदीनअनाकुल,गुणवरणतनाहिंपारलहैं।१७३।
एक दिना ते वीर बनांतर, ठाड़े मुनि वैराग भरे॥
पौनपरीषह सों नाहिं कांपै, मेरुशिखर ज्यों अचलखरे।१७४।
सो मर नरक कमठ चर पापी, नाना भांति विपत्त भरी॥
तिसही कानन में विकटानन, पंचानन की देह धरी।१७५।
देष दिगंबर केहरि कोपो, पुर्ब भवांतर वैर दहो॥

१—पोढ़ अर्थात् द्रढ़ किये

धायो दुष्ट दहाड़त तिन्नण, आन अचानक कंठगहो।१७६।
तीषे नखन विदारै काया, हाथ कठोरन खण्ड करै ॥
बांकी दाढ़नसौं तनवेधै, वदन भयानक ग्रास भरै।१७७।
यों पशुकृत परचंड परीषह, सम भावन सो साधु सही ॥
क्रोधविरोधहियेनहिंआन्यो,परम छिमाउरमांभवही।१७८।
धन धन श्री आनंद मुनीश्वर, धन यह धीरज भाव भजे ॥
ऐसे घोर उपद्रव में जिन, योग युगत सों प्राणतजे।१७९।
अंत समय परयंत तपोधन, शुभ भावन सों नाहिंचये ॥
आनत नाम स्वर्गमें स्वामी,सुरगण पूजंत इन्द्र भये।१८०।

॥ दोहा छंद ॥

स्वर्गलोक वरणन लिखूं, यथा शक्ति सुखरीत ॥
धर्म धर्म के फल विषै, ज्यों मन उपजे प्रीत।१८१।

॥ स्वर्ग वर्णन ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

चंद्र कांति मूँगा मणि मई। नाना वरण भूमि वरणई ॥
रात दिवस को भेद न जहां। रत्न उद्योत निरंतरतहां।१८२।

मणि कंगुरे कंचन प्राकार । औंड़ी परिखा ऊँचे द्वार ॥
तोरण तुंग रत्न ग्रह लसैं । ऐसे स्वर्ग लोक पुर बसैं ।१८३।
चंपक पारियात मंदार । फूलन फैलरही महकार ॥
चैत बिरछ तैं बढ़ो सुहाग । ऐसे स्वर्ग रवाने बाग । १८४ ।
विपुल बापिका राजें खरी । निर्मल नीर सुधामय भरी ॥
कंचनकमलछईछबिवान । माणिकखण्डखचितसोपान १८५
काम धेनु सोहैं सब गाय । कल्पवृक्ष सबही तरुराय ॥
रत्नजातिचिंत्यामणिसबै । उपमा कौन स्वर्ग कोफबै ।१८६।
गान करैं कहिं सुर सुंदरी । बन बीथिन बैठी रस भरी ॥
कहीं देवगण बनिता संग । लीला बन विचरैं मनरंग ।१८७।
मंद सुगंध बहै नित वाय । पहुप रेण रंजित सुख दाय ॥
आंधी मेह न कबहीं होय । ताप तुसार न व्यापै कोय ।१८८।
ऋतुकी रीति फिरै नाहिं कदा । सोम काल सुखदायक सदा ॥
छत्र भंग चोरी उतपात । सुपने नहीं उपद्रवजात । १८९ ।
ईतिभीत भूचाल न होय । बैरी दुष्ट न दीषै कोय ॥

१—ईति—उपद्रव जो सात हैं, यथा बहुत वर्षा होना १ नहीं वर्षा होना २ टिड्डी दलआना ३ बहुत जंगली चूहों का पैदा होना ४ बहुत शुक आदि पक्षियों का उत्पन्न होना ५ स्वदेशी राजा की चढ़ाई दूसरे राजापर ६ पर राजा की चढ़ाई अपने राजापर ७ ॥ भीत अर्थात् भय जो सात हैं यथा इस भवका भय १ परभव का भय २ मरने का भय ३ रोगकष्ट आदिका भय ४ नहीं रक्षा होने का भय ५ अगुप्त अर्थात् प्रत्यक्ष होनेका भय ६ अकस्मात् चानचककी आफतकाभय ७॥

रोगी दोखी दुखिया दीन। विरध बैस गुण संपतिहीन। १९०।
वढ़ती अंग विकलता कहीं। ये सब स्वर्ग लोकमें नहीं ॥
सहजसोमसुंदरसरवंग। सबआभरणअलंकितअंग। १९१
लक्षण लक्षित सुरभि शरीर। रिद्ध सिद्ध मंदिर मनधीर ॥
कामसुरूपीआनंद कंद। कामिन नेत्र कमलनीचंद। १९२।
वदन प्रसन्न प्रीत रसभरे। विनय बुद्धि विद्या आगरे ॥
यों बहु गुण मंडित स्वैमेव। ऐसे स्वर्ग निवासी देव। १९३।

॥ स्वर्ग स्त्री कथन ॥

॥ दोहा छंद ॥

ललितबचन लीलावती, शुभलक्षणसुकमाल ॥
सहज सुगंध सुहावनी, यथा मालती माल। १९४।
शील रूपलावण्य निधि, हाव भाव रस लीन ॥
सीमा शुभगसिंगारकी, सकल कलापरवीन। १९५।
निरत गीत संगीत सुर, सब रस रीत मझार ॥
कोविदा होहिं स्वभावतैं, स्वर्ग लोक की नार। १९६।
पंच इन्द्री मनको महा, जे जग में सुख हेत ॥

१—जितनी वस्तु इस जीवको संसार में सुख की हेतु हैं सो सर्व स्वर्ग लोक का चिन्ह मानो ॥

तिन सवहीं को जानयो, स्वर्ग लोक संकेत ।१९७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इत्यादिक वहु संपति थान। देवलोक महिमा असमान॥
आनतवर बिमान है जहां। धरोजन्म सुरपति नेतहां। १९८।

॥ दोहा छंद ॥

उपजो संपुट गर्भ तैं, तेज पुंज अति चंड ॥
मानो जलधर पटल तैं, प्रघटो दामिनि दंड। १९९।
एक महूरत में तहां, संपूरण तनधार ॥
किधौं रत्न की सेज तज, सोवत उठो कुमार। २००।
मणि किरीट माथे दिपै, आनन अधिक सरूप।
कानन कुंडल जग मगै, पानन कटक अनूप। २०१।
भुज भूषन भूषत भुजा, हिये हार छवि देत॥
अंग अंग इत्यादि वहु, सव आभरण समेत। २०२।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

शनै शनै देषै दिश सही। लोचन कोर कान लगरही॥
विसमैंवंत होय मन ताम। कहैं कौनआयो किसधाम।२०३।
अहो कौन यह उत्तम देश। सकल संपदा थान विशेश॥

कंचन के मंदिर मणिजरे । दिपै दिव्य अपछराभरे।२०४।
अति उतंग अतिही दुति धरै। मध्य सभा मंडफ मनहरै ॥
सिंहासनअद्भुतइहिठाम । मानोमेरुशिखरअभिराम।२०५।
अनुपम नाटक देषन योग । श्रवणसुखद ये गीतमनोग ॥
ये लावण्यवती वरनार। रूप जलधि वेलाउनहार।२०६।
येउतंग हाथी मद भरे। तेज तुरंगन के गण खरे ॥
कंचनरथपायक दलजेह । मोप्रतिसिरनावैसवयेह ।२०७।
सवआनंद भरे मुझ देष । सव विनीत सवसुंदर भेष ॥
जैजैकारकरैं विहसाय । कारनकछु जानोनाहिंजाय ।२०८।

॥ दोहाछंद ॥

इन्द्रजाल अथवा सुपन , कै माया भ्रमकोय ।
यों सुरेश सोचै हिये , पै निरनै नाहिंहोय ॥२०९॥

॥ १५मात्राचौपाईछंद ॥

तवतिस थानक देव प्रधान । मनकीवात अवधिसों जान॥
योगवचनवोलेसिरनाय।संशयहरनश्रवनसुखदाय।२१०।
हम विनती सुनियेसुरराज । जीवनजन्मसफल सवआज॥
अवसनाथ स्वामी हमभये । जन्मजोगतैंपावन थये।२११।
सूर्यउदय कमलनी वाग । विकसै यथा जग्यो सिरभाग॥

नंदवर्ध हमदेहिंअशीश। चिरयहराजकरोसुरईश ।२१२ ।
अहो नाथ यह उत्तम ठाम। स्वर्ग तेरमो आनत नाम ॥
जगतसारलक्ष्मीकोयेह। निरुपमभोगनिरंतरगेह ।२१३ ।
तुम इहि थान इन्द्र अवतरे। पुर्व जन्म दुद्धर तप धरे ॥
ये सब सुर सेवक तुमतने। ये परिवार लोक हैं घने।२१४।
ये मनोग वनिता मंडली। तुम आदेश चहैं मनरली ॥
ये पटदेवी लावन खान। सब देवी इन मानैं आन।२१५।
ये बिमान पुर महल उतंग। चमर छत्र सेना सप्तंग ॥
धुजासिंहासनआदिमनोग।सकलसंपदायहतुमजोग२१६
ऐसे बचन अनंतर तबै। जाने इन्द्र अवधि बल सबै ॥
मैं पूरब कीनो तप घोर। दंडे कर्म धर्म धन चोर ।२१७।
जीव जात को निर्भयदान। दीनो आप बराबर जान ॥
सबउपसर्ग सहे धरधीर। जीतोमहाराग रिपुवीर ।२१८।
काम विषम वैरीबश कियो। अरु कषाय बन कूँचा दियो ॥
जिनवरआनअखंडितपोष। चारितचिरपालोनिर्दोष।२१९।
इहिविधि सेयो धर्म महान। तिस प्रभाव दीषै यह थान ॥
दुर्गतिपात निवारणकरो। तिनमुझ इन्द्रलोकलेधरो।२२०।
सो अब सुलभ नहीं इस देह। भोग जोग है थानक येह ॥
रागआगदुखदायकसदा। चारितजलविनबुझैनकदा।२२१

१—मनलगाकर २—सेना सप्तंगकी व्याख्या देखो छंद अंक१३षष्ठम अधिकार।

सोकारण सुरगति में नाहिं । व्रतको उदै न या पद माहिं ॥
यहिसम्यकदर्शनअधिकार । शंकादिकमलवरजितसार २२२
कै जिनवर की भक्ति सहाय । और न दीषै धर्म उपाय ॥
यहविचारजिन पूजनहेत । उठोइन्द्र परिवार समेत । २२३ ।
अमृत बापिका मैं करन्हवन । गयोजहां मणिमयजिनभवन ॥
रत्नविंबवंदे विहसाय । भावभगत सों सीस नवाय । २२४ ।
पूजाकरी दरवधर आठ । पुलकित अंगपढ़ो थुति पाठ ॥
चैतविरच्छजिन प्रत्मा जहां । महामहोछव कीनो तहां । २२५ ।
यों वहु पुन्न उपायो सही । फेर आय निज सम्पति गही ॥
दिव्यभोगभुंजेबड़ भाग । लोकोतमजाहिं सहजसुहाग । २२६ ।
शोभनरूप [1]प्रथम संठान । [2]वैसुवैक्रियक सुलच्छन वान ॥
कोमलसुरभिसचिक्कनदेह । सातधात वराजितगुणगेह २२७
पलकपात लोचन में नहीं । मलपसेव नख केशन कहीं ॥
जराकलेश न चिंत्या सोग । नाहींअलप मृत्युभयरोग । २२८ ।
इत्यादिक दुखयोग अनेक । तिनमें नहीं अमर के एक ॥
[3]आठरिद्धिअणिमादिपसथ । तिसवलसकलकाजसमरथ २२९
स्वर्ग लोक के सुख की कथा । कहै कहांलो बुध वल यथा ॥

१—प्रथम संठान का नाम—सम चतुर संस्थान है—जो ऊपर नीचे समान विभाग रूप शरीर के अंग उपांग में आकप होय सो सुंदर मर्याद रूप अंग होंय इसी का नाम चतुर संस्थान है ॥ २—देपो वाण्या आठ रिद्धि छंद अंक २२९ चतुर्थ अधिकार ॥ ३—अणिम । १ महिमा २ लघिमा ३ गरिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशत्व ७ वशित्व ८ ॥

बैठमनोगतिबिमलाबिमान।बिचरैनभपथ बंछितथान।२३०।
कबही मेरु जिनालयगमै। कबही आन कुलाचलरमै॥
दीप समुद्र असंखअपार। करै सुरेन्द्र सुछंद बिहार। २३१।
वर्ष वर्ष मैं हर्ष बढ़ाय । तीनबार नंदीसुर जाय॥
पंचकल्याणक समैं सुयोग। करैतीनपदनमननियोग।२३२।
और केवली प्रभुके पाय। दोय कल्याणक पूजै आय॥
निज कोठे थिरहोयसुजान। करै दिव्य बानी रस पान।२३३।
सभा सिंहासन बैठ सुरेश। देयसुरनप्रति हित उपदेश॥
करैतत्त्ववर्णन विस्तार। अनेकांत वाणी अनुसार। २३४।
जेसुर सम्यक दर्शनहीन। तपबल देवभये सुख लीन॥
तिनप्रतिधर्म वचन उच्चरै। दर्शनगुणकी प्रापतिकरै।२३५।
इहिविधि विविधकरै सुभकाज। महापुन्न संचै सुर राज॥
दर्शनज्ञान रत्न भंडार। चारित गुणकोनाहिं अधिकार।२३६।
धर्म बासना बासित योग। करै पुनीत पुन्न फल भोग॥
कबही सुनै अपछरा गान। निरखै नाटक निरुपम थान।२३७।
कबहीं शुभ सिंगार रस लीन। हाव भाव जोवै परबीन॥
कबही हास्यकथा विस्तरै। बनक्रीड़ा देवन संग करै।२३८।
योंनानाविधि करतबिलास। प्रतिदिन सुखसागरमैंबास॥
साढ़े तीनहाथ परवान। दिव्यशरीर अतुलदुतिवान।२३९।

१—धर्म की वासना से जिसका योग वासित है॥

सागर बीस परम थिति जास। बीस पक्ष परलेयउसास ॥
बीसहजारवर्ष अवसान। मनसा भोजन करें महान।२४०।
पंचमपिरथीलों जिससही।अवधि शक्ति जिनशासनकही॥
तावतमान विक्रिया खेत।सकल काजसाधनसुखहेत।२४१।
असंख्यात सुर सेवन पाय। देवी नेत्र कमल दिनराय॥
यों पूरव कृत पुन्न संयोग। करै इन्द्र इन्द्रासन भोग।२४२।

॥ दोहा छंद ॥

कहा इन्द्र अहमिंद्र पद, जन्म धरै फिर आय॥
जैन धर्म नृप की धुजा, लोक शिखर फरराय।२४३।

इति श्री पार्श्व पुराण भाषा आनन्दकुमार महा मंडली का आनत नाम तेरवें स्वर्ग में इन्द्र होना वर्णनो नाम चतुर्थम् अधिकार सम्पूर्णम् ॥



१—इन्द्र इन्द्रासन के भोग करै हैं॥
२—क्या अर्थात् तुच्छ है इन्द्र अहमिंद्र पदकी प्राप्ति किसलिये कि इनका जन्म मरण मिटा नहीं जैन धर्म की धुजा उर्ध लोक के शिखरपर फहरा रही है भावार्थ जैन धर्म का प्रभाव यह है कि जीव मोक्ष होकर जन्म मरणसे छूट जाता है॥

॥ पंचम अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

बंदूं पारस पद कमल, अमल बुद्धि दातार॥
अब वरणूं जिन राजके, पंच कल्यानक सार। १।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथम अनंत अलोकाकाश। दशौंदिशा मरजाद न जास॥
दूजो दरब जहां नाहिं और। सुन्न सरूप गगन सबठौर। २।
तहां अनादि लोक थिति जान। छीदे पाय पुरुष संठान॥
कटिपै हाथ सदाथिर रहै। यह सरूप जिन शासनकहै।३।
पौन पिंड वेढों सरवंग। चौदह राजू गगन उतंग॥
घनाकार राजू गण ईश। कहे तीन सौ तैंतालीश। ४।

१—राजू की व्याख्या वहुत वड़ी है सो त्रिलोकसार ग्रंथ से देखलेना॥

२—पुरुषा कार लोक का सब से नीचे छीदे पैरों का भाग ७ उस्से ऊपर कटि का भाग १ उस्से ऊपर कटि पर दोनों हाथ धरने से दोनों कुहनियों के वीच का भाग ५ उस्से ऊपर सिर का भाग १ राजू चौंड़ा हैं जिनके योग फल १४ का मध्य भाग ३॥ हुवा इस ३॥ राजू चौंड़ाव को १४ राजू पुरुषाकार लंबान मैं गुणनेंसे ४९ गुणन फल हुवा इस ४९ को ७ राजू मुटाई मैं गुणनें ३४३ राजू घनाकार लोक हुआ॥

जीवादिकछह दरब सदीव । तिनसौं भरो यथा घट घीव ॥
स्वयं सिद्ध रचनायह बनी । नाइस करता हरता धनी॥५।
दरब दिष्टि सौं ध्रौव्य सरूप । पर्यय सौं उत्पतव्ययरूप ॥
जैसे समुद सदाथिरलसै । लहर न्याय उपजैअरुनसै । ६ ।
लोक नाड़ि तिस मध्य महान । चौदह राजूव्योमउचान॥
राजूमित चौड़ी चहुंपास । यह त्रस खेत जिनागम भास।७।
याके बाहर जंगम जीव । समुदघात विननाहिं सदीव ॥
तामें तीनों लोक विशाल । ऊरध मध्य औरपाताल ।८।
सोलह स्वर्ग पटल बावन्न । नव ग्रीवक नवपटलरवन्न ॥
अनुदिश और अनुत्तर येह । एकएकही पटल गिनेह ।९।
ये सब त्रेसठ पटल बखान । सिद्ध खेत सो है सिर थान॥
ऊरध लोक बसै इहिभाय।उत्तम सुरथानक सुखदाय।१०।
अधो लोक में बहुविधि भेव।सातनरक असुरादिकदेव॥
मध्यलोकपुनितीजो तहां। असंख्यात दीपोदधिजहां।११।
तिन मैं शोभावंत सुहात । जंबू दीप जगत विख्यात ॥
लक्ष महा जोजन विस्तार । सूर्य मंडल की उनहार।१२।
वज्र कोट जिस कोट अभंग। परमित योजन आठ उतंग ॥
चारों दिश दरवाजे चार । तिनकेनाम लिखूं अवधार।१३।
विजै नाम पूरब मैं जान। वैजयंत दक्षिण दिश ठान ॥

१—आत्मा के प्रदेश का शरीर से बाहर होकर फैलना जो सात प्रकार माना गया है देखो छंद अंक ५६ आदि ७५ पर्यंत नवम अधिकार ॥

पश्चिम भाग जयंत दुवार। उत्तर में अपराजितसार। १४।
लवण समुद्र खातिका रूप। चहुं दिश बेढ़ो सजल सरूप॥
तहां सुदर्शन मेरु महान। मध्य भाग शोभा असमान। १५।
अति उतंगलख योजन सोय। रिजुबिमान जा ऊपर होय॥
सब शैलन में ऊंचो यहै। ग्रीव उठाय किधों इमकहै। १६।
करै कौन गिर मेरी रीस। जिन पति न्हौन होय मुझसीस॥
चारों दिश चारों गजदंत। नील निषधसों लगे महंत।१७।
छेह कुल पर्वत बड़े विथार। पूरब पश्चिम दीरघ धार॥
आठमहा गिरदिग्गजनाम।मेरु निकटआठोंदिशठाम। १८।
कनक वरण सोलह बच्छार। महा विदेह त्रिषै छविसार॥
कंचन गिर दीषै परवान। सीता सीतोदा तट थान। १९।
कुरु भूँ माहिं यमक गिरचार। नील निषधके निकट निहार॥
चार नाभिगिर मिथ्यानाहिं। मध्यम जघन भोगभूंमाहिं।२०।
विजयारध पर्वत चौंतीस। इतनेही वृषभाचल दीस॥
ते मलेच्छ मघ खंडनविषे। चक्री जहांनांव निजलिषै।२१।
यों गिर दीप विषै वरनये। ग्यारह अधिक एकसौ भये॥
भद्रसाल बन दोय सुबास। पूरव अपर मेरु के पास।२२।
दो तरु जंबू सेंभल तने। उत्तम भोग भूमि मै बने॥

१—हिमवान १ महा हिमवान २ निषध्य ३ नील ४ रुक्मी ५ शिपरी ६
२—अपर अर्थात् पश्चिम॥ ३—जामुन वृक्ष॥

छहद्रहवड़े कुलाचल सीस। पद्म महापद्मादिक दीस॥२३॥
बीस सरोवर और सुनेह। सीता सीतोदा मध तेह॥
उत्तम मध्यम जघन विशेश। भोगभूमि छहकही जिनेश॥२४॥
महादेश चौंतीस सुखेत। ऐरावत अरु भरथ समेत॥
इतनीही नगरी परवान। आरजखंडमध्य थिरथान॥२५॥
उपसमुद्र की संख्या यही। कछू विनाशिक कछुथिरसही॥
पूरब दिशदो बाग महंत। देवारण्य दीपके अन्त॥२६॥
ऐसेही पश्चिम दिशदोय। भूतारण्य नाम तिनहोय॥
गंगादिकसरिता दशचार। चौसंठ महा विदेहमझार॥२७॥
बारह विपुल विभंगा जेह। महानदी नब्बे सब येह॥
इतनेहीसब कुंड महान। जहां तुरंगनि उतरै आन॥२८॥
सतरह लाख सब्रन परवार। सहसछांनवे ऊपरधार॥
यहसब जम्बूदीप समास। आगममें विस्तार प्रकास॥२९॥

॥ दोहा छंद॥

यही कथन अंगन विषे, वरणो गणधर ईश॥

१—पद्म १ महापद्म २ तिगंच ३ केशरी ४ पुंडरीक ५ महा पुंडरीक ६
२—मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में ३ उत्तम १ मध्यम २ जघन ३ हैं इसी प्रकार उत्तर दिशा मै ३ जान लेनी जो सर्व ६ भोग भूमि हुई॥
३—बड़ी लहर मारने वाली अथवा इनकी संज्ञाभी विभंगा है॥
४—संक्षेप रूप जंबू दीप इसप्रकार है॥

तीनलाख पद में सही, ऊपर सहस पचीस । ३० ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यों अनेक रचना आधार । दीप राज राजै अधिकार ॥
तहां मेरुकेदक्षिण भाग । किधोंभूमि तियशुभगसुहाग।३१।
भरथ खण्ड छह खण्ड समेत । धनुषाकार विराजत खेत॥
तामैंसबसुखधर्मनिवास । काशीदेशकुशल जनवास।३२।
गांव खेट पुर पट्टन जहां । धनेकन भरे वसैं व्रहुतहां॥
निवसै नागर जैनी लोय। दया धर्म पालैं सबकोय। ३३ ।
जिन मँदिर ऊँचेजिन माहिं। नरनारी नित पूजन जाहिं ॥
पदपद पुरपंक्ति पेषये। ऊदवथान न काहिं देषये। ३४ ।
नीरअगाध नदी नित बहैं । जलचर तहांजीव नितरहैं ॥
मुनिजनभूषित जिनकेतीर। काउसर्ग कर ठाड़े धीर। ३५।
ऊँचे परबत झरना झरैं । मारग जात पाथिक मनहरैं ॥
जिनमेंसदा कन्दराथान । निश्चल देह धरैं मुनिध्यान।३६।
जहांबड़े निर्जन वनजाल।जिनमेंबहु विधि विरछ बिशाल ॥
केला कर्पट कटहल कैर। कैथ करोंदा कोंच कनेर । ३७ ।
किर्मला कंकोल कन्हार । कमरष कंज कदम कचनार ॥
खिरनी खारक पिंडखजूर । खैरखरहटी खेजड़ भूर । ३८ ।

१—कुशल कहिये चतुर जनों का नाम है ॥
२—धन अर्थात् डांगर ढोर कन नाज ॥

अर्जुन अंबली आंब अनार। अगर अँजीर अशोक अपार॥
अरणी औंगा अरलू भने। ऊंबर अरंड अरीठा घने। ३९।
पाखल पीपल पुंग प्रयंग। पीलू पाटल पाट पतंग॥
गोंदी गुड़हल गूलर जान। गांडर गुंजा गोरखपान। ४०।
चंपा चीढ़ चरोंजी फली। चंदन चोल चँबेली भली॥
जंट जंभीरी जामन कोट। नीबु नारयल हींस हिंगोट। ४१।
सोना सीसम सेंभल साल। नीमरु सिरस सदाफल जाल॥
बांस बबूल बकायन बेर। बेत बेहड़ा बड़हल पेर। ४२।
महुआ मौलसिरी मचकुन्द। मरुवा मोगा करना कुन्द॥
तूत तओंलनि तींदू ताल। तगर तिलक तालीस तमाल।४३।
इहिविधि रहे सरोवर छाय। सबही कहत कथा बढ़ जाय॥
तहां साधु एकांत बिचार। करैं पठन पाठन विधिसार। ४४।
विविध सरोवर शीतल ठाम। पंथी बैठ लेहिं विश्राम॥
निर्मल नीर भरे मनहार। मानो मुनिचित विगतविकार।४५।
सोहैं सफल साल के खेत। भये नम्र फल भार समेत॥
सज्जनजन ज्यों संपति पाय। छोड़ गुमान[1] चलैं शिरनाय।४६।
केवलज्ञानी करत विहार। जहां सदा सबसुख दातार॥
आचारज शुभ संघसमेत। विहरमान[2] भविजन हितहेत।४७।
केई जहां महाव्रत लेहिं। भवदुख वारि जलांजलि देहिं॥
केई धीर उग्र तप करैं। ते अहिमिंद्र जाय अवतरैं। ४८।

१—गुमान अर्थात् मान॥ २—विहार करते हुये॥

केई श्रावक के व्रत पाल। अच्युत स्वर्ग बसैं चिरकाल ॥
केई कर जिनयज्ञ विधान। पावैं पुन्नी अमर विमान। ४९।
केई मुनिवर दान प्रभाव। भोगैं भोग भूमि की आव ॥
अतिपुनीत सबही विधिदेश। जहाँजन्म चाहैं अमरेश।५०।
तहां बनारस नगरी बसै। देखत सुर नर मन हुल्लसै ॥
है प्रसिद्ध धरनी परसोय। तीरथ राज कहैं सब कोय। ५१।
शोभा जाकी कहिय न जाय। नाम लेत रसना शुचि थाय ॥
जहां सरोवर नाना भांत। जिनके तीर तरोवर पांत। ५२।
निजजीवनजीवनसुख देहिं। कमलसुबास शिलीमुखलेहिं ॥
सोहैं सघन रवाने बाग। फले फूल फल बढ़ो सुहाग। ५३।
सजल खातिका राजै खरी। उठै लहर लोयन गति हरी ॥
कोट उतंग कांगुरे लसैं। मानो स्वर्ग लोक दिशिहसैं। ५४।
ऊंचे महल मनोहर लगें। तोरन कलश शिषर जगमगें ॥
अतिउन्नतजिनमंदिरजहां। तिनमहिमावरणनबुधकहां। ५५।
रत्न बिंब राजैं जिहि माहिं। शिषर सुरंग धुजा फहराहिं ॥
कंचनके उपकरन समाज। आवैंभविजन पूजाकाज। ५६।
जै जै शब्द सहितछबि छजै। किधोंधर्म रयणायरगजै ॥
नगर नारिनित बंदनजाहिं। जिन दर्शन उच्छवउरमाहिं। ५७।

१—सोलहवां स्वर्ग ॥ २—जिन पूजा ॥ ३—जीवन अर्थात् जल ॥
४—आखों की चाल को रोक दिया भावार्थ आंखैं खुली देखती रहीं ॥
५—कंचनके भाजनोंका समूह साथ लेकर भविजन पूजा काजआवैं ॥

भूषण भूषित सुंदर देह। मानो स्वर्ग अपछरा येह ॥
सब ग्रहस्थ साधै खट कर्म। पालैं प्रजा अहिंसा धर्म। ५८।
दोष अठारह वराजित देव। तिस प्रभुको पूजैं वहु भेव ॥
चाह विना वराजित जो धीर। सोई गुरु सेवैं वरवीर। ५९।
आदि अंत जे विगत विरोध। तेई ग्रंथ सुनै मनसोध ॥
सत्य शील गुण पालैं सदा। तातैं लोग सुखी सर्वदा। ६०।

॥ दोहा छंद ॥

प्रजा वनारस नगरकी, नागर नीत सुजान।
चार रत्न के पारखी, लहिये घर घर थान। ६१।
देव धर्म गुरु ग्रंथ ये, वड़े रत्न संसार ॥
इनको परख प्रमानये, यहनर भव फलसार। ६२।
जे इनकी जानैं परख, ते जग लोचन वान।
जिनको यह शुध नापरी, ते नर अंध अजान। ६३।
लोचन हीने पुरुषको, अंध न कहिये भूल।
उर लोचन जिनके मुँदे, ते अंधे निर्मूल। ६४।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहि विधिनगरवसै वहुभाय। सव शोभा वरणी नहिंजाय ॥

१—सिज्झाय अर्थात् सामायक १ तप २ जिन पूजा ३ संयम अर्थात् इन्द्रियों का रोकना ४ श्रीगुरु के पावोंमे चित्त लगाना ५ और अपने वित्त समान दान देना ६ ये षटकर्म हैं ॥ २—अठारह दोष की सूची पहिले लिख आयेहैं देखो चौपाई छंद ३६ अधिकार २ ॥

अश्वसेन भूपति बड़ भाग । राजकरैतहां अतुलसुहाग।६५।
काशिपगोत्र जगतपरशन्स । वंशइक्ष्वाक विमलसरहन्स॥
तेजवंत दिनपतिज्योंदिपै । प्रभुता देषशची पतिछिपै ।६६।
कल्प तरोवर सम दातार । रति पति लाजै रूप निहार॥
रैणायर सम अति गंभीर । पर्बत राज बराबर धीर। ६७।
सोम समानसबन सुखदाय । कीरति किरण रहीजगछाय॥
तीन[1] ज्ञान संयुक्त सुजान । परम विवेकी दया निधान।६८।
जिनपद भक्त धर्म धन वास । गुरु सेवा रति नीत निवास ॥
कला चातुरी बुध विज्ञान । विद्या विनै संपदा थान ।६९।
सकल सार गुण माणक कोष । उभय[2] पक्ष निर्मल निर्दोष ।
जिनसूरजउदयाचल राय।तिसमहिमावरणीकिमजाय।७०।
बामा देवी नाम पवित्त । तिनके घर रानी शुभ चित्त ॥
निरुपमलावन सबगुणभरी।रूपजलधि वेलाअवतरी।७१।
नखशिषसहज सुहागिननार।तीनलोकतियतिलकसिंगार॥
सकल सुलक्षण मंडित देह । भाषा मधुर भारती[3] येह।७२।
रंभा रति जिस आगे दीन । रोहिणि रूप लगै छबिछीन ॥
इन्द्र वधू इम दीषै सोय । रवि दुति आगे दीपकलोय ।७३।
जन मन हर्ष बढ़ावन एम । कातिक चांद चंद्रिका जेम ॥

१—मति-श्रुति, अवधि ॥
२—दोनों पक्ष अर्थात् पिता का कुल माता की जाति ॥
३—वाणी ॥

सकलसारगुणमणिकीखान।शीलसंपदाकी निधिजान ।७४।
सज्जनता की अवधि अनूप। कला सुबुधि की सीमारूप ॥
नाम लेत अघतजै समीप। महा पुरुष मुक्ताफलसीप।७५।
त्रिवभुन नाथ रत्नकी मही। बुधिवल महिमा जाय न कही॥
बहुविधि दंपति संपति जोग। करै पुनीत पुन्नफल भोग।७६।

॥ उक्तंच प्राकृत गाथा ॥

॥ आर्या छंद ॥

तित्थयरा तप्पियरा हल हर चक्कांई वासदेवांई।
पडि बास भोय भूमिय आहारोणत्थिणी हारो।७७।

॥ भाषा टीका ॥

तिर्थंकर और उनके माता पिता बलभद्र चक्रवर्ति नारायण और भोगभूमि वासी युगल इन सबके आहार हैं निहार अर्थात् मल मूत्र नहीं होता ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जिनवर जिन माता जिन तात। वासदेव बलदेव विख्यात ॥
चक्री राय युगलया जोय। इनसब के मल मूत्र नहोय।७८।

॥ दोहा छंद॥

पूरब गाथा को अरथ, लिखो चौपाई लाय।

खट पाहुड़ टीका विषै, देष लेउ इहि भाय। ७९।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

अब आगे भविजन मन थंभ। सुनो गर्भ मंगल आनंद ॥
एक दिना सौधर्म सुरेश। धनपति प्रति दीनो उपदेश।८०।
आनतेंद्र की थित में सही। आयु छ मास शेष अब रही ॥
तेबीसैंम अवतार महान। होसी नगर बनारस थान।८१।
अश्वसेन भूपति के धाम। पंचाश्चर्ज करो अभिराम ॥
यह सुरेन्द्र नें आज्ञा करी। सो कुबेर निज माथे धरी।८२।
चलो तुरत लाई नहिं बार। सोहै संग अमर परवार ॥
हर्षत अंग पिता घर आय। करी रत्न वर्षा बहुभाय।८३।
जिनके तेज तिमर नाहिं रहै। नाना वरण प्रभा लह लहै ॥
ऐसे निर्मोलक नग भूर। वरषैं नृप के आंगन पूर।८४।

॥ दोहा छंद ॥

नभसों आवें झलकती, मणि धारा इहिभाय।
सुरग लोक लच्मी किधौं सेवन उतरी माय।८५।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

साढ़े तीन कोड़ परवान। यों नित वरषैं रत्न महान ॥

१—एक ग्रंथ का नाम। २—तेरवां स्वर्ग।

सुरभि सुगंध कल्प तरुफूल। वरषावें सुर आनंदमूल। ८६।
गंधोदक की वरषा करें। मानो मुक्ताफल अवतरें॥
प्रति दिन देव दुंदभी बजै॥किधौं महा रैणायर गजै। ८७।
नंद विरध जैजै उच्चरें। मात पिता प्रति सुरयों करें॥
इहि विधि पंचाश्चर्य विलोक। जैनी भये मिथ्याती लोक। ८८।

॥ दोहा छंद ॥

देवन किये छ मास लों, पंचाश्चर्य अनूप॥
देष देष परजा भई, आनंद अचरज रूप। ८९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

योंअतिआनंदसों दिन जांहि॥माता मगन सुखोदधिमांहिं॥
माणकजटित मनोहर धाम। रत्नपलंक सेज अभिराम। ९०।
मणिमय दीपजहांजगमगैं। अति सुगंधआवत अलिपगैं॥
करैचतुर्थानंद[1] स्नान। करैं सैन जननी सुखमान। ९१।
पश्चिम रैंन रही जब आय। सोलह सुपने देषे माय॥
तिनके नामलिखूं अवलोय। पढ़त सुनत पातकछैंहोय। ९२।

॥ पद्धडी छंद ॥

सुपनावलिसोलह सुनहुमीत। जिन राजजन्म सूचकपुनीत।

१—ऋतु समय स्त्री चौथे दिन स्नानकर शुद्ध होती है भावार्थ वामा देवी शुद्ध स्नानकर सोगई और ऐसा समय गर्भका कारण है॥

ऐरावत हाथी प्रथमदीस। मद गीलेगंड विशालशीस।९३।
देष्यो डकारत [२]वृषभ राज। अति उज्जल मोती वरणभाज॥
देष्यो पंचनन[३] धवलदेह। निज नाद करैं ज्यों सरदमेह।९४।
देष्योमणिआसनशोभमान।तहां हेमकलश[२] कमला[४]सनान॥
देखीदो पावनपहुप माल। भमरावलिवेढ़ीअतिविशाल।९५।
[६]रवि मंडल देष्यो तम गलंत। उदयाचल ऊपर उदयवंत॥
संपूरण [७]तारापति विमान। तारा वलिमध्य विराजमान।९६।
जलतिरत मनोहर मीनजोट। देषे जिन जननीपलकओट॥
देषेचामीकरकलश[९] दोय।अतिझलकैं वारिजढकेसोय।९७।
देष्यो [१०]कमलाकर [३]कमल छन्न। वहु हंसी हंसन सों रवन्न॥
देष्यो[११]रैणायर गर्जमान। पुनि सिंह पीठ[१२] माणक निधान।९८।
फिर देष्यो [१३]देव विमाग योग। धुज घंटा झालर सों मनोग॥
प्रघटोमहीफोरफनेंद्र[१४]धाम।मणिकंचनमयनैन[४]नाभिराम९९।
पुनि रत्न [१५]राशि देषी अनूप। इन्द्रायुध वर्ण विचित्र रूप॥
निर्धूम [१६]धनंजय दीप[५]मान। येदेखेसोलह सुपन जान। १००।

॥ दोहाछंद ॥

गजप्रवेशमुखकमलमैं,सुपन[६]अंत अविलोय॥

१—पौष माघ की वर्षा ॥
२—मणि आसन शोभमानपर हेम कलश से लक्ष्मी को स्नान करते देखीं ॥
३—कमलों कर छाया हुआ ॥ ४—नैनों को आनंद देनेवाला ॥ ५—दिपती हुईअर्थात् चमकती हुई ॥ ६—सुपनों के अंत में भावार्थ सुपनों के पीछे ॥

सुख निद्रा पूरी भई, भयो प्रात तम खोय ।१०१।

॥ प्रातकाल कथन ॥

॥ दोहा छंद ॥

पुर्व्व दिवाकर ऊगयो,गयो तिमर दुखदाय ॥
जैसे जैन सिधांतसुन, भरम भाव मिटजाय ।१०२।
मंदतेज तारे भये, कछु दीपैं कछु नाहिं ॥
ज्यों तिर्थंकर के उदय, पाषंडी छिपजाहिं ।१०३।
सूरजवंशी जे कमल, खिले सरोवर माहिं ।
ज्योंजिनबिंबविलोकके, भविलोचनविकसाहिं।१०४।
चंद विकाशी कमल जे,विकसत भये न सोय ॥
ज्योंअजान जिन वचनसुन, मुद्रित मूलनहोय।१०५।
चक्रवाक हरषत भये, ज्योंजिन मत्त संयोग ॥
जीवसुमति पियनारिको, मिटोअनादिवियोग।१०६।
घूघूगण भूतल विषे, आंधे भये असूझ ॥
जैनग्रन्थ के रहस में, ज्यों परमती अबूझ ।१०७।

१—जीव रूप पुरुष और सुमति रूप नारी का जो अनादि काल से वियोग था सो मिटगया ॥

कमलकोष मधुकर बँधे, छुटेजग्यो सिर भाग ॥
यथा जीव जिनधर्मसों, मुक्तिहोय भवत्याग ।१०८।
पथिक लोग मारग चले, सूझे घाट कुघाट ॥
जिन धुनि सुन सूझै यथा, स्वर्गमुक्ति कीवाट।१०९।
इहिविधिभयोप्रभातशुभ, आनन्दभयोअतीव॥
धर्म ध्यान आराधना, करनलगे भवि जीव ।११०।
जिनजननी रोमांचि तन, जगीमुदितसुखजान॥
किधोंसकंटककमलनी, विकशीनिश अवसान।१११।
मंगलीक बाजित्र धुनि, सुन वन्दी जन गान ॥
उठीसेजतज सुखभरी, धरो हिये शुभ ध्यान ।११२।
सामायक विधि आदरी, पंच परम पदलीन ॥
औरउचित आचारसब, न्हौन विलेपन कीन।११३।
पहरे शुभ आभर्ण तन, सुन्दर वसन सुरंग ॥
कल्पबेल जंगम किंधौं, चलीसखी जन संग ।११४।
राजसिंहासन भूप तब, बैठे सभा सुथान ॥
देवी आवत देखिकै, कियो उचित सनमान ।११५।
अर्धासन बैठन दियो, जोग बचन मुख भास ॥
योंरानी विकशत बदन, बैठी भूपति पास ।११६।
सभा लोक तारे विविधि, भूपति चांद सरूप ॥
श्रीबामा देवी तहां, दिपै चन्द्रिका रूप ।११७।
स्वामी सोलह सुपनहम, देखे पश्चिम रैन ॥

श्रीमुखते इनको सुफल, कहो श्रवन सुखदैन। ११८।
अश्व सेन भूपाल तब, बोले अवधि विचार॥
एकचित्त कर देवितुम, सुनो सुपन फलसार। ११९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

धुरगजेन्द्र दर्शन तैं जान। होसी जगपति पुत्र प्रधान॥
महावृषभपुनि देख्यो सोय। जगजेठो नंदनतुमहोय। १२०।
स्वेतासिंह दर्शन फलभास। अतुल अनन्ती शक्तिनिवास॥
कमलामज्जन तैंसुरईश। करैंन्होनकनकाचल शीश। १२१।
पहुपदाम दो देषीसार। तिसफल दुविधि धर्मदातार॥
शशितैं सकल लोकसुखदाय।तेज पुंज सूर्य तैं थाय। १२२।
मीन युगलतैं सबसुखभाज। कुंभविलोकन तैं निधिराज॥
सरवरतैं सब लक्षणवान। सागर तैं गंभीर महान। १२३।
सिंहपीठ तैं मृगलोचनी। होयबाल तुमत्रिभुवन धनी॥
सुर विमान देख्यों सुख पाय।स्वर्ग लोकतैं उपजैंआय। १२४।
नागराज ग्रहको सुनहेत। जन्मैं मतिश्रुति अवधिसमेत॥
रत्नराशि तैं गुणमणि थान। कर्मदहन पावकतैं जान। १२५।
गज प्रवेश जो बदन मझार। सुपन अन्तदेष्यों वरनार॥
श्रीपारस जिनजगत प्रधान।गर्भ तुम्हारे उतरैंआन। १२६।

१-सुपनों के अन्त में

॥ दोहा छंद ॥

सुन वामादे सुपनफल, रोमांचित तनभूर ॥
सुवचन जल सींचतकिधौं, उगेहर्ष अंकूर । १२७ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबसौधर्म सुरेश विचार । स्वामि गर्भ अवसर निर्धार ॥
कुलगिरकमल वासनीजेह । श्रीआदिकदेवीगुणगेह । १२८ ।
तिन्हैंबुलाय कहोशुभ भाउ । अश्व सेन भूपति घरजाउ ॥
वामादेवी के उरधान । तेवीसम जिन उतरे आन । १२९ ।
तिनकीगर्भ शोधनाकरो । निज नियोग सेवामन धरो ॥
यहसुनसब आनंदितभई । इन्द्रआन माथे धरलई । १३० ।
स्वर्गलोक तजि आई तहां । बसै बनारस नगरीजहां ॥
महाकांततनलावनभरी । मानोनभ दामिनिअवतरी । १३१ ।
अंगअंग सबसजे सिंगार । रूपसम्पदा अचरज कार ॥
चूड़ामणि माथेजगमगै । देखतचका चौंधसी लगै । १३२ ।
सुरतरुसुमन दामउरधरीअतिसुवास दशादिशि विस्तरी ॥
श्रवनसुखद नेवरझंकार । शोभा कहत न आवै पार । १३३ ।
आय नृपत के पायन नईं । आयसु मांग महल में गईं ॥

सिंहासन थितिमाय निहार। करप्रणाम कीनो जैंकार।१३४।

॥ दोहाछंद ॥

जननी देहसुभावसों, अतिनिर्मल अविकार ॥
ताहि कुलाचल वासनी, औरकरैं शुचिसार।१३५।
कृष्णपाख वैशाखदिन, द्वुतिया निश अवसान ॥
विमलविशाखा नखतमें, वसेगर्भ जिन आन।१३६।
यथासीप संपुट विषे, मोती उपजै जान ॥
त्योंहीं निर्मल गर्भ में, निरावाध भगवान।१३७।
गर्भ वसैं पर गर्भ तैं, वरतैं भिन्न सदीव ॥
घटतैंघट वरतीगगन, क्योंनहिं भिन्नअतीव।१३८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तवजिन पुन्नपवन वसहले। चहुँविधि[1] सुरकेआसनचले ॥
चिह्नदेख इन्द्रादिकदेव। जानोंअवधि ज्ञानवलभेव।१३९।
जिनवर आजगर्भ अवतरे। यहविचार उरआनन्द भरे ॥
चढ़ाविमान परिवारसमेत। चलेगर्भ कल्यानक हेत।१४०।
जैजैकार करत बहुभाय। उच्छव सहित पिता घर आय ॥
मातपिता आसन परठये। कंचनकलश नहावतभये।१४१।

१-चार प्रकार देवता

गर्भमध्य वरतीभगवान । प्रणमैंदेव धरो मन ध्यान ॥
गीत निरत बाजित्र बजाय । पूजा भेंट करी शिरनाय ।१४२।
यों सुरगण सब साध नियोग । गये गेह कर कारज जोग ॥
इन्द्रराजको आयसुपाय । रुचक वासिनीदेवी आय।१४३।
यथायोग सब सेवाकरैं । छिनछिन जिनजननी मन हरैं ॥
रुचक दीप तेरह मो जहाँ । रुचकनाम पर्वतहैतहाँ ।१४४।
सो चौरासी सहस प्रमाण । इतने योजन उन्नत जान ॥
इतनोहीं विस्तीरणधार । दीप मध्य सो बलयाकार ।१४५।
ताकेशिषर कूटबहु लसैं । दिशाकुमारी तिनमैं वसैं ॥
तेसबसेवन आवैंमाय । यह नियोग इनको सुखदाय ।१४६।

॥ कुसुमलताछंद ॥

आई भक्ति नियोगिनि देवी । जिन जननीकी सेवभजें ॥
कोई न्हान विलेपनठानैं । कोईसार सिंगारसजें ।१४७।
कोई भूषन बसन समप्पै । कोई भोजन सिद्धकरैं ॥
कोई देय तबोल रवाने । कोई सुंदर गान करैं ।१४८।
कोई रत्न सिंहासन थापैं । कोई ढोलैं चमर वरो ॥
कोई सुंदर सेज बिछावैं । कोई चापैं चरन करो ।१४९।
कोई चंदन सों घरसींचैं । सारे महल सुबास करी ॥

१—गोल है चूड़ी आकार.
२—एक प्रकार की देवी हैं.

कोई आँगन देय बुहारी। झारैं फूल परागपरी।१५०।
कोई जल क्रीड़ा कर रंजै। कोई बहु विधि भेष किये॥
कोई मणि दर्पण करधारैं। कोई ठाढ़ी खड़ग लिये।१५१।
कोई गूँथ मनोहर माला। आवै आन सुगंध परी॥
कोई कल्प तरोवर सोंले। फल फूलनकी भेटधरी।१५२।
कोई काव्य कथा रस पोषै। कोई हास्य विलास ठवैं॥
कोई गावै वीनबजावैं। कोई नाचत सीसनवैं।१५३।

॥ दोहा छंद ॥

इहिं विधिसेवा करत नित, नवैं मास शुभश्रेय॥
प्रश्न करैं सुरकामनी, माता उत्तर देय।१५४।
अंतरलापि[1] पहेलका, बहिर लापिका[2] एव॥
बिन्दु[3] हीन निहौंठ[4]पदं, क्रियागुप्ति बहुभेव।१५५।

१-अन्तरलापि-पहेली उसको कहते हैं जिसका उत्तर उसी में हो बाहर से न लाया जावे यथा उदाहरण पहेली बेर नाम फल हिय कठोर कोमल बदन दुर्जन सँग बिसराम। एक बेर मैं कहंत हूँ फेर न लेऊँ नाम यह अर्थचित्रअलंकारकीजाति है.

२-बहिर लापिका उस पहेली को कहते हैं जिसका उत्तर बाहर से लिया जावे यथा उदाहरण पहेली कसेरू नाम फल-श्याम वरण परहर नहीं जटा धरें नाहिं ईश ना जानूं पिया कौन है केश लगायो शीश-यह अर्थचित्र अलंकार की जाति है.

३-बिन्दु हीन अलंकार उसे कहते हैं कि जिस छन्द को कवि ऐसा रचे जिसमें अनुस्वार बिंदु वा विसर्ग बिंदु न होय यथा बेग कहा करिये गड़भाग। दिक्षा गहन जगत को त्याग- यह वरण चित्र अलंकार की जाति है.

६-निहौंठ अलंकार उसे कहते हैं कि जिस छन्द में ओष्ठ स्थानी वर्ण उवर्ण और पवर्गी अक्षर और उवर्ण की मात्रा नहीं यथा उदाहरण कली कवित्त-कनक लजात न आनन तें चन्द्रकांति ललित चखन कंज खंजरीट हीन हैं-यह वर्णचित्र अलंकारकी जातिहै.७-क्रियागुप्तअलंकार उसेकहतेहैं जिसमेंक्रियाछिपीहुईहोयथा। पालक मेथी सोया खाकर-यहां प्रत्यक्ष में पालक मेथी के सम्बन्ध से सोया साग को नाम प्रतीत होता है परन्तु यहां सोया क्रिया सोनेके अर्थमें है यहअर्थ चित्र अलंकार की जाति है॥

इत्यादिक आगम उकत, अलंकार कीजात ॥
अर्थगूढ़ गंभीर सब, समझावे जिन मात । १५६ ।



॥ देवाँगनाप्रश्न माताउत्तर ॥



॥ १५ मात्राचौपाईछंद ॥

तुमसी त्रिया कौन जग आन । तिर्थंकर सुतजनै महान ॥
जगमैंसुभटकोनसेमाय । जेनर जीतैंविषय कषाय । १५७ ।
कौन कहावै कायर दीन । इन्द्री मद मेटन बलहीन ॥
पंडित कौन सुमारग चलै । दुराचार दुर्मारग दलै १५८ ।
माता मूरख कौनमहंत , विषई जीव जगत जावंत ॥
कौनपुरुष[2] सानर भवधार, जोसाधै पुरुषारथ[3] चार । १५९ ।
कौन पुरुष[4] का कहियेमर्म । जो शठ साध न जानै धर्म ॥
धन्य कौन नर इस संसार । योवन समैं धरै व्रतभार ।१६०।
धिक किनको कहिये सर्वंग । जे धर करैं प्रतिज्ञा भंग ॥
कौन जीवकै वैरी लोय । काम क्रोधहैं औरन कोय । १६१ ।
जननी जगमैं कौन मलीन । पातक पंकमालिन मतहीन ॥

१—प्रश्नोत्तर अलंकार ॥ २—सापुरुष कहिये उत्तम पुरुष कौन ३—अर्थ १ काम २ धर्म ३ मोक्ष ४ ॥ ४—का पुरुष कहियै खोटा पुरुष कौनहै इसका भेद कहो ॥

कहोकौननर नित्तपवित्त। ब्रह्मचर्य धारी दृढ़ चित्त।१६२।
कौनपशू मानुष आकार। जिनके हिरदै नाहिं बिचार॥
अंधकोन जोदेवअदेव। कुगुरुसुगुरु कोभेदनभेव।१६३।
बधिर कौनसे उत्तरदेह। जैन सिधाँत सुनैनहि जेह॥
मूकनामनरकैसें लहै। जो हित सांच बचन नहि कहै।१६४।
लाँबी भुजा कौन करहीन। जिनपूजा मुनि दान न दीन॥
कौनपाँगले पाँवसमेत। जेतीरथ परसैं न अचेत।१६५।
कौनकुरूप जननि कहु एह। शीलासिंगार बिनानरजेह॥
वेगकहाकरियैवड़भाग। दिक्षागहन जगतकोत्याग।१६६।
मित्रकौन हितवंछकहोय। धर्म दिढ़ावे आलस खोय॥
शत्रुकौनजो दिक्षालेत। विघनकरै परभवदुखहेत १६७।
जियको कोन शरण हैमाय। पंचपरम गुरु सदा सहाय॥
इहिविधि प्रश्नकरैं सुरनार। माताउत्तर देह विचार।१६८।
वामादेवी सहज प्रवीन। सकल मरम जानै गुणलीन॥
पुरुषरत्नउरअन्तरबहै। क्योंनहिंज्ञानअधिकतालहै।१६९।

॥ दोहा छंद॥

निवसै निर्मल गर्भ में, तीन ज्ञान गुणवान॥
फटकमहल में जगमगे, ज्योंमणि दीप महान।१७०।

१—अर्हंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५॥

उदैवान दिनकरसमैं, पूर्व दिशा छबितेम ॥
त्रिभुवनपति सुतउरधैरे, सोहत जननी एम ।१७१।
गर्भ भार व्यापै नहीं, त्रिबली भंगन होय ॥
देहन दीपै पीतछबि, और विकार न कोय ।१७२।
ज्योंदर्पन प्रति बिंबसों, भारी कह्योन जाय ॥
त्यों जिनपति के गर्भसों, खेद न पावै माय ।१७३।
कल्पलतासी लसतअति, जननी छबि संयुक्त ॥
मंदहास कुसुमत भई, अरुफल है फलपुत्त ।१७४।
देव राजके बचनसों, अहनिश हर्षत अंग ॥
अलषरूप सेवै शची, लिये अपछरा संग ।१७५।
पूरबवत नवमास लों, पंचाश्चर्य अनूप ॥
अश्व सेन भूपालघर, किये धनद सुखरूप ।१७६।
योंसुखसों निशदिन गये, खेद नाम काहिंनाहिं ॥
यहसब पुन्य प्रभाव है, यही रहस इस माहिं ।१७७।

श्री पारश्र्व पुराण भाषा गर्भ कल्याणक वर्णन नाम पंचम अधिकार सम्पूर्णम् ॥

॥ षष्टम अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

रागादिक जलसों भरो, तन तलाव बहुभाय ॥

१—पेटके तीन बल भंग न हों ॥ २—देखो छंद ८३ आदि ८८ पर्यंत पंचम अधिकार

पारस रविदर्शत सुखै, अघ सारस उड़जाय । १ ।
गर्भ मास पूरण भये, नभ निर्मल आकार ॥
पोष मास एकादशी, श्याम पक्ष शुभवार । २ ।
बामा देवी पुव्व दिश, जन्मो जिनवर भान ॥
मुदितभयोत्रिभुवनकमल, अशुभतिमरअवसान । ३ ।
अश्वसेन नृप उदय गिर, उगयो बाल दिनेश ॥
तीनज्ञान किरणावली, लिये जगत परमेश । ४ ।

॥ पद्धड़ी छंद ॥

जन्मों जब तीर्थंकर कुमार । तिहुँलोक बढ़ो आनंदअपार ॥
दीखैंनभनिर्मल दिशअशेश । कहिंआंधी मेहनधूल लेश । ५ ।
अतिशीतल मंद सुगंध वाय । सो वहनलगी सुखशांतिदाय ॥
सबसुजनलोकहर्षविशेश । ज्योंकमलखण्डप्रगटतदिनेश । ६ ।
घंटा घन गरजे देवलोक । जोतिष घर केहरनाद थोक ॥
भवनालय बाजे सहज संख । विंतरनिवास भेरी असंख । ७ ।
येअनहदबाजे बजेजान । जिनराज जन्म अतिशयमहान ॥
बहुकलपतरोवर पहुपवृष्टि । स्वयमेवकरन लागे विशिष्टि । ८ ।
इन्द्रासन कांपे अकसमात । येकार्न किधों सारथ सुजात ॥

१—अर्थात् नवमांस ॥

२—ये कार्न अर्थात् इन्द्रासन का चान चक्र कम्पाय मान होना मानो प्रयोजन सहित पैदाहुआ सो प्रयोजन क्या जिनदेव का जन्म भूलोक में हुआहै ऐसी समय में इन्द्र का आसन पर बैठना योग्य नहीं है अविनयकी बात है ॥

जिनजन्मभयो भूलोकमाहिं। उच्चासनअब तुमजोगनाहिं ९।
आनम्रभये मणिमुकटएम। श्रीजिनप्रतिकरतप्रणामजेम॥
येचिह्नदेष इन्द्रादिदेव। तबअवधि ज्ञानबलजानभेव। १०।
निर्धारबनारस नगरथान। तीरथपति जन्मों आजआन॥
प्रभुजन्मकल्याणककरणकाज। उद्यमआरंभो देवराज। ११।
परवारसहित सबइन्द्रनाम। [1]आयेमिलप्रथम सुरेन्द्रधाम॥
नानाविधिबाहनचढ़े जेह। जिनभक्तिसलिलसिंचतसुदेह १२
सप्तांगसेन तबचलीएम। यह महाजलधि की लहर जेम॥
[1]हाथी[2]रथ[3]पाय[4]कवृषभ[5]बाजे। गाय[6]निनिर्तकिसेनासमाज। १३।
एकेक सेन में सातकच्छ। तिहिमाहिं प्रथमचउ[2]असीलच्छ॥
फिरदुगुणदुगुणसातलोंजान। इसभांतसात सेनामहान १४।
सौकोरजोर छैकोर और। अठसट्ठ लाष ऊपर वहोर॥
यहएकहस्ति सेनाप्रमान। ऐसीही सब सातों समान। १५।
तहिं[3]नागदन्तसुरआभियोग। सोकरतविक्रियानिजनियोग॥
ताप्रतिआज्ञा दीनी सुरेन्द। तिनकीनों ऐरावत गयन्द। १६।
लखयोजन मान मतंगईश। अतिउन्नतदेह उतंगशीश॥
शुभशेतबरणमनहरतकाय। लीलागतिधारै ललितपाय १७
सबलसतसुलक्षण अंगअंग। नखविद्रुमवर्ण मनोभिरंग॥

१—सौधर्म नाम इन्द्र के पास आये॥ २—अर्थात् ८४ लाख॥

३—दस प्रकार के कल्प वासी देवों में से अभियोगनवी प्रकार के देव हैं जो वाहनविक्रया करतेहैं सो नाग दत्त नाम देवने अपने नियोग हस्ती विक्रयाधारणकरी॥

गंभीर घनाघनघोषजास। बहुसुंदरसुंड सुगंध सांस। १८।
बहुलसतजुशोभाजासअंग। नहिंगिणीजाहिं जिसछबितरंग
सोकामसरूपी कामगौन। जादेखत मोहित तीनभौन। १९।
घनघोरत घंटा लंब मान। मणि घूंघर माला कंठथान ॥
सोरणपाखर सोदिपै देह। संपाजुत मानो शरद मेह। २०।
सौबदन विराजत शोभवन्त। एकेकबदन में आठ दन्त ॥
प्रतिदंतसरोवरएकदीस। सरसरहँकमलनीसौपचीस। २१।
एकेक कमलनी प्रतिमहान। पच्चीसमनोहर कमल ठान ॥
प्रतिकमल एकसौआठपत्र। शोभावरणीनहिंजायतत्र। २२।
पत्रनपर नाचैं देवनार। जगमोहित जिनकीछविनिहार ॥
नैवनवरस पोषैंकरतगान। लावन्यजलधि वेलासमान। २३।
तिसहाथी ऊपर शचीसंग। सौधर्मसुरगपति मुदितअंग ॥
आरूढ़ भयोअतिदिपतएम। उदयाचलमस्तकभानुजेम २४
चंद्रोपकचामर छत्रशीश। दँसजाति कल्पसुर सहितईश॥
ईशानप्रमुखइमदेवराज। निजनिजबाहनकोचलेसाज। २५।
परियन समेतउर हर्षभाव। जिनजन्मकल्याणककरणचाव॥
बाजेसुरदुन्दभिविविधिभेव। जैकारकरैंमिल सकलदेव। २६।

१—अर्थात् १०० ॥ २—अर्थात् १२५ ॥ ३—नए नए ॥
४—कल्प वासी देव दश प्रकारहैं इन्द्र १ समानिक २ त्रायस्त्रिंशत ३ पारिपद् ४ आत्म रक्षक ५ लोकपाल ६ अनीक ७ प्रकीर्णक ८ अभियोग ९ किल्बिष १० ॥ ५—सजाकर ॥

उपजो कोलाहल गगन थान। सब दिशि दीषैं बाहन विमान॥
आकाशसरोवर अतिगंभीर। इन्द्रादि अमरतनतेजनीर।२७
तहांविकशतमुख अपछराएम।यहखिलोकमलनीबागजेम॥
इहिंविधिदेवागमभयो जान।अवतरेबनारसनगरथान।२८।
चन्द्रादि[1] जोतषी पंच जात। दस[2] भेद भवनवाशीविख्यात॥
पुनि आठ जातके वान[3] देव। सब आये इन्द्रसमेत एव।२९।
निज निज बाहनचढ़सपरिवार।जिन जन्ममहोछवहियेधार॥
तव पुरप्रदच्छना सुरन दीन।अतिहर्षंत उरजैकारकीन।३०।
बन वीथी मारग गगन रोक। सब ठाड़े देवी देव थोक॥
सब शक्रशची मिल भूप गेह। आयेघरआंगनभरोतेह।३१।
तब इन्द्र बधू अति रंजमान। सोगैई[4] गुप्तजिन जन्मथान॥
देषी जिनमात सपूतनाम। परदच्छना दे कीनो प्रणाम।३२।
सुत रागरंगी सुखसेज मांझ। जों[5]बालक भानुसमेतसांझ॥
करजोरयुगुल सिरनाय नाय।थुतिकीनीबहुजानैनमाय।३३।
सुख नींद रचीतव शची तास। माया मय राखो पुत्रपास॥

१–चन्द्र १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारे ५

२–असुर कुमार १ नाग कुमार २ विद्युत कुमार ३ सुपर्ण कुमार ४ अग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिक् कुमार ८ वायु कुमार ९ सनत्कुमार १०

३–वान व्यन्तर देव आठ प्रकार हैं किन्नर १ किम्पुरुष २ महोरग ३ गन्धर्व ४ यक्ष ५ राक्षस ६ भूत ७ पिशाच ८

४–सो इन्द्राणी गई

५–जैसे सांझरूप माता भानुरूप बालक साथ रंगी हुई हैं

करकमलनवालकरतनलीन।जिनकोटभानुछविछीनकीन ३४
सुख उपजे जो प्रभु परस देह । कवि वानी गोचरनाहिंतेह ॥
प्रभुको मुख वारिज देष देष । हर्षे सुर रानी उर विशेष।३५।
वसु मंगल दरव विभूत सार।दिश दिव्य कुमारीअग्रचार ॥
इहिविधिसौधर्मसुरेश नार । आनोशिव कन्यावरकुमार।३६।
देषो हरिवालकचंदजाम । आनंदजलधि उरवढ़ोताम।३७।
शिरनाय इन्द्रनिजवार वार । थुतिकीनी कर जुगशीसधार॥
छवि देष नृपति नहिं होय लेश।तवसहसआंखकीनीसुरेश ॥
करनमस्कार निजगोदलीन्ह।ईशानइन्द्रशिरछत्रदीन्ह ३८।
तहां सेनत्कुमार महेन्द्र सोय । एचामर ढोलैंइन्द्र दोय ॥
ब्रह्मादि सुरगवाशी सुरेश । जै नंद विर्द बोलैं विशेश। ३९।
नाचैं सुररमणी रूपखान । गंधर्व करैं जिन सुयशगान ॥
सुरवाजे वाजैं वहुप्रकार । कर धरहिं किन्नरीवीनसार।४०।
केई सुर श्रीजिन सुभग भेष । देषैं भरलोयननिर्निमेष ॥
केई योंभाषैंसुर समाज । हमदेवजन्म फललहोआज।४१।
केई शरधायुत भये देव । मिथ्यात महाविष वम्योएव ॥
इसभांतचतुरविधिदेवसंघ।सवचलेजोतिषीपटललंघ।४२।

१–ईशान नाम दूसरे स्वर्ग के इन्द्र ने
२–सनत्कुमार नाम तीसरे स्वर्ग का इन्द्र महेन्द्र नाम चौथे स्वर्ग का इन्द्र
३–ब्रह्म नाम पांचवे स्वर्ग का इन्द्र
४–विन पलक झांपअर्थात् खुली आंख लगातार देखना
५–कल्प वाशी १ भुवनवाशी २ योतिषी ३ विन्तर ४

॥ दोहा छंद ॥

योजन सहस निन्याणवैं, सुरगिर शिखर उतंग॥
गयेसकल सुरगण तहां, भूषन भूषित अंग।४३।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

महामेरु के मस्तक भाग। पांडुक बनबहु धरै सुहाग॥
योजनसहस जास विस्तार। सुर चारण खगकरैंविहार।४४।
चहूँदिशचार जिनालयतहां। सघनसासते तरुवर जहां॥
मध्यचूलिका मुकटसरीस। सोउतंग योजनचालीस।४५।
बारह योजन जड़ विस्तार। आठमध्य अरऊरध चार॥
जाकेऊपर रजिक विमान। रोमांतर नरक्षेत्र[1] प्रमान।४६।
तिसईशान दिशाशुभ थान। मणिमय शिलासासतीजान॥
पांडुकनाम फटक उनहार। आकृतिअर्ध चन्द्रमाकार।४७।
१०० सौ योजन आयाम अभंग। विस्तरआधी आठ उतंग॥
सुरविद्याधर पूजत नित्त। भरतखण्ड जिनन्हौनपवित्त।४८।
तहां हेमासिंहासन सार। रत्न जड़त सो बलयाकार॥
धनुषपांचसौ उन्नत जोय। भूमिभाग विस्तीरणसोय।४९।
ऊपर जास अर्ध विस्तार। जाके तेज मिटै अंधियार॥

१--मध्य लोक प्रमाण

तिसहीपर पद्मासन साज। पूरवमुख थापे जिनराज।५०।
इस औसर सोहैं इमईश। मानो मेघ रत्न गिर शीश॥
धुजाकलश दर्पन भृंगार। चमरछत्र सुप्रतीक सुतार।५१।
मंगल दर्व मनोहर जहां। धरे अनादि निधन ये तहां॥
आसनदोय उभयदिश और। युगलइन्द्र ठाड़े तिहिं ठौर।५२।
चारोंदिश चारों दिगपाल। यथायोग जिन मज्जनकाल॥
शचीसुरेन्द्र अपछरा थोक। सबठाढ़े पांडुकवनरोक।५३।
चौविधि देवखड़े चहुंपास। जन्मन्हौन देखन हुल्लास॥
कियो महामंडप हरितहां। तीनलोकजन निवसैंजहां।५४।
कल्प कुसुम माला मनहार। लटकैं मधुप करैं झंकार॥
सुरवाजित्र बजैंबहुभाय। सुरभि सुगंधरही महकाय।५५।
मंगल मिलगावैं सब शची। नाचैंसुर वनिता रस रची॥
तबमज्जन आरंभ विशेश। उद्यमकियो प्रथम अमरेश।५६।

॥ दोहाछंद ॥

तहां कुबेर रतन खची, रची पैंड़का पन्त॥
मेरु शिखरसों सोहिये, क्षीरोदधि परयन्त।५७।
सुर श्रेणी सोपान पथ, पंचम सागर जाय॥

१-पैंडियोंकीपंक्ति
२-देवताओंकी श्रेणी कहिये जमाअत सीढ़ी केरस्ते पाँचवेंसागर परजाकर चंदन चर्चितकंचन कलशभर लाई.

भरलाई कंचन कलश, चंदन चरचित काय । ५८ ।
योजन एक प्रमाणमुख, वसु योजन गंभीर ॥
इहमरयादा कलशकी, जिन शासन मैं वीर । ५९ ।
मुक्तमाल मंडित लसैं, कंचन कलश महन्त ॥
नभबनिता के उरज ये, यों अति शोभावन्त । ६० ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सहस भुजासुरपति तवकरी । भूषण भूषित शोभाभरी ॥
इसऔसर हरिसोहैं एम । भूषणांग सुर तरु वर जेम । ६१ ।
कलश हाथ हरि लीने जाम । भाजनांग सम शोभा ताम ॥
तीनबार कीनो जयकार । कलशोद्धरन मंत्रउच्चार । ६२ ।
इहिंविधि श्रीसौधर्माधीश । ढाले कलश स्वामि के शीश ॥
तबसबइन्द्रकियोजिनन्हौन। अतुलउछावबढ़ोजगभौन ६३।
महा धार जिन मस्तक ढरी । मानो नभ गंगा अवतरी ॥
मुदितअसंख अमरगणतबै। जैजैकारकियो मिलसबै । ६४।
उपजोअति कोलाहलसार। दशदिश बधिरभई तिहिंवार ॥
भयोअसम औसरइहिंभाय। बचनद्वारवरणोनहिंजाय ।६५।

॥ दोहा छंद ॥

जाधारा सौं गिरिशिखर, खण्ड खण्ड होजाय ॥

१-भूषणांग कल्पवृक्ष जाति नाम २-भाजनांग कल्पवृक्ष जाति नाम

सो धारा जिन देह पै, फूल कली सम थाय। ६६।
अप्रमाण वीरज धनी, तिर्थंकर प्रभु होय॥
ताते तिनकी शक्ति को, उपमा लगै न कोय। ६७।
नीलवरण प्रभु देहपर, कलश नीर छविएम॥
नीलाचल सिर हेमके, वादल वरपै जेम। ६८।
चली न्हौंन केनीर की, उछल छटा नभ माहिं॥
स्वामिसंग अघविनभई, क्योंनाहि ऊरधजाहिं। ६९।
न्हौनछटा तिरछी भई, तिन यह उपमा धार॥
दिगवनता मुख सोहियै, करण फूल उनहार। ७०।

॥ सोरठा छंद ॥

जिंनतनपरसपवित्त, भईसकलजगशुचिकरण॥
सोधारा ममनित्त, पापहरो पावन करो। ७१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यों सुरेन्द्र मज्जन विधिठान। फिरकीनों गंधोदकन्हान॥
सोजललेय विनै विस्तरी। शांतपाठपढ़ पूजाकरी। ७२।
शक्र शची सुर आनंदभरे। यथा योग सव कारज करे॥
परदछना दीनी वहुभाय। वारम्वार नये सिरनाय। ७३।

१—भगवान के पवित्र तनको पर्सकर जोसर्वजगत कोपवित्रकरने वाली हुई सो धारा सदीव मेरे पाप हरो

॥ हरिगीत छंद ॥

सौधर्म पति अभिषेक कारन, न्हौन पीठ सुदंसनो ॥
गंधर्व गायन निरतकारक, अपछरा यश शंसनो ॥
पंचम पयोनिध न्हौनकुंड, असंख सुर सेवक जहां ॥
तिसजन्ममंगलकीबड़ाई, कहनसमरथबुधकहां।७४।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जन्म[2] न्हौन विधि पूरनभई। सकल सुरासुर देवन ठई ॥
अबइन्द्रानी। जिनवरअंग।निर्जलकियो वसनशुचिसंग।७५।
कुंकुमादि लेपन बहु लिये। प्रभुके देह विलेपन किये ॥
इहि शोभा इसऔसर मांझ। किधोंनीलगिरफूलीसांझ।७६।
औरसिंगार सकलसहकियो। तिलकत्रिलोकनाथकेदियो॥
मणिमयमुकट शची सिरधरो। चूड़ामणिमाथेविस्तरो।७७।
लोचनअंजन दियो अनूप। सहजस्वामि द्रगअंजितरूप॥
मणि कुण्डल कानन विस्तरे।किधों चंद सूरज अवतरे ७८
कंठ कंठिका मोतीहार। मुक्तिरमणि झूला उनहार॥
भुजभूषण भूषितभुजकरी।कटक मुद्रिका शोभित खरी।७९।
कटिभूषण कीनो कटि थान। मणिमय छुद्रघंटिका वान॥

१-इन्द्र न्हौनकारण है सुदर्शन मेरुकी पीठका अर्थात चौकी है
२-सर्व सुर असुर देवों की जन्म न्हौन विधि पूरण होगई जो विचारी थी

पग नेवर पहराये सार । जिन में रत्न झलक झंकार ।८०।

॥ दोहा छंद ॥

अंगअंग आभरन युत, यह उपमा तिहिंकाल ॥
सुरतरु समप्रभु सोहिये, भूषण भूपित डाल । ८१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तव इन्द्रादि लगेजैकरन । जैजिनवर सब आरत हरन ॥
त्रिभुवनभुवन दीपउनहार । धन्यदेव तेरोअवतार । ८२ ।
जैश्री अश्वसेन कुल चंद । वामानंदन जोति अमंद ।
सुखसागर केवर्धनहार । सबजग श्रेयशांतदातार । ८३॥
तुमजग भ्रमनाशन अवतरे । हमसे दासमहासुखभरे ॥
बिनरविउदयतिमिरक्यों जाय।कैसेकमलबागविकसाय।८४।
मिथ्यामत रजनी अतिघोर । मूसैं धर्म कुलिंगी चोर ॥
जो प्रभुजन्मप्रभात नथाय। तोकिमप्रजावसैंसुखपाय।८५।
ये अनादि संसारी जीव । विलखैं भोग उदैस अतीय ॥
सो दुखमेटन दया निधान ।राज वैद जनमे भगवान।८६।
भ्रम कूप वरती वहु लोय । काढ़न हार तिन्है नहिं कोय ॥
श्री मुख वचन नेजु वलधार। अव उद्धार लहैं निरधार ।८७।

१—पाप पुण्य के भोगने से विलखैं हैं ॥

आप परम पावन परमेश। औरन को शुचि करहु विशेश॥
ज्यों शशि शेत प्रभातन धरै। शेत सरूप सबन को करै।८८।
बिन सनान तुम निर्मल नित्त। अंतर बाहज सहज पवित्त॥
हममज्जनविधिकीनीआज।निजपवित्रकारणजिनराज ८९।
तुम जगपति देवन के देव। तुम जिन सुयं बुद्धि स्वैमेव॥
तुमजगरक्षकतुमजगतात।तुमविनकारणबंधुविख्यात।९०।
तुमगुण सागर अगम अपार। थुतिकर कौन जाय जनपार॥
सुक्षम ज्ञानी मुनि नहिं तरैं। हम से मंद कहा बलधरैं। ९१।
नमो देव अशरण आधार। नमो सर्व अतिशय भंडार॥
नमोसकलशिवसंपतिकरण।नमोनमोजिनतारणतरण।९२।

॥ दोह छंद॥

इंहिं विधि इन्द्रादिक अमर, सुरपदवी फललेय॥
जन्म न्हौन विधिकर चले, मानो निज शुभ श्रेय। ९३।
जन्म महोछव देख कर, सुरपति की परतीत॥
वहु सुर शरधानी भये, तज शरधा विपरीत। ९४।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद॥

तब सब देव जनम पुरथान। पूरबली विधि कियो पयान॥
चढ़ोइन्द्र ऐरावत शीश। गोद लिये त्रिभुवन पतिईश। ९५।

१—इन्द्रादि देवताओं ने मानो अपना शुभ कल्याण किया न्हौन विधि करके॥

पूरब वत दुंदभि धुनि गाज। उहिं विधि गीत निरत सब साज ॥
आये जैजै करत अशेश। पिता भवन कीनो परवेश। ९६।
मणि मय आंगण में हरि आप। हेम सिंहासन पर प्रभु थाप ॥
अश्वसेन भूपति तिहिं वार। देषो नंदन नयन पसार। ९७।
तेज पुंज निरुपम छवि देह। रोमांचित तन बढ़ो सनेह ॥
मायानींद शची तब हरी। जिन जननी जागी सुखभरी। ९८।
भूषण भूषित कांति विशाल। भर लोयन देषो जिनवाल ॥
अति प्रमोद उर उमग्यो तबै। पूरन भये मनोरथ सबै। ९९।
तब सुरेश रोमांचित काय। मात पिता पूजे मन लाय ॥
भूषण वसन भेट बहु धरी। हाथ जोर युग थुति विस्तरी। १००।
तुम जग में उदयाचल भूप। पूरब दिशि देवी शुचिरूप ॥
उदय भयो त्रिभुवन रवि जहां। तुम महिमा बुध वरण न कहां। १०१।
धन धन अश्वसेन भूपाल। जिनके जग गुरु जन्मो बाल ॥
कीरत बेल अधिक तुम बढ़ी। तीन लोक मंडप शिर चढ़ी। १०२।
धन वामा देवी जगराय। जिन जायो नंदन जग राय ॥
तीन लोक तिय सिष्टि सिंगार। धन जीवन तेरो अवतार। १०३।
तुम सम जग में और न आन। जिन देवल सम पूज प्रधान ॥
यों थुति कर हरि हिये प्रमोद। बाल दिवाकर दीनो गोद। १०४।
कही सकल पूरवली कथा। मेरु महोछव कीनो यथा ॥
तब निज नगरा विषै भूपाल। जन्म उछाह कियो तिहिं काल। १०५।
हरषत सब पुरजन परिवार। घर घर भये मंगला चार ॥

घरघरकामिनि गावैं गीत।घरघरहोंय निरतसंगीत। १०६।
मंगलीक बाजे बहु भेव । बाजन लगे सकल सुखदेव ॥
श्रीजिनभवनन्हौनविस्तार।कियेसकलमंगलआचार।१०७।
छिड़क्यौ चंदन नगर मझार । रत्न साथिया धरे सँवार॥
याचकदानसुजनसनमान।यथायोगसबरीतविधान।१०८।
इहि विध अश्वसेन नरनाह । कीनो पुत्र जन्म उच्छाह ॥
पूरन आसभयेसब लोय। दुखीदीन दीषै नहिंकोय।१०९।

॥ दोहा छंद ॥

उदय भयो जिन चंद्रमा; कुलनभ तिलक महंत ॥
सुख समुद्र बेला तजा । बढ़ो लोक परयंत । ११०।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तब बहु देवन संग विशेश । आनंद नाटक ठयो सुरेश ॥
करैं गान गंधर्व समाज । समैयोग सब बाजेसाज।१११।
देषै अश्वसेन नरनाथ। पुत्र सहित सब परियन साथ॥
प्रथमरूप नव भव दर्शाय।पहुपांजुलि खेपी सुरराय।११२।
तांडव नामनिरत आरंभ।कियो जगतजन करनअचंभ॥
नट सरूप धारो अमरेश।रंग भूमि कीनो परवेश।११३।

१—मंदिरों में न्हौन विस्तार आदि सकल मंगल आचार किये ॥
२—पुष्प अंजुली इन्द्र ने बखेरी ॥

मंगलीक सिंगार संवार। सब संगीत वेद अनुसार॥
ताल मान विधिसुहित सुभाय। रंग धरापर फेरैपाय।११४।
करैं कुसुम वरषा नभ देव। देष इन्द्र की भक्ति सुभेव॥
बीना मुरज बांसली ताल। बाजे गेयं गीतकी चाल।११५।
करैं किन्नरी मंगल पाठ। वरयां जोग बनो सब ठाठ॥
नाचै इन्द्र भमैं बहु भाय। मोरैं हाथ कंठ कटिपाय।११६।
अद्भुत तांडव रस तिहिं वार। दरसावै जन अचरजकार॥
सहस भुजा हरि कीनी तबै। भूषण भूषित सोहैंसबै।११७।
धारत चरण चपल अति चलै। पहुमी कांपै गिरवर हलै॥
भमैं मुकुट चक फेरी लेत। ताकी रतन प्रभा छविदेत।११८।
बलया कृत ह्वै झलकै सोय। चक्राकार अगन जिमि होय॥
छिनमैं एक छिनक बहुरूप। छिन सुच्छम छिनथूल सरूप११९
छिनमें निकट दिखाई देय। छिन में दूर देह धरलेय॥
छिनआकाश माहिंसंचरै। छिनमेंनिरत भूमिपरकरै।१२०।
छिन छूवै तारावलि जाय। छिनक चन्दसों परसै काय॥
इन्द्रजालवत योंअमरेश। दरसाईनिजरिद्धिविशेश।१२१।
हाथ अंगुलिन पै अपछरा। नाचैं रूप रतन की करा॥
अंगअंगभूषण झलकाहिं॥विकसतलोचनमुखमुसकाहिं१२२

१—तालके परिमाण की विधि संयुक्त भले प्रकार पांव फेरैं अर्थात नाचै हैं॥
२—गेय गीत अर्थात् गाने के योग्य गीत॥
३—इस प्रकार जोर से निर्तकरा कि धरनी कांपी और पहाड़ हिल गये.

निरत भेद विधि धारै पांव। करै कटाक्ष दिखावै भाव॥
बहुविधिकला प्रकाशैसार। सुरकामिनिदामिनिउनहार १२३
तिनसँयुक्त हरि सुरतरु एम। कल्प लता गण वेढ़ो जेम॥
यौंनाटकविधिठानअनूप। तिहुंजगशक्र कियेसुखरूप। १२४।
स्वामिजनमअतिशयपरताप। जिनवरपितासभापतिआप॥
इन्द्रमहानटनाचै जहां। तिसअवसरवरणनबुधकहां। १२५।
तबतहां मात पिताकी साष। पारस नाम सकल सुरभाष॥
राख सुरासुर सेवा योग। चले देव सब साध नियोग। १२६।

॥ दोहा छंद ॥

इहिविधिइन्द्रादिकअमर, जन्मकल्यानकठान॥
बहुविधि पुन्न उपायके, पहुँचे निजनिज थान। १२७।

॥ हरगीत छंद ॥

इन्द्रादि जन्म सनान जिनको, करन कनकाचलचढ़े॥
गंधर्व देवन सुयश गायो, अपछरा मंगल पढ़े॥
इहिंविधि सुरासुर निजनियोगै, सकल सेवाविधिठई॥
तेपास प्रभुमुभअास पुरवो, शरण सेवक नेलई। १२८।

॥ श्री पार्श्वपुराण भाषा जन्मोत्सव वर्णन नाम षष्ठम अधिकार सम्पूर्णम्॥

सप्तम अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

पारस प्रभु तज औरको, जेनर पूजन जाहिं ॥
कल्पवृक्ष को छाँड़के, बैठें थोहर छाहिं ।१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबजिन बाल चंद्रमा बढ़ें । [1]कोमलहांस किरणमुखकढ़ें ॥
छिनछिन तात मात मनहरैं।सुखसमुद्र दिनदिनविस्तरैं ।२।
अमरित इन्द्र अंगूठे देय। वही पोष पय पान न लेय ॥
देवीधाय हरष मनधरैं । मज्जनमंडन विधिसबकरैं । ३ ।
केई मणि भूषण पहराय । करैं अलंकृत प्रभुकी काय ॥
केईकामिनि करैं सिंगार। श्रीमुख चन्द्र निहार निहार । ४ ।
केई रहसवती लिय आय । हस्त कमल सों लेय उठाय ॥
मणिमय आंगन मांझ अनूप।विचरैंजिनपतिबालसरूप।५।
बहुविधि देव कुमार मनोग । बालक रूप भये वययोग ॥
घुटियागमन करैं तिनसाथ । जोनक्षत्र गणमें निशनाथ ।६।
कबहीं सैनासन सोवन्त । ऊपर दिढ़ जिनयों जोवन्त ॥

१-चित लेटकर ॥

अज्हौं मुक्ति सों केतक परें। मानो यहशंका मनधरें ।७।
कबहीं पुहुमी पै जिनराय। कंपत चरन ठवे इहिभाय ॥
सहै कि ना धरती मुझभार। शंकैउर भावन यह धार।८।
कवहींस्वामि कुदक उठचलैं। त्रिकशतमुख सबकोदुखदलैं ॥
बांधे मूठी अटपट पाय। कैसे वह छवि वरनी जाय।९।
कबहीं रतन भीत मैं रूप। झलकै ताहि गहै जग भूप ॥
जिनसोंजिननमिलैसर्वथा। करताकिधौंकहवतयहत्था।१०।
कबहीं रत्न रेत करलेत। करै केल सुर कुमर समेत ॥
कबाहिं माय बिन रुदन करेय। देषैफेर विहस हँसदेव।११।
कबही छोड़ शची की गोद। जननी अंक जाय मनमोद ॥
माता सौं मानै अति प्रीत। बाल अवस्थाकी यहरीत।१२।
यौंजिन बालक लीलाकरै। त्रिभुवन जन मन माणकहरै॥
क्रमसौंबालभारतीनाम। श्रीमुखकमललसीअभिराम।१३।
अनुक्रम भई अंगबढ़वार। तब त्रिभुवन पतिभये कुमार॥
निरुपमकांतिकलाँ विज्ञान।लावनरूपअतुलगुणथान।१४।
मतिश्रुति अवधि ज्ञानबलदेव। जानै सकल चराचरभेव॥

१–जिनराय पृथ्वी पर कंपाय कर पैर धरै हैं इस संभावन से कि धरती हमारे बोझ को उठा सकती है या नहीं यह उत्प्रेक्षा अलंकार है. ॥

२–बाल भारती कहिये तुतली बोली भगवान के मुख में शोभा देने लगी भावार्थ भगवान बोलने लगे यह स्वभाविक बात है कि बच्चे आदि में तुतली बोली बोलते हैं. ॥ ३–कला चौसठ प्रसिद्ध हैं कोषमें देखो जोपुस्तकके अंतमें है. ॥

सोमसुभाव सहजउपशंत । निर्मलक्षायक दर्शनवंत । १५ ।
इहिविध आठवर्ष के भये । तबप्रभु आप अणूव्रत लिये ॥
देवकुमार रहैं संग नित्त । तेक्षिनाक्षिन रंजैं जिन चित्त । १६ ।
कबहींगज तुरंगतन धरैं । तिनपै चढ़ प्रभु जनमन हरैं ॥
कबहींहंस मोर बन जाहिं । तिनसोंजगपति केलकराहिं । १७ ।
कबहीं जलक्रीड़ा थलगमैं । कबहीं वन विहार भूरमैं ॥
कबहींकरैं किन्नरीगान । सोप्रभुसुयश सुनैंनिजकान । १८ ।
कबहीं निरत ठवैं सुरनार । देषैं जिन लोचन सुखकार ॥
कबहींकाव्य कथारसठान । करैंगोठजिन बुध बलवान । १९ ।
बिना सिखाये बिन अभ्यास । सबविद्यासब कलानिवास ॥
योंसुखअनुभव करतमहान । भयेपासजिन योवनवान । २० ।

॥ दोहा छंद ॥

सम्पूरण जोवन समैं, प्रभुतन सोहै एम ॥
सहज मनोहर चांदकी, शरद समें छविजेम । २१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रभुके अंग पसेव न होय । सहज सदामल वरजितसोय ॥

१—सम्यक्त दर्शन तीन प्रकार हैं उपशम सम्यक दर्शन १ क्षयोपशम २ क्षायिक ३

उज्जल वरण रुधिर जिम षीर। सुसमचतुर संठानशरीर।२२।
प्रथम सारसंहनन[2] सरूप । इन्द्र चन्द्र मनहरन अनूप ॥
बिनाहेलतनसहजसुवास।प्रयहितबचनमधुरमुखजास।२३।
अतुलदेह बलधरत महान । सहसअठोतर लक्षणवान ॥
तिनकेनामलिखूंकुछजोय।पढ़तसुनतसुखसंपतिहोय।२४।

॥ हरिगीत छंद ॥

श्रीवृक्ष शंख सरोज सुस्तिक, शक्र चक्र सरोवरो ॥
चामर सिंहासन छत्रतोरण, तुरगपति नारी नरो ॥
सायर दिवायर कल्पबेली, कामधेनु धुजा करी ॥
बरबजूबान कमानकमला, कलश कच्छपकेहरी।२५।
गंगा गऊपति गरुड़ गोपुर, बेणु बीणा बीजना ॥
जुगमीन महल मृदंगमाला, रत्न दीप दिपै घना ॥
नागेन्द्र भुवन विमान अंकुश, विरछ सिद्धारथ सही ॥
भूषण पटम्बर[4] हृह हाटक, चन्द्रचूड़ा मणिकही।२६।
जम्बू तरोवर नगर सूवस, बाग जन मन भावना ॥
नौनिध नक्षत्र सुमेरु सारद, साल षेत सुहावना ॥

१–इसका टिप्पण पहले लिख आये हैं. ॥
२–वज्र वृषभ नाराच संहनन ॥
३–महान वृक्ष ॥
४–रेशमी बस्तर. ॥

अह मंगलाष्टक प्रातिहारज, प्रमुख औरविराजहीं ॥
परमितअठोतरसहसप्रभुके, अंगलक्षण छाजहीं। २७।
अंतर अनंती अतुल महिमा, कथन दूररहो कहीं ॥
वहिरंग गुणथुति करण जगमें, शक्रसेसमरथ नहीं ॥
अवऔर जनकी कौन गिणती, दीनपार न पावना ॥
परपासप्रभुकी सुयशमाला, पहरदास कहावना। २८।

॥ दोहा छंद ॥

सहस अठोतर लक्षनये, शोभित जिनवर देह ॥
किधों कल्प तरु राजके, कुसुम विराजत येह। २९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

शुभ परमाणू मय जिन अंग। नीलवरण नौं हाथ उतंग ॥
छविवरणातनाहिंपावैओर। त्रिभुवनजनमनमाणकचोर।३०।
शत संवत्सर आव प्रमाण। अतुल असा धारण गुणथान॥
शत्रुमित्रऊपर समभाव। दयासरोवर सोम सुभाव। ३१।
सागरसों प्रभुअति गंभीर। मेरु सिखर सों अधिकै धीर ॥

१-धुजा १ कलश २ दर्पण ३ भृंगार कहिये झारी ४ चमर ५ छत्र ६ सुप्रतीक कहिये ठोणा ७ ताल कहिये बींजणा. ८ ॥

२-प्रातिहार्य ८ हैं चमर १ छत्र २ अशोक वृक्ष ३ भामंडल ४ दुंदुभि ५ सिंहासन ६ पुष्प वृष्टि ७ वाणी. ८ ॥

कांतिदेष लाजैमिरगांक। तेजविलोकि छिपैरविरांक ।३२।
कल्पबिरछ सों अधिक उदार। तिहुँजग आशा पूरणहार॥
योंजिन गुणको उपमाकहीं। तीनकाल त्रिभुवनमेंनहीं।३३।

॥ दोहा छंद ॥

योंमुख निवसत पासजिन, सेवत कमला पाय[१]॥
सोलह वरष प्रमाण प्रभु, भयेजगत सुखदाय।३४।
सभासिंहासन एक दिन, वैंठेसहज जिनेन्द्र॥
सुरनरमैं प्रभुयों दिपैं, ज्योंउडगण में चन्द्र ॥ ३५।
अश्वसेन भूपाल तब, वोले अवसर पाय॥
नेहसालिल भीजे बचन, सुनो कुमर जगराय। ३६।
एक राज कन्या वरो, करो उचित व्योहार॥
वंशबेल आगे चलै, सुख पावै परवार।३७।
नाभि राजकी आसजों, भरी प्रथम अवतार॥
तथा हमारी कामना, पूरण करो कुमार।३८।
पिताबचन सुन प्रभु दियो. प्रति उत्तर तिहिंवार॥
रिषभदेव सम मैं नहीं, देखो हिये विचारि॥ ३९॥
मेरी सब सौ वर्ष थिति, सोलह भये विदीत॥
तीस वर्ष संजम समय, फिर मत कहो पुनीत॥४०॥

१–जिनके पैरों को लक्ष्मी सेवै है.॥

अल्पकाल थिति अल्पसुख, अल्प प्रयोजन काज॥
कौन उपद्रव संग्रहै, समझ देख नरराज ॥४१॥
सुन नरेन्द्र लोचनभरे, रहे वदन बिलखाय॥
पुत्र व्याह वर्जन वचन, किसै नहीं दुखदाय ।४२।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहिंविध मंदराग-जिनराय । निवसैं सब जीवन सुखदाय॥
पूरवकथित कमठ चरसींहं । पापकरत मानीनहिंचीह।४३।
मुनिहत्यावशदुर्गतिगयो । पंचम नरक वास सो लियो॥
सत्रॅहजलधितहाँ दुखसहे । वचनद्वारजोजाहिंनकहे।४४।
थिति पूरणकर छोड़ी ठौर । सागर तीन भमों फिर और॥
पशुगतिमाहिंविपतबहुभरी । त्रसथावरकीकायाधरी।४५।
इहिंविध भयो पाप अवसान । काहूजन्म क्रिया शुभठान॥
महीपालपुर सोहै जहाँ । महीपाल नृप उपजो तहां।४६।
पारस प्रभुकी वामा माय । इनको पिताभयो यह राय॥
पटराणीकिप्राणवियोग । उपजोविरहबढ़ोचितसोग।४७।
तपसी भेष धरो दुखमान । पंचागनि साधै वनथान॥
सीसजटा मृगछाला संग । भसम पीसलाई सब अंग।४८।
भ्रमत बनारसके उद्यान । आयो कष्ट करत विनज्ञान॥

१—सिंह॥ २-किसी जन्म में अच्छी क्रियाकरी ना कारण॥

इहिंअवसरश्रीपार्श्वकुमार। गएसहजवनकतरविहार।४९।
राजपुत्र वहु सुरगन साथ। गजआरूढ़ दिपै जिन नाथ॥
कर सुछंदवनकेलअनूप। चलेनगरकोआनंदरूप।५०।
देखो मग में जननी तात। तपै पंच पावक तपगात॥
सोससमीपप्रभुकोअविलोय। चिंतौचितरोषातुर होय।५१।
मैं तपसी कुलवंत महंत। जननी पिता पूज सभ भंत॥
अहोकुमरकैयहअभिमान। विनयप्रनामकरैनहिआन।५२।
इतनै ईंधन कारण जान। लकड़ी चीरन लगो अयान॥
हाथकुल्हाड़ी लीनी जवै। हितमित वचनचये प्रभुतवै।५३।
भो तपसी यह काठन चीर। यामैं युगल नाग हैं वीर॥
सुन कठोर बोलो रिसआन। भो बालकतुम ऐसो ज्ञान।५४।
हरिहर ब्रह्मा तुमही भये। सकल चराचर ज्ञाता ठये॥
मनै करत उद्धत अविचार। चीरोकाठ न लाई वार।५५
ततषिण खंडभये जुगजीव। जैनी बिन सव अदयअतीव॥
दया सरोवर जिनतबकहै। तपसी वृथा गरभ तूं वहै।५६।
ज्ञान बिना नित काया कसै। करुणा तेरे उर नाहिं वसै॥
तबसठरोषबचनफिरचयो। जननीजनकरतपसीभयो।५७।
करैनमद वश विनय विधान। और उलट खंडै मुभआन॥
पंच अगन साधूं तन दाह। रहूं एकपद ऊरध बांह।५८।

१—मैं तुम्हारी माता को जनकर तपसी हुआहूं भावार्थ मैं पुरानाहूं तुम नवीन तपसी हो॥

भूष प्यास बाधा सब सहूं। सूखेपत्र पारना गहूँ॥
ज्ञानहीनतपक्योंउचरै। क्यों कुमारमुझ निंदाकरै। ५९।
तब प्रभु वचन कहै हितकार। तुझ तपमैं हिंसाअघभार॥
छेहोंकायकेजीवअनेक। नाशहोहिंनितनाहिविवेक। ६०।
जहां जीववध होय लगार। तहां पाप उपजै निर्धार॥
पापसही दुर्गति दुख देह। यातैं दयाहीन तपयेह। ६१।
ज्ञान विनासबकायकलेश। उत्तम फलदायक नहिंलेश॥
जैसेतुस खंडन कनछार। योंअजान तपअफलअसार।६२।
अंधपुरुष वनदौ में दहै। दौर मरै मारग नहिं लहै॥
त्योंअजान उद्यम करपचै। भवदावानल सोंनहिं बचै।६३।
ऐसेही किरया विन ज्ञान। सोभी फलदायक नहिं जान॥
तथापंगलोचन बलधरै। उद्यम विन दावानलजरै। ६४।
तातैंज्ञान सहित आचार। निश्चै वंछित फल दातार॥
इहिंविधिजिनमतकेअनुसार। करउत्तमतपयहहठछार।६५।
मैं तुझ वचन कहे हितकार। तू अपने उर देख विचार॥
भलीलगैसोई करमित्त। वृथामलीन करै मत चित्त।६६।

दोहा छंद

नाग युगल सुनजिन वचन, क्रूरजीव अतिनिंद॥

१—जलकाय १ अग्नि २ भूमि ३ पवन ४ वनस्पति ५ (ये पांच प्रकार के जीव थावर हैं) त्रस ६ दो इन्द्री आदि पंचइन्द्री पर्यन्त॥

देह त्याग ततषिन भये, पदमावती धानिंद । ६७ ।
नाग युगल के भागकी, महिमा कही न जाय ॥
जिन दर्शन प्रापति भई, मरण समैं सुखदाय । ६८ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

घर आये श्री पार्स जिनंद । सुरनर नेत्र कमलनी चन्द ॥
समैंपाय तपसी तजदेह । भयोजोतषी शम्वर तेह । ६९ ॥
देखो जगमें तप परभाव । ज्ञान बिना बांधी सुरआव ॥
जेनर करैं जैन तपसार । तिन्है कहा दुर्लभ संसार । ७० ।
स्वामी मगन सुखोदधि माहिं । हर्षविनोद करतदिनजाहिं ॥
प्रभुकेइष्ट वियोगनहोय । सोग सँजोग न कबहीकोय । ७१ ।
वायपित्त कफजनित विकार । सुपनै होय न सोच विचार ॥
जरा नव्यापै तेजनजाय । नामुखकमल कभीकुमलाय । ७२ ।
होहिनहीं दुख कारन आन । पुन्यउदधि बेला भगवान ॥
योंसुखभोग करतदिनगये । तबजिन तीसवर्षकेभये । ७३ ।
नृप जैसेन अयोध्या धनी । भक्ति प्रीतप्रभु सों अतिघनी ॥
तुरगादिकबहुबस्तुअनूप । पठईविनयवचन कहभूप । ७४ ।
राज दूत चलि आयो तहां । सभा थान जिन बैठे जहां ॥
हेमासनपर सोहैंएम । हिमगिरशिखर श्यामघनजेम । ७५ ।
देखदूत रोमांचित भयो । बहुविधि चरन कमल को नयो ॥
मानोसफलजन्मनिजसार । त्रिभवनपातिपरत्यक्षनिहार । ७६ ।

धरी भेंट जो राजा दई। विनय प्रणाम वीनती चई ॥
तवपूछैतहां त्रिभुवनधनी। संपतिनैर अजोध्या तनी॥७७।
कहै दूत करयुग सिरधार। वरणे तिर्थंकर अवतार ॥
मोषगयेवरणे तिहिंठाम। सुनस्वामी चिंतैउरतास। ७८।

॥ १४ मात्रा चाल छंद ॥

सुनदूत वचन वैरागे। निज मन प्रभु सोचन लागे ॥
मैं इन्द्रासन सुख कीने। लोकोत्तम भोग नवीने। ७९।
तव त्रपत भई तहांनाहीं। क्या होय मनुष पदमाहीं ॥
जो सागर के जल सेती। नवुझी तिश्ना तिस एती। ८०।
सो डाभ अनीके पानी। पीवत अव कैसे जानी ॥
ईंधन सों आग न धापै। नदियों नाहिं समुप समापै।८१।
यों भोग विषै अति भारी। तृपतैं न कभी तनधारी ॥
जो अधिक उदै यह आवै। तौ अधिकी चाह बढ़ावें।८२।
जो इनसों तृपति विचारै। सो वैसानर घृत डारै ॥
इन सेवत जो सुख पावै। सो आकों आंव उम्हावै।८३।
ये भीम भुजंग सरीखे। भ्रम भाव उदय शुभ दीखे ॥
चाखतही के मुख मीठे। परिपाक समय कटु दीठे। ८४।
ज्यों खाय धतूरा कोई। देखै सव कंचन सोई ॥
धिक ये इन्द्री सुख ऐसे। विषवेल लगे फल जैसे। ८५।

इनही वश जीव अनादी । भव भाँवर[1] भ्रमत सवादी ॥
इनही वश सीख न मानै । नाना विध पातक ठानै । ८६ ।
थिर जंगम जीव संघारै । इनही वश झूठ उचारै ॥
पर चोरी सों चितलावै । परतिय संग शील गमावै ।८७।
परिग्रह तिस्ना विस्तारै । आरंभ उपाधि विचारै ॥
इत्यादि अनर्थ अलेखै । कर घोर नरक दुख देखै । ८८ ।
येहीसुख पर्वत केरे । जग फोरन वज्र बड़ेरे ॥
येही सब दोष भँडारे । धन धर्म चुरावन हारे । ८९ ।
मोहीजन मोहैं योंहीं । ये आदर योग न क्योंहीं ॥
इनसों ममता तज दीजै । परत्यागत ढील न कीजै ।९०।
सामान पुरुष जग जैसे । हमखोये येदिन ऐसे ॥
संयम बिन काल गमायो । कछुलेखे मैं नहिं लायो ।९१।
ममतावश तप नहिं लीनो । यहकारज जोग न कीनो ॥
अबखाली ढीलनकीजे । चारित चिंत्यामणिलीजे । ९२ ।

॥ दोहा छंद ॥

भोगबिमुखजिनराजइम, शुधकीनी शिव थान ॥
भावैं बारह भावना , उदासीन हित दान ।९३।

१—भवरूप भांवर कहिये यतियोंका भोजन तिस्का स्वादी भ्रमै है ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद

* १ अथिरभावना *

द्रव्य सुभाव विनाजगमाहि । परयैरूपकछू थिरनाहिं ॥
तनधन आदिक दीपैंजेह । कालअगनसबईंधनतेह । ९४ ।

* २ असरणभावना *

भवबन भमत निरंतर जीव । याहिनकोई सरणसदीव ॥
व्योहारै परमेठी जाप । निश्चै सरण आपको आप ।९५।

* ३ संसार भावना *

सूर कहावै जो सिर देय । खेत तजै सो अपयश लेय ॥
इसअनुसारजगतकीरीत ।सबअसारसबही विपरीत।९६।

* ४ एकत्व भावना *

तीनकाल इस त्रिभुवन माहिं। जीव संघाती कोई नाहिं॥
एकाकी सुखदुख सबसहैं । पाप पुन्न करनी फललहैं । ९७।

* ५ अन्यत्वभावना *

जितने जग संजोगी भाव । तेसब जियसों भिन्न सुभाव ॥
नितसंगीतनहीपरसोय । पुत्रसुजनपरक्योंनाहिंहोय । ९८।

* ६ अशुचिभावना *

अशुचिअस्थि पिंजर तनयेह । चाम बसन बेढ़ो घिनगेह ॥
चेतनचिरातहांनितरहै । सोविन ज्ञानगिलानिनगहै ।९९।

* ७ आश्रव भावना *

मिथ्या अविरत योग कषाय । ये आश्रव कारण समुदाय ॥
आश्रवकर्मबंध कोहेत । बंधचतुरगातिके दुखदेत । १००।

* ८ संवर भावना *

समिति गुप्ति अनुपेहा धर्म । सहन परीसह संजमपर्म ॥
येसंवर कारण निर्दोष । संवर करै जीवको मोष । १०१।

* ९ निर्जराभावना *

तपबल पूर्वकर्म खिरजाहिं । नये ज्ञानबल आवैं नाहिं ॥
यही निर्जरा सुख दातार । भव कारन तारननिर्धार ।१०२।

* १० लोकभावना *

सुयंसिद्ध त्रिभवन थितजान। कटिकर धरै पुरुष संठान॥
भ्रमतअनादिआत्माजहां।समकितविनशिवहोयनतहां१०३।

* ११ धर्म भावना *

दुर्लभ धर्म दसांग पवित्त। सुखदायक सहगामी नित्त॥
दुर्गति परत यही करगहै।देय सुरग शिव थानक यहै।१०४।

* १२ बोध दुर्लभ भावना *

सुलभ जीव को सव सुख सदा। नौग्रीवक ताईं संपदा॥
वोध रतन दुर्लभ संसार।भव दरिद्र दुखमेटन हार।१०५।
ये दसदोय भावना भाय। दिढ़ वैराग भये जिनराय॥
देह भोग संसार सरूप।सव असार जानो जगभूप।१०६।
इतनैं लोकांतिक सुर आय। पुहपांजलि दे पूजे पाय॥
ब्रह्म लोक वाशी गुण धाम।देव रिषीश्वर जिनकोनाम।१०७।
सव पूरव पाठी वुधवंत। सहज सोम मूर्ति उपशंत॥
वनिता राग हिये नाहिं वहैं।एक जन्म धर शिवपद लहैं।१०८।
तिर्थंकर जव विरकत होय। हर्षवंत तव आवें सोय॥

औरकल्यानककरैं प्रणाम।सदा सुखीनिवसैंनिजधाम।१०९।
हाथ जोर बोले गुण कूप । थुति वायक अरु शिक्षारूप ॥
धन विवेक यहधन्नसयान।धनयह औसर दयानिधान।११०।
जानो प्रभु संसार असार । अथिर अपावन देहनिहार॥
इन्द्री सुख सुपने सम दीस।सोयाही विधहैं जगदीस।१११।
उदासीन असि तुम कर धरी । आज मोह सेना थरहरी ॥
बढ़ोआजशिवरमणिसुहाग।आजजगेभविजनासिरभाग११२
जग प्रमाद निद्रा वश होय । सोवत है शुध नाही कोय ॥
प्रभु धुनि किरन पयासैं जबै। होय सचेतजगैं जनतबै।११३।
यह भव दुस्तर पारावार। दुख जल पूरत वार न पार ॥
प्रभुउपदेश पोत चढ़ धीर।अब सुखसौं जइहैं जनतीर।११४।
शिवपुर पौर भरम पट जहां। मोह मुहर दिढ़ कीनी तहां ॥
तुम बानी कूंची करधार । अब भविजीवलहैं पयसार।११५।
सुयं बुद्ध बोधन समरत्थ । तुमप्रतिपर बुध बचन अकत्थ॥
ज्यों सूरज आगे जिनराज । दीप दिखावनहै बे काज।११६।
हम नियोग औसर यह भाय । तातैं करैं वीनती आय ॥

१—और कल्यानकों में देव रिषीश्वर जो पांचवै सुरग लोकके लोकांतिक पाड़े में रहते हैं घर बैठे प्रणाम करते हैं केवल तप कल्यानक में वैराग बढ़ावन हेत आते हैं ॥

२—आप जो सुयं बुद्ध औरों के समझाने को सामर्थ हो इसकारण तुम प्रति परलोगों के बुद्ध बचन अकत्थ अर्थात् निष्फल है ॥

धरिये देव महाव्रत भार। करिये कर्म शत्रु संघार।११७।
हरयै भरम तिमर सर्वथा। सूझै सुरग मुक्ति पथ यथा॥
यों थुतिकरबहुभाव दिढ़ाय।वारवारं चरनन शिरनाय।११८।
साधु नियोग गये निज थान। लोकांतिक सुर बड़े सयान॥
अवचौविधइन्द्रादिकदेव।चढ़निजनिजवाहनबहुभेव ११६।
हर्षित उर परवार समेत। आये तृतिय कल्याणक हेत॥
सुर वनिता नाचैं रस भरी। गावैं मधुर गीत किन्नरी १२०॥
बाजैं विविध बजैं तिस वार। करैं अमर गण जैजै कार॥
सोरनकलश भरे सुरराय।विमल छीर सागर जललाय।१२१।
हेमासन थापे जिनराय। उच्छव सहित न्हौन विधठाय॥
भूषणवसन सकल पहिराय।चंदन अर्चितकीनीकाय।१२२।
इस औसर प्रभु सोहै एम। मोष वधू वर दूलह जेम॥
कहवैराग वचन जिनतवै। प्रतिबोधे परिजन जनसवै।१२३।
अति हठसों समझाई माय। लोचन भरे वदन विलषाय॥
विमला नाम पालकी साज।आनी इन्द्र चढ़े जिनराज।१२४।
पहले भूमि गोचरी राय। सात पैंडलीनी सुखदाय॥
फिर विद्याधर राजा रले। पैंड़सातही ते लेचले।१२५।
पीछे इन्द्रादिक सुरसंघ। कांधे धरी चले पुरलंघ॥
नाअति निकट नदीपै दूर। नभ मारग देषं जनभूर।१२६।

॥ दोहा छंद ॥

जिन साहब की पालकी, इन्द्र उठावन हार॥

तिसगुण महिमा कथन अब, पूरनहोउ अपार।१२७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

योंसुरनर सब हर्षित भये। अश्वनाम वनमें चलगये ॥
बड़तरुतलैशिलाशुभजहां।कीनोशचीसाथियातहां।१२८।
उतरे प्रभुअति उत्तम ठाम। शान्तभयो कोलाहल ताम॥
शत्रुमित्रऊपरसमभाव। तिणकंचनगिनएकसुभाव। १२९।
सोमभाव स्वामी उरधार। पट भूषण सब दीने डार॥
उदासीनउत्तरमुखभये। हाथजोर सिद्धन प्रतिनये। १३०।
दुविध परिग्रह तज परमेश। पंच मुष्टि लोचे सिरकेश॥
शिवकामिनिकी दूती जोय। धरी दिगंवर मुद्रासोय।१३१।

॥ दोहा छंद ॥

सोहै भूषन बसन बिन, जातरूप जिन देह ॥
इन्द्र नीलमणि को किधों, तेजपुंज शुभयेह।१३२।
पोह प्रथम एकादशी, प्रथम पहर शुभवार ॥
पद्मासन श्रीपार्स जिन, लियो महाव्रत भार।१३३।
और तीनसै छत्रपति, प्रभुसाहस अविलोय ॥
राजछोड़ संयम धरो, दुख दावानल तोय। १३४।
तब सुरेश जिनकेश शुच, छीर समुद पहुँचाय ॥

करथुति साधनियोग सब, गयो सुरग सुरराय ।१३५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अब स्वामी वनथान नियोग। तेलाथाप दियोजिन योग ॥
अट्ठाईस मूलगुण शाख। उत्तर गुण चौरासी लाख।१३६।
सब प्रभुधरे परम समचेत । अचल अंगमुख मौन समेत॥
यों वन वसत ऊपजो ज्ञान । संयम धर मनपर्यैज्ञान।१३७।

॥ सोरठा छंद ॥

लघु वै में जगपाल, कियो निर्वीरज कामदल ॥
धीरज धनुष सँभाल, तिनके पदनीर जनमूँ ।१३८।

श्रीपार्श्वपुराण भाषा श्रीजिन दिक्षाकल्याणक वर्णननाम सप्तमअधिकार संपूर्णम् ॥

॥ अष्टम अधिकार ॥

॥ सोरठा छंद ॥

जोप्रभुको यशहंस, तीनलोक पिंजरै वसै ॥
सो मम पाप विधुंस, करो पास परमेश नित ।१।

१—कामरूप सेना को निर्शक्ति करादिया भावार्थ जीतलिया ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबजिन उठे जोग अवसान । देहहेत उद्यम उरआन ॥
परम उदास अधोगतदीठ । सहजशाँतमुद्रामनईठ । २ ।
दयानीर निर्मल परिबाह । गुलमखेट पुरपहुंचे नाह ॥
लाभअलाभबराबरधार । निर्धनधनकोनाहिंविचार । ३ ।
ब्रह्मदत्त भूपति बड़भाग । प्रभुको देषबढ़ो उरराग ॥
उत्तम पात्रसकलगुणधाम । कर प्रणामपड़गाहेताम । ४ ।
हेमासन थापो नरराय । प्रासुक जल परछाले पाय ॥
आठभाँत पूजा विस्तरी । हाथजोर अंजुलि सिरधरी ।५ ।
मन तन बायक शुद्ध सरूप । नौदाता गुण संजुत भूप ॥
शुद्ध अन्नदीनो परबीन । प्रासुक मधुर दोष दुखहीन । ६ ।
उत्तम पात्र दान विधकरी । तीनभवन कीरति विस्तरी ॥
पंचाचर्यभये नृप धाम । फिर स्वामीआये बनठाम । ७ ।
करैं घोरतप साधैं योग । दर्शन करत मिटैं सबसोग ॥
अचल अंगमुख सोहै मौन । एकचित्त निजपद चिंतौन । ८ ।
ज्योंसमुद्रजलविगतकलोल । अथवासुरगिरशिषरअडोल ॥
तथानीलमणि प्रतिमा येह । यों अकंप राजै जिनदेह । ९ ।

१–पात्र को देखबुलाना १ उच्चासनपर बिठलाना २ चरणधोना ३ चरणोंदक मस्तक पर रखना ४ पूजाकरना ५ मनशुद्धरखना ६ वचन विनय रूपबोलना ७ शरीर शुद्धरखना ८ अहारशुद्ध देना ॥

॥ उक्तंच संस्कृत शार्दूल विक्रीड़ित छंद ॥

नोकिंचित्करकार्य्यमस्तिगमनं, प्राप्यंनकिंचिद्दृशो।
दृश्यंयस्यनकर्णयोःकिमपिहि, श्रोतव्यमायस्तिन ॥
तेनालम्बितपाणिरुज्झितगति, र्नासाग्रदृष्टी रहः।
सम्प्राप्तोऽतिनिरकुलोविजयते,ध्यानैकतानोजिनः। १० ।

॥ भाषाटीका ॥

हाथों मे कुछ कामकरना नहीं रहा इस कारण हाथलम्बे छोड़दिये, चलने मे हो-ने वाला कोई काम नहीं रहा इस लिये गमन त्याग दिया दोनों अखों का देखने योग कोईकाम नहीं रहा इसलिये नाककी फुंगल पर दृष्टी धरनहार भये, दोनों कानों को कुछ सुनने योग कामनहीं रहा इसलिये श्रीजिनराज अति निराकुल एकांत ध्यान में एकाग्र चित होवैठे ॥

॥ १५ मात्राचौपाई छंद

बैर भाव छाड़ो वन जीव। प्रीत परस्पर करैं अतीव ॥
केहर आदि सतावैं नाहिं। निर्विषभये भुजंग वनमाहिं।११।
शील सनान सजो शुच रूप। उत्तर गुण आभर्ण अनूप॥
तप मय धनुषधरी निजपान। तीन रत्नये तिक्षण बान।१२।
समताभाव चढ़े गजशीश। ध्यान कृपान लियो कर ईश॥
चारित रंग मही में धीर। कर्म शत्रु विजई वरवीर। १३।

१—सम्यक दर्शन १ सम्यक ज्ञान २ सम्यक चारित्र ३

॥ दोहा छंद ॥

स्वामी की सब पर दया, सबही के रछपार ।
जग विजई मोहादि रिपु, तिनके प्रभु छयकार ।१४।

॥ सोरठा छंद ॥

देषो पवन प्रचंड, दूब न षंडै दूबरी ॥
मोटे विरछ विहंड, बड़े बड़ोही बलकरैं। १५।

॥ दोहा छंद ॥

यों दुद्धर तप करत अति, धर्मध्यान पद लीन।
चार मास छदमस्त[1] जिन, रहे रागमल हीन ।१६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिवस दिक्षा बन जहां। जोग लीन प्रभु निवसैं तहां॥
काउसर्गतन विगत विरोध।ठाड़े जिनवर जोग निरोध।१७।
शम्बर नाम जोतषी देव। पूरब कथित कमठ चरएव ॥
अटक्योअंबरजात विमान। प्रभुपर रह्योछत्रवत आन।१८।
ततषिन अवधि ज्ञान बल तबै। पूरब वैर सँभालो सबै॥

१—केवल ज्ञान होनेसे पहले केवलीकी छदमस्त संज्ञाहै अर्थात् थोड़े ज्ञान वाला ॥

कोपो अधिक न थांभो जाय । राते लोचन भ्रकुटी काय । १९ ।
आरंभो उपसर्ग महान । कायर देष भजें भय मान ॥
अंधकार छायो चहुँओर । गरज गरज वरषै घनघोर । २० ।
झरै नीर मुसलोपम धार । झंझावायु वहै विकरार ॥
बूड़े गिरतरुवर वनजात । लतामूल विध्वंशानिपात । २१ ।
जलथल भयोमहोदधिएम । प्रभु निवसैकनकाचलजेम ॥
दुष्टविक्रियावल अविवेक । और उपद्रव करै अनेक । २२ ।

॥ छप्पै छंद ॥

किलै किलंत वेताल, काल कज्जल छवि सज्जहिं ॥
भौं कराल विकराल, भाल मदगज जिम गज्जहिं ॥
मुंडमाल गल धरहिं, लाल लोयन डरहिं जन ॥
मुख फुलिंग फुंकार, करैं निर्दय धुनि हन हन ॥
इहि विधि अनेक दुर्भेष धर, कमठजीव उपसर्ग किय॥
तिहूंलोकवंदजिनचंदप्रति, धूलडालनिजसीसलिय २३

॥ दोहा छंद

इत्यादिक उत्पात सव, वृथा भये अति घोर ॥

१—लाल होगई आंख ॥
२—किलकी मारकर बोलते हैं वेताल कहिये प्रेतादिक काले कज्जलकी छवि कर साजे हैं ॥

जैसे माणिक दीप को, लगै न पौन झकोर ।२४।
प्रभुचितचलो न तन हलो,टलो न धीरज ध्यान ॥
इन अपराधी क्रोधवश, करी वृथा निजहान ।२५।
पावक पकरै हाथ सों, अवश हाथ जल जाय ॥
पर के तन लागै नहीं, वाके पुन्न सहाय ।२६।
प्रानी विषय कषाय वश, कौन कौन विपरीत ॥
करत हरत कल्याण निज, जलो जलो यहरीत ।२७।
प्रभु अचिंत्य माहिमा घनी, त्रिभुवन पूजत पाय ॥
तिनके यह क्यों संभवै, सुर उपसर्ग कराय । २८ ।
इहिं विधि जो कोई पुरुष, पूछै संशय राष ॥
ताके समझावन निमत, लिखूं जिनागम साष ।२९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अवसर्पनि[1] उतसर्पनिकाल । होहिं अनंतानंत विशाल ॥
भरथ तथा ऐरावत माहिं । रहटघटी वत आवैं जाहिं ।३०।
जब ये असंख्यात परमान, बीतैं युगमे[2] खेत भूँ थान ॥

१—अवसर्पनि निगलने वाला अर्ध कल्प काल जिसमें प्रति दिन आयु और काय घटती जाय उतसर्पनि उगलने वाला अर्ध कल्प काल जिसमें प्रति दिन आयु और काय बढ़ती जांय प्रति सर्पणि काल के जिनमतियों ने ६ भाग करे हैं--सुखमा सुखमा १ सुखमा २ सुखमा दुखमा ३ दुखमा सुखमा ४ दुखमा ५ दुखमा दुखमा ६ जिनकालों की वर्ष संख्या त्रैलोक सार आदि महान ग्रंथों में देषो ॥

२—दोनों अर्थात् अव सर्पनि १ उत सर्पनि २ इस पृथ्वी क्षेत्र पर बीतैं तब हुंडा अव सर्पिणि उत्पन्न हो ॥

तब हुंडा अवसर्पणि एक। परै करै विपरीत अनेक।३१।
ताकी रीत सुनो मतिवंत। सुखमा दुखमा काल कि अंत॥
वर्षादिक को कारण पाय। विकलत्रय उपजै बहुभाय।३२।
कल्प वृक्ष विनशैं तिहिंवार। वरतै कर्म[1] भूमि व्योंहार॥
प्रथम जिनेश प्रथम चक्रेश। ताही समै होहिं इहिंदेश।३३।
विजय[2] भंग चक्री की होय। थोड़े जीव जाहिं शिवलोय॥
चक्रवर्त विकलप[3] विस्तरै। ब्रह्मवंश की उतपति करै। ३४।
पुरुष शलाका चौथे काल। अँट्ठावन[4] उपजे गुणमाल॥
नवमँ[5] आदि सोलह पर्यंत। सात तीर्थ मैं धर्म नशंत॥३५॥
ग्यारह रुद्र[6] जन्म जहँ धरैं। नौ कलिप्रिय नारद अवतरैं॥
सप्तँम[7] तेईसम गुणवर्ग। चरमजिनेश्वर को उपसर्ग। ३६।

१—भोग भूमि की विरोधी जिसमें अपने परिश्रम से खान पान आदिक सामग्री संचय की जाय॥

२—चक्री की लड़ाई में हार हो॥ ३—नये नाम फैलावे॥

४—६३ शलाका पुरुष में से चतुर्थम कालमें तीन तिर्थंकर शांतिनाथ १ कुंथनाथ २ अरहनाथ ३ सोई चक्रवर्त हुए और त्रिपृष्ट प्रथम नारायण का जीव महावीर स्वामी का जीव हुआ और आदिनाथ स्वामी प्रथम तीर्थंकर तीसरे कालमें जन्म लेकर तीसरे ही काल में मोक्ष गये इसप्रकार ५ घटकर ५८ रहे॥

५—श्री पुष्प दन्त जी ९ तीर्थंकर आदि श्री शांत नाथ जी १६ तीर्थंकर पर्यन्त अंतरालय काल में धर्म का नाश होजायगा॥

६—भीमावलि १ जितशत्रु २ रुद्र ३ विशाल ४ सुप्रतिष्ठ ५ बल ६ पुंडरीक ७ अजितधर ८ जितनाभि ९ पीठ १० सत्य वचन नय ११ ये ११ रुद्र हैं—भीम १ महाभीम २ रुद्र ३ महारुद्र ४ काल ५ महाकाल ६ दुर्मुख ७ नरकमुख ८ अधोमुख ९ ये ९ नारद हैं॥

७—सातवें सुपार्श्वनाथ तेईसवें पार्श्वनाथ अंतजिनेश्वर कहिये चौबीसवें महावीर स्वामी हुंडासर्पनि में इन तीनों को उपसर्ग होता है॥

तीजे चौथे काल मझार। पंचम मैं दीषै वढ़वार ॥
विविधि कुदेव कुलिंगी लोग। उत्तमधर्म नाशकेजोग।३७।
सवर विलालभील चंडाल। नाहरादि कुलमैं विकराल ॥
कल्कीउपकल्की कलिमाहिं। बैयालीस हों मिथ्यानाहिं।३८।
अनावृष्टि अतिवृष्टि विख्यात। भूमि वृद्धि वज्रागनि पात॥
ईतभीत इत्यादिकदोष। कालप्रभाव होंयदुखपोष। ३९।

॥ दोहा छंद ॥

यों त्रिलोक प्रज्ञप्ति मैं, कथन कियो बुधराज ॥
सोभविजन अवधार यो, संशय मेटन काज। ४०।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

तबफनेश आसन कंपियो। जिनउपकार सकल सुधकियो ॥
ततछिन पद्मावति लेसाथ। आयोजहँ निवसैजिननाथ।४१।
करप्रणाम परदक्षना दई। हाथ जोर पद्मावति नई ॥
फणमंडप कीनोप्रभुशीश। जलबाधा व्यापैनहिंईश। ४२।
नागराज सुर देख्यो जाम। भाजो दुष्ट जोतषी ताम ॥
हीनजोग[1] सूधी यहबात। भागजाय तबही कुशलात।४३।

१—हीन पुरुष के योगसूधी यह वात है कि भाग जाय इसी में कुशल है ॥

अवसवतुरत कलह मिटगये । प्रभु[1]सतम थानकथिरभये ॥
विकलपरहित चिदातमध्यान । करैंकर्म छयहेतमहान ।४४।
सात प्रकृति चौथे गुणठांन । पहले नाशकरी भगवान ॥
अवह्यांधर्म ध्यानवलधीर । तीनप्रकृति जीतीवरवीर ।४५।
[2]प्रथम शुकल पदसों परनये । खिपक श्रेणिमारग परठये ॥
प्रकृति[3]छत्तीस नेवैंछयकरी । दूसवेंलोभ प्रकृतिप्रभुहरी।४६।

॥ दोहा छंद ॥

एकादशम उलंघपद, चढ़े बारवें थान ॥
कर्म प्रकृति सोलह तहां, नाश करी अवसान ।४७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहिंविधि त्रेसठ प्रकृति निवार । घाते कर्म घातियाचार ॥
चैतअंधेरी चौदशजान । उपजोप्रभुके पंचम[4] ज्ञान । ४८ ।
लोकालोक चराचर भाव । बहुविधि पर्य्यैवंत सुभाव ॥
ते सबआन एकही वार । झलके केवल मुकरमझार । ४९ ।
भयेअनंत चतुष्टय वन्त । प्रगटी महिमा अतुल अनंत ॥

१ सातवें गुणस्थान में स्थिर होगये -२- शुक्ल ध्यान के प्रथम पद
रूप परणाव कर क्षापक कर्म श्रेणी पर थिर हो बैठे
३—ज्ञानावर्णी १ दर्शनावर्णी २ मोहनी ३ जिस्कदोभेदहै (दर्शनमोहनी १ चारित्रमोहनी २)अंतराय ४ कर्मप्रकृति की व्याख्या गोमटसार ग्रंथमे देखो ॥
४—केवलज्ञान ॥

दिव्यपरम औदारिकदेह । कोटिभानु दुतिजीतीजेह । ५० ।
अलौकीक अद्भुत संपदा । मण्डित भये जिनेश्वरतदा ॥
वचनअगोचर महिमासार । वरणन करत न पइयेपार । ५१ ।

॥ दोहा छंद ॥

पांच हजार प्रमान धनु, उपजत केवल ज्ञान ॥
अंतरिक्ष प्रभुतन भयो, ज्योंशशि अंबरथान । ५२ ।

॥ उक्तंच प्राकृत गाथा आर्याछंद ॥

जादे केवल णाणे परमो राल जिणाण सव्वाणं ।
गच्छादि उवरे चावा पञ्च सहस्साणि वसुहाउ । ५३ ।

॥ भाषा टीका ॥

केवलज्ञान होनेपर सब केवल ज्ञानियों का परम औदारिक शरीर पृथ्वीसे पांच हजार धनुष ऊपर चलता है ॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

प्रकटीरविकेवलकिरण जाम। परिफूलो त्रिभुवन कमलताम॥
आकाशअमलदीषैअनूप। दिशंविदिशभईसबविमलरूप ५४
सुरलोकबजे घंटागरिष्ट । तरुकरनलगे तहां पुहप विष्ट ॥

१—लोक से बाहर ॥

इन्द्रासनकंपेअतिगरीश। आनम्रभयेसुर मुकुटशीश।५५।
इत्यादिक बहु विधिचिहनचार। प्रभुकेवलसूचकभये सार॥
तबअवधिजोड़ जानोसुरेश। छपकरेकर्मपारस जिनेश।५६।
सिंहासन तज निजसीसनाय। प्रणभोपरोपसुप उरन माय॥
इन्द्राणीपूछे कहहुकंत। क्योंआसनतज उतरेतुरंत। ५७।
किसकारन स्वामी नयो शीश। याकोप्रतिउत्तर देहुईश॥
तबबोलेविकसत देवराज। प्रभुउपजो केवलज्ञानआज।५८।
ऐरावतगज सजसापरिवार। प्रथमेंद्रचलो आनंदअपार॥
वाजेबहुपटह पयानभेर। सबवर्णनकरत लगैअबेर। ५९।
ईशानप्रमुख सबस्वर्गनाथ। निजबाहन चढ़चढ़ चलेसाथ॥
हरिनादसुनो जोतषीदेव। चंद्रादिचलेतब पँचभेव। ६०।
भावनघर वाजेसंख भूर। इंसविधि सुर निकसे हर्ष पूर॥
वसुविंतरघरगरजे निशान।यों परियनसब कीनो पयान।६१।
योंचली चतुर विधिसुरसमाज।जिनकेवल पूजाकरनकाज॥
अंबरतजआयेअवनिमाहिं।जहांसमोसरनधुजफरहराहिं६२
जो सुरपति को उपदेश पाय।धनपतिने कीनो प्रथम आय॥
[2]वर पंचवर्णमणिमयअनूप।जगलच्मीकोकुलग्रहसरूप।६३।

॥ दोहा छंद ॥

समोसरन की संपदा, लोकोत्तर तिहुं भौन॥

१—माय समाय अर्थ में॥ २— स्वेत १ रक्त २ पीत ३ हरित ४ स्याम ५॥

वचनद्वार वर्णौं तिसै, सो बुध समरथ कौन । ६४ ।

॥ सोरठा छंद ॥

पैंथल अवसर पाय, धर्म ध्यान कारन निरख ॥
लिखूं लेश मनलाय, पढ़त सुनत आनँद बढ़ै। ६५ ।

॥ समो सरण वर्णन ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पहले गोल पीठका ठई । इन्द्र नील मणि मय निर्मई ॥
पांच कोश चौंडी परवान । उन्नत कोश अढ़ाई जान ।६६।
जाके चहुंदिश गिरदाकार । बनी पैंडका बीसहँजार ॥
हाथ हाथ पर ऊँची लसैं । नभ पर्यंत देष दुख नसैं । ६७ ।
तापर धूलीसाल उतंग । पंचरत्न[1] रज मै सर्वंग ॥
विविध वर्ण सो बलयाकार । झलकै इन्द्रधनुष उनहार।६८।
कहीं श्याम काहिं कंचन रूप । काहिं विद्रुम काहिं हरितअनूप॥
समोसरन लच्छमी को एम । दिपै जड़ाऊ कुंडल जेम ।६९।
चारों दिश तोरन बन रहे । कनक थंभ ऊपर लहलहे ॥

१—हीरा १ मोती २ लाल ३ नीलम ४ सोना ५ ॥

आगे मान भूमि है जहां । मानथंभ चारोंदिशितहां । ७० ।
तिनकीप्रथम पीठका बनी । सोलह पैड़ी मंजुल ठनी ॥
चारचार दरवाजे ठान । तीनतीन तहांकोट महान । ७१ ।
तिनमें और त्रिमेखलपीठ । तिनपै मानथंभ थिर दीठ ॥
अतिउतंग कंचन के ठये । छत्रधुजादिक सों छविछये । ७२ ।
जिनै देष मानी मद् बढ़े । उतरे मान महागिर चढ़े ॥
मूलभाग प्रतिमा मनहरें । इन्द्रादिक पूजा विस्तरें । ७३ ।
एकएक दिशचहुँ दिशठई । सजल वापिका वारिज छई ॥
नन्दादिकशुभ तिनकेनाम । चारोंदिश सोलहसुखधाम । ७४ ।
आगेखाई शोभित करी । औंड़ी अधिक विमलजलभरी ॥
रत्ननीरराजे चहुँओर । हंसकलाप करें यहिं शोर । ७५ ।

॥ दोहा छंद ॥

वलया कृत खाई बनी, निर्मल जल लहरेय ॥
किधों विमल गंगानदी, प्रभु परदछना देय । ७६ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आगे पुहुप वेल वनसार । महा सुगंध मधुप सुखकार ॥
सघनछांह सब रितुकेफूल । फूलेजहां सकल सुखमूल । ७७ ।

३—मद बढ़े मानी पुरुष जो महा मान गिरिपर चढ़े हुए थे सो नीचे उतर आये ।

याके कछु अन्तर दुति धरै। कंचन कोट प्रथम मनहरै ॥
वलयाकृति अति उन्नत जेह। मानो मानषोत्र गिरयेह।७८।
चहुँदिश सोहैं चार दुवार। रूपमई तिषने मनहार ॥
रत्नकूट ऊपर जगमगै। लाल वरण अतिसुन्दरलगै।७९।
किधोंअरुन छबिहाथ उठाय। जगलछमी नाचै विहसाय ॥
नौनिधिजहांरहैं अभिराम। पिंगलादिकहैं जिनकेनाम।८०।
प्रभुअजोग गिन दीनी छार। वे मचली सेवैं दरबार ॥
मंगल दरव एकसोआठ। धरे प्रतेक मनोहर ठाठ। ८१ ।
गावैंजिन गुण देवकुमार। और विविधि शोभा तिहिं सार ॥
विंतरदेव खड़ेदरवान। विनयहीन को देहिं न जान।८२।
यह पहले गढ़की विधिकही। आगे और सुनो अब सही ॥
गोपुर तज चारोंदिश गली। गमनहेत भीतर को चली।८३।
तहां निरतशाला दुहुँ पास। सबदिश मैं जानो सुखवास ॥
सोरनथंभ फटकमयभीत। तिषणीमणिमय शिषरपुनीत८४
सुरबनिता नाचैं तहिं एम। लावन तोय तरंगनि जेम ॥
मँदहास मुखसोहै खरी। जिनमंगल गावैं सुखभरी।८५।
बाजैं वींन बांसली ताल। महामुरज धुनि होयरसाल ॥
आगे बीथी अन्तर धरे। दोनोंदिशा धूपघट भरे। ८६ ।

॥ सोरठा छंद ॥

श्याम वरण यह जान, धूप धुवां नभ को चला।

किधों पुन्न डरमान, धूवां मिस पातग भजे। ८७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आगे चार बागचहुओर। प्रथम अशोकनाम चितचोर॥
सप्तवर्ण चंपक सहकार। येइनकी संज्ञाअविधार। ८८।
सबरितुके फल फूलन भरे। विरष वेल सों सोहत परे॥
वापीमंडपमहलमनोग। राजैं जहाँ यथा विधजोग। ८९।
चैते विरछ चारों वन माहिं। मध्य भाग सुंदर छवि छाहिं॥
जिनमुद्रामंडित मनहरैं। सुरनरनितपूजा विस्तरैं। ९०।
बाग ओट वेदी चहुँ ओर। चारद्वार मंडित छवि जोर॥
अब इस वन वेदी तैसही। गढपर्यंत गलीजिरही। ९१।
तिनमें धुजा पाँति फरराय। कंचन थम्भ लगी लहराय॥
दशप्रकारआकार समेत। तिनकेभेदसुनो सुखहेत। ९२।
माला वसन मोर अरविंद। हंस गरुडहरिवृषभ गयंद॥
चक्रसमेतदशाचिहनमनोग। धुजादुकूलनिसोंहैंजोग। ९३।
येदश एकभांत की जान। एक एकसोंआठ प्रमान॥
दशसैअसी सबै मिलभई। एक दिशामें सबवरनई। ९४।
चारों दिशकी जोड़ सरीस। चारहजार तीनसे वीस॥
यहपरमिताजिनशासनमाहिं। अतिविचित्रशोभाअधिकाहिं

१—एक प्रकार का वृक्ष जिसमें प्रतिमा का चिन्ह होता है॥

हालैं धुजा पवन बस येह । जिन पूजन भवि आये जेह ॥
पंथखेद तिनको मनआन । करत किधों सतकार विधान।९६।
मानथंभ धुजथंभ अनूप । चैत विरछ वेदी गढ़रूप ॥
इत्यादिक ऊँचे इकसार । जिन तनतैं बारह गुणधार ।९७।
आगे रजत कोट निर्मान । तुंगकोट अति धवल महान ॥
किधों सुयश प्रभुशेतप्रकास । फेरीदेयफिरो चहुँ पास ।९८।
पूरव वत दरवाजे चार । रत्नमई अनुपम छविधार ॥
नौनिधिमंगलदरवसमाज । तोरनप्रमुखऔरसवसाज।९९।
प्रथमकोट वर्णन समजान । ठाड़े भवन देव दरवान ॥
यासोंलगी और अबगली । चारों तरफ एकसीचली।१००।
कल्पवृक्ष बनराजै तहां । दश विधि कल्पतरोवर जहां ॥
भूषण बसन लगे जिनडार। शोभा कहत न लहियेपार।१०१।
मध्यभाग जिन विंव समेत । सिद्धारथ तरुवर छबिदेत ॥
चहुंदिशबेदीचहुंदिश द्वार । रचनाऔरअनेकप्रकार ।१०२।
इस बेदी के बारह भाग । आगे फटक कोटलों लाग ॥
अतिविचित्रमहलनकीपांति।जिनसिररत्नकूटबहुभांति।१०३
चंद्रकांतिमणिभासुर भीत । तोरणमय तहां थंभ पुनीत ॥
सुरनरनागरमैंजिनमाहिं । किन्नरगण बहु केलकराहिं।१०४
वीथी मध्यदेश शुभरूप । पद्मराग मणिमय नव रूप ॥
धुजाछत्रघंटाछबिदेहिं । जिनमुद्रासों मन हरलेहिं ।१०५।
आगे तृतिय कोट वनएम । फटक मई निर्मल नभ जेम ।

अतिउतंगसोवलयाकार।लालरतनमणिनिर्मितद्वार।१०६।
और कथन पूरव वत जान। ठाढ़े सुरग देव दरवान॥
महामनोहरलोचनहार।अनुपमशोभाअचरजकार।१०७।
अवसुनमध्यभूमिकीकथा। फटककोट भीतर विधियथा॥
गढ़सोंप्रथमपीठलगलगी॥फटकभीतसोलंहजगमगी।१०८
तिनपै रत्न थंभ छवि देहिं। प्रभाजाल सों तम हर लेहिं॥
तिनहींपै श्रीमंडप ठयो। फटक मई नभ में निर्मयो।१०९।

॥ सोरठा छंद ॥

याश्री मंडपमाहिं, निराबाध तिहुँजगवसै॥
भीरहोय तहां नाहिं,त्रिभवनपतिअतिशैअतुल।११०।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद॥

भीतन बीच गली जेरही। बारहसभा तहां जिनकही॥
बैठेमुनिअपछरअर्जिया।जोतिपवानअसुरसुरतिया।१११।
भावन विंतर जोतिषि देव। कल्प निवासी नरपशुएव॥
तिन में प्रथम पीठकाठई। अनुपम वैडूरज मणिमई।११२।
मोरकंठ वत आभाजास। सोलह पैंडसाल चहुँ पास॥
बारहसभामहादिशचार।तिनकोंयहपथसोलहसार।११३।
मंगल दरव जहां सबधरे। यक्षदेव सेवक तहां खरे॥

धर्मचक्रतिनकेसिरदिपै। जिनकोदेषदिवाकरछिपै।११४।
तापर दुतिय पीठका बनी। चामीकर मयराजत घनी॥
मेरुसिंगवत उन्नति जेम। जगमगाय मंडल रवितेम।११५।
आठधुजा आठोंदिश जहाँ। तिन शोभा वर्णनबुधकहां॥
तिनमैंआठचिहनचित्राम।चक्रगयंदबृषभअभिराम।११६।
वारिज बसन केहरी भूप। गरुड़ माल आकार अनूप॥
मंदपवनबसहालैंजेह। किधौंपापरजझारतयेह।११७।
तापर तृतिय पीठका और। तीन मेषला मंडित ठौर॥
सर्वरतनमयझलकतषरी॥किरणजासदशादिशविस्तरी ११८
गंध कुटी जहां बनी अनूप। पंच रत्न मय जड़ितसरूप॥
जाकेचारद्वार चहुँओर। झलकैंमाणक हीराहीर।११९।
तीनपीठ सिर सोहतषरी। किधौं त्रिजगछवि नीचीकरी॥
परमसुगंध न वरनीजाय। सुन्दरसिखरधुजाफहराय।१२०।
तहां हेम सिंहासन सार। तेजसरूप तिमर क्षयकार॥
नानारतनप्रभामैंलसैं। जगलछमीप्रतिकिरणनहसैं।१२१।
वचन गम्य नाहिं शोभा जहां। अन्तरीक्ष राजैं प्रभुतहां॥
त्रिभुवनपूजतपार्सजिनेश।ज्योंजगशिषरसिद्धपरमेश।१२२

॥ दोहा छंद

समोसरन रचना अतुल, ताकोअति विस्तार।

संपति श्री भगवान की, कहत लहत को पार। १२३।

॥ सोरठा छंद ॥

जिन वरणन नभ माहिं, मुनि विहंग उद्यमकरें॥
पै उड़पार न जाहिं, कौन कथा नरदीनकी। १२४।

॥ अष्ट प्रातिहार्य वर्णन ॥

॥ हरिगीत छंद ॥

राजत उतंग अशोक तरुवर, पवन प्रेरत थरहरे॥
प्रभु निकटपाय प्रमोद नाटक, करत मानो मनहरे॥
तिसफूल गुंछत भ्रमर गुंजत, वहीतान सुहावनी॥
सोजयोपासजिनेन्द्र पातग, हरनजग चूड़ामनी॥ १२५।
निज मरण देष अनंग डरपो, शरणढूंढ़त जगफिरो।
कोईनराषै चोरप्रभुको, आय पुनि पायन गिरो॥
योंहारानिज हथयार डारे, पुहुपै वर्षा मिस भनी॥
सोजयोपास जिनेन्द्र पातग, हरणजग चूड़ामनी॥ १२६।
प्रभुनील अंग उतंग गिरतें, वाणि शुचि सीताढली॥
सोभेद भ्रम गजदंत पर्वत, ज्ञान सागर में रली॥
नयसतैं भंग तरंग मंडित, पाप ताप विध्वंशनी॥

सोजयोपास जिनेन्द्र पातग, हरनजग चूड़ामनी॥१२७।
चंद्रार्चि चयछवि चारु चंचल, चँमर वृन्द सुहावने ॥
ढोलैं निरंतर यक्ष नायक, कहत क्यों महिमा बने ॥
यहनील गिर के शिषरमानो, मेघ झर लागी घनी ॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी॥१२८।
हीराजवाहर षचित बहु विधि, हेमें आसन राजही ॥
तहिंजगत जनमनहरन प्रभुतन,नील वर्ण विराजही ॥
यहजटिल वारिज मध्य मानो, नीलमणि कर्णिकावनी॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी॥१२९।
जग जीत मोहमहान जोधा, जगत में पटहा दियो ॥
सोशुक्ल ध्यान कृपानबल, जिनविकट वैरीवश कियो ॥
येबजत विजय निशान दुंदुभि, जीत सूचै प्रभुतनी॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी। १३०।
छदमस्त पदमें प्रथम दर्शन, ज्ञान चारित आदरे॥
अबतीन तेईछत्र छलसों, करत छाया छविभरे ॥
अति धवल रूप अनूप उन्नत, सोम बिंब प्रभाहनी ॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी।१३१।
दुतिदेष जाकी चांद शरमें, तेज सों रवि लाजए ॥

१—चमर समूह ऐसे सुहावने हैं जैसे चन्द्र किरण समूह छवि और सुन्दर चंचल हैं ॥ २—कर्णिका फूल की डोडी का जीरा ॥
३—चन्द्र बिंब प्रभाह को मारने वाली ॥

अवप्रभा मंडल जोग जगमें, कौन उपमा आजए ॥
इत्यादि अतुल विभूत मंडित, सोहिये त्रिभुवनधनी॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी।१३२।
योंअसम महिमा सिंधुसाहब, शक्रपार न पावही ॥
तजहास भयतुम दासभूधर, भगति वशयश गावही॥
अबहोउ भवभव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहूँ ॥
करजोर यह वरदान मांगूं मोषपद यावत लहूँ। १३३।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यहविध समो सरन मंडान । कियो कुबेर यथा विधथान ॥
आयेसुर वर्षावत फूल । जैजैकार करत सुख मूल।१३४।
अति प्रसन्नता सब विध भई । हरषत तीनप्रदक्षना दई ॥
धूलसालि मैं कियो प्रवेश । चक्रभयो छविदेपसुरेश।१३५।
मुदित महर्धिक देवनसाथ।जिन सनमुख आयोसुरनाथ ॥
हस्तकमल जोरेअमरेश । देषेद्रगभर पार्सजिनेश। १३६।
मणिउतंग आसन परईश । मानो मेघरत्न गिरशीश ॥
फैलरहीतनकिरणकलाप।कोटभानुसोंअधिकप्रताप।१३७।
विकसतचितरोमांचितकाय । प्रणमोचरनसीसभुमिलाय॥
मणिझारीभरतीरथतोय । पूजेमघवाजिनपददोय।१३८।

१—बड़े रिद्धि वाले ॥

सुर्ग सुगंध सों भक्तिबढ़ाय। अर्चें इन्द्र जिनेश्वर पाय॥
मुक्ताफल मय अक्षत लिये। पुंजपरमगुर आगे दिये।१३९।
पारजात मंदार मनोग। पुहुप चढ़ाये जिनवर जोग॥
सुधापिंड चरुलेय पवित्त। पूजाकरी शक्र धर चित्त।१४०।
रत्न प्रदीप रवाने षरे। श्रीपति पाय शचीपति धरे॥
देवलोक की अगर अनूप। पास चरन षेई सुरभूप।१४१।
कल्प तरोवरके फलरँजे। जगपति पाय पुरंदर जजे॥
सर्बदरवधरकरपरनाम। दीनोंइन्द्रअरघअभिराम।१४२।

॥ दोहा छंद ॥

करजिन पूजा आठ विध, भावभक्त बहुभाय॥
अवसुरेश परमेश थुति, करत सीस निजनाय।१४३।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

प्रभुइसजग समरथ नाहिं कोय। जापैयश वर्णन तुम होय॥
चारज्ञान धारी मुनिथके। हमसे मंदकहा करसकें।१४४।
यह उर जानत निश्चै कीन। जिन महिमा वर्णन हमहीन॥
पैतुम भक्तकरै बाचाल। तिसवस होय गहूँगुणमाल १४५।
जै तिर्थंकर त्रिभुवन धनी। जगचंद्रोपम चूड़ामनी॥
जै जै परम धर्म दातार। कर्म कुलाचल चूरन हार।१४६।

जै शिव कामिन कंत महंत। अतुल अनंत चतुष्टय वंत॥
जैजगआसभरनबड़भाग।शिवलक्ष्मीकेसुभगसुहाग१४७
जै जै धर्म धुजा धरधीर। सुरग मुक्ति दाता वरवीर॥
जै रतनत्रिय रत्न करंड। जैजिन तारन तरन तरंड।१४८।
जै जै समोसरन सिंगार। जै संशयवन दहन तुसार॥
जै जै निर्विकार निर्दोष। जै अनंत गुण माणक कोष।१४९।
जैजै ब्रह्म चरज दल साज। कामसुभट विजई भटराज॥
जैजैमोह महानगकरी। जैजैमद कुंजर केहरी। १५०।
क्रोध महानल मेघ प्रचंड। मान महीधर दामनि डंड॥
मायावेल धनंजय दाह। लोभ सलिल सोषक दिननाह१५१
तुमगुणसागर अगमअपार। ज्ञानजहाज न पहुंचेपार॥
तटहीतटपर डोलतसोय। स्वारथसिद्ध तहांहीहोय। १५२।
प्रभुतुम कीर्ति वेलबहु वढ़ी। जतन विनाजग मंडपचढ़ी॥
औरअदेव सुयशनितचहैं। येअपनेघरही यशलहैं।१५३।
जगत जीव घूमें विनज्ञान। कीनो मोह महा विषपान॥
तुमसेवाविषनाशनजरी।यहमुनिजनमिलनिश्चैकरी।१५४
जन्मलता मिथ्यामतमूल। जामनमरनलगे जिमफूल॥
सोकबहीविनभक्तिकुठार। कटैनहींदुखफलदातार। १५५।
कल्पतरोवर चित्रावेल। काम पोरसा नौनिधि मेल॥
चिंत्यामणिपारसपाषान। पुन्नपदारथ औरमहान। १५६।

येसवएक जन्म संजोग । किंचित सुख दातार नियोग ॥
त्रिभुवननाथतुमारीसेव । जन्मजन्म सुखदायकदेव । १५७ ।
तुमजगबांधव तुमजगतात । असरनसरनविरदविष्यात ॥
तुमजगजीवनकेरछपाल । तुमदातातुमपरमदयाल । १५८ ।
तुमपुनीत तुमपुरुषपुरान । तुमसबदर्शी तुमसबजान ॥
तुमजिनयज्ञपुरुषपरमेश । तुमब्रह्मातुमविष्णुमहेश । १५९ ।
तुमहीजगभरता जगयान । स्वामिस्वयंभू सुखअमलान ॥
तुमविनतीनकालतिहुंलोय । नहिंनहिंसरनजीवकोकोय १६०
तिस कारन करुणा निधनाथ । प्रभुसनमुख जोरे हमहाथ ॥
जबलोंनिकट होयनिर्वान । जगनिवास छूटैदुखदान । १६१ ।
तबलों तुम चरणांबुजदास । हमउर होउयही अरदास ॥
औरनकुछ बंछाभगवान । यहदयालु दीजैवरदान । १६२ ।

॥ दोहा छंद ॥

इहिविधि इन्द्रादिकअमर, करबहु भक्तिविधान ॥
निजकोठे बैठेसकल, प्रभुसनमुख सुखमान । १६३ ।
जीतकर्म रिपु जे भये, केवल लब्धि निवास ॥
तेश्रीपारसप्रभु सदा, करो विघन घननास । १६४ ।

श्री पार्श्व पुराण भाषा भगवत ज्ञान कल्याणक वर्णन नाम अष्टम अधिकार
॥ सम्पूर्णम् ॥

॥ नवम अधिकार ॥

॥ सोरठा छंद ॥

पारस प्रभुको नाउँ, सार सुधारस जगत में ॥
मैं याकी बलि जाउँ, अजर अमर पदमूल यह । १ ।

॥ दोहा छंद ॥

बारह सभा सुथान मध, यों प्रभु आनंद हेत ॥
यथाकमलनी षंडको, शशि मंडल सुख देत । २ ।
विकसतमुख सुरनर सकल, जिनसन्मुख करजोर ॥
निवसैं प्यासे अमृत धुनि, ज्यौंचात्रक घनओर । ३ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तब गणराज स्वयंभू नाम । चार ज्ञान[1] धारी गुण धाम ॥
करप्रनाम पारसप्रभुओर । विनतीकरी करांजुलिजोर । ४ ।
भो स्वामी त्रिभुवन घरयेह । मिथ्या तिमरछयो अतिजेह ॥
भूलेजीव भ्रमैंतामाहिं । हितअनहित कुछसूझै नाहिं । ५ ।
श्रीजिन वाणी दीपक लोय । ताबिन तहां उदोत न होय ॥

१—मति १ श्रुति २ अवधि ३ मनपर्य्य ४ ॥

तातैंकरुणानिध स्वयमेव। करउपदेश अनुग्रह देव। ६।

॥ गणधर प्रश्न ॥

जानन जोगकहा है ईश। गहन जोग सो कह जगदीश॥
त्यागनजोग कहोभगवान। तुमसब दर्शीपुरुष प्रमान। ७।
कैसे जीव नरक में परै। क्योंपशु योनिपाप दुख भरै॥
काहेसों उपजे सुर लोय। कौनकर्म तें मानुष होय। ८।
कौनपाप फल जन्मै अन्ध। बहरे कौन क्रिया संबन्ध॥
किसअघ उदय होयनरपंग। गूंगेकिस पातग परसंग। ९।
कौनपुन्न तें दिरब अतीव। क्योंयह होय दरिद्री जीव॥
पुरुषवेदकिस कर्मउदोत। नारिनपुंसक किसविधहोत।१०।
किसआचरण बड़ीथितिधरैं। क्योंकर अलप आयुधरमरैं॥
भोगहीन अरुभोग समेत। सुखीदुखी दीषैं किसहेत। ११।
किसकारन मूरख मतहीन। क्योंउपजै पण्डित परवीन॥
किसकारन तैंहोय सरोग। किसअधर्म तैं पुत्रवियोग। १२।
विकल शरीर पाप दुखसहै। नीचऊंच कुल कैसे लहै॥
किनभावनभव तिथिविस्तरै। भवथितभेद कहाकरकरै।१३।
क्योंकर होय सुरग मैं इन्द्र। कैसे पद पावै अहमिंद्र॥
चक्रीपदकिस पुन्नउदोत। किमबांधै तिर्थंकर गोत। १४।
इत्यादिक यह प्रश्न समाज। इनको उत्तर कहजिन राज॥
तुमसब संशयहरन जिनेश। जैसेभव तम दलनदिनेश।१५।

॥ दोहा छंद ॥

तबश्री मुख वानी विमल, विन अच्चर गंभीर ॥
महामेघ की गरज सम, पिरीहरन जगपीर । १६ ।
यथा मेघजल परन में, निंवादिक रस रूप ॥
तथासर्व भाषा मई, श्री जिन वचन अनूप । १७ ।
तालु होठ सपरस विना, मुख विकार विनसोय ॥
सवभापा मय मधुरतर, श्री जिनकी धुनिहोय । १८ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

छहोंदरव पंचासातिकाय । साततत्व नौपद समुदाय ॥
जाननजोग जगतमेंयेह । जिनसौंजाहिं सकलसन्देह । १९ ।
सवविध उत्तम मोष निवास । आवा गमनमिटै जिहिंवास ॥
तातेंजे शिव कारन भाव । तेई गहन जोग मनलाव ।२० ।
यह जगवास महा दुखरूप । तातैं भ्रमत दुखी चिद्रूप ॥
जिनभावन उपजैसंसार । तेसव त्यागजोग निर्धार । २१ ।
नरकादिक जग दुख जावंत । पापकर्म वशतें वहुभंत ॥
सुरगादिक सुखसंपतिजेह । पुन्नतरोवर कोफलतेह । २२ ।

॥ दोहा छंद ॥

इहि विधि प्रश्न समाजको, यह उत्तर सामान ॥

अववि शेष इनको लिखूं, यथाशक्ति कुछ जान । २३ ।
जीव अजीव विशेष विन, मूल दरव ये दोय ॥
इनही को फैलावसव, तीनकाल तिहुँ लोय । २४ ।
चेतन जीव अजीव जड़, यह सामान सरूप ॥
अनेकांत जिनमतविषैं, कहे यथारथ रूप । २५ ।
दरव अनेकन यातमक, एक एक नय साध ॥
भये विविध मत भेदसों, जगमैं वड़ी उपाध । २६ ।
जन्म अन्ध गजरूप जों, नहिं जानैं सर्वंग ॥
त्यों जगमें एकांत मत, गहै एकही अंग । २७ ।
ता विरोध के हरन को, स्याद वाद जिनवैंन ॥
सव संशय मेटन विमल, सत्यारथ सुखदैंन । २८ ।
सात भंग सों साधिये । दरव जात जामाहिं ॥
सधै वस्तु निर्विघन तव, सवदूषण मिटजाहिं । २९ ।

॥ घनाक्षरी छंद ॥

अपने चतुष्टै की अपेक्षा द्रव्य अस्ति रूप,
परकी अपेक्षा वहुनासति वषानियैं ॥
एकही समैं सो अस्ति नासति सुभाव धरैं,

१—अनेक धर्म कर के ॥
२—द्रव्य अनेक नय सरूप हैं भावार्थ अनेक नयकर सधै हैं ॥
३—स्याद् वाद जिन वाणी ॥
४—सातभंग सरूप—अस्ति १ नास्ति २ अस्तिनास्ति ३ अवक्तव्य ४ अस्तिअवक्तव्य ५ नास्तिअवक्तव्य ६ अस्तिनास्तिअवक्तव्य ७ ॥

ज्यों है त्यों न कह्यो जाय अवक्तव्यमानिये,
एकबार अस्ति नास्ति कह्योजाय कैसें तातै,
अस्ति नास्ति अवक्तव्य ऐसें परवानिये,
आप पर द्रव्यादि चतुष्टै की अपेक्षा करि,
अस्तिनास्ति अवक्तव्य वक्तव्य सुमानिये। ३०।

॥ दोहा छंद ॥

इहि विध ये एकांतसो, सात भंग भ्रम खेत ॥
स्याद्वादवै रुपधरैं, सब भ्रम नाशन हेत। ३१।
स्यादशब्द को अर्थाजिन, कह्योकथं चितजान॥
नागरूप नयविष हरन, यहजग मंत्र महान। ३२।
ज्योंरस विद्धकुधातु जग, कंचन होय अनूप॥
स्यादवाद संजोगतें, सबनय सत्य सरूप। ३३।

॥ जीव विषै सातों भंग निरूपण॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

दरव दिष्टि जियनित्त सरूप। पर्यै न्याय अथिर चिद्रूप॥

१—एक धर्म के पक्षपाती सप्त भंग नयभ्रम हेतु हैं स्याद्वादि अर्थात् अनेक धर्म के विरोधि रहित से सबभ्रम नाशन हेतु हैं॥ २—विशेष रहित ३—रसशीघ्र ॥

नित्यानित्य कथंचितहोय। कहोनजायकथं चितसोय।३४।
नित्य अबाचि कथंचितवही। अथिरअबाच कथंचितसही॥
नित्यानित्य अबाचकजान। कहतकथंचितसबपरवान।३५।
इहिंविध स्यादवाद नयछाहिं। साधोजीव जैनमत माहिं॥
औरभांतिविकलप जेकरैं। तिनकेमत दूषणविस्तरैं। ३६

* जीव निरूपण *

जीव नाम उपयोगी जान। करता भुगता देह प्रमान॥
जगतरूप शिवरूप अरूप। ऊरधगमन सुभावसरूप।३७॥

॥ सोरठा छंद ॥

ये सब नौ अधिकार, जीव सिद्ध कारन कहे॥
इनकोकुछ विस्तार, लिखूं जिनागम देषकै। ३८॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद॥

* १ जीव कथन *

चार भेद व्योहारी प्रान[१]। निश्चै एक चेतना जान॥
जोइनसोंनित जीवतरहै। सोईजीवजैन मतकहै। ३९।

॥ सोरठा छंद ॥

प्रथम आव अवधार, इन्द्री सांस उसांसबल॥

१—बल ३ हैं मन १ बचन २ काय ३॥

मूल प्राण ये चार, इनके उत्तर भेद दसैं । ४० ।

॥ दोहा छंद ॥

पांचैं प्राण इन्द्रीजनत, तीनैं भेद बल प्रान ।
एकसांस ऊसांसागिन, आवसहित दसैं जान । ४१

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सैनी जीव जगत में जेह । दसौं प्रान सौं जीवैं तेह ॥
मनसौं रहित असेनीजात । तेनौंप्रान धरैं दिनरात । ४२ ।
कान विना चौ इन्द्री जिते । आठप्रानके धारक तिते ॥
तेइन्द्रीके आँख न भनी । तातैंसातैं प्रानको धनी । ४३ ।
नासा विन वेइन्द्री जीव । तिनसब के षटप्रान सदीव ॥
जीभवचन वर्जिततनजास । ऐकेन्द्रीचहुँ प्राननिवास ।४४।

॥ दोहा छंद ॥

इहिंविध जीवअजीव सब, तीनकाल जगथान ॥
सत्तासुख अवबोध चित, मुक्त जीव के प्रान । ४५ ।

१- मुक्ति गये जीव के ये ४ प्रान हैं सत्ता अर्थात् होना १ सुख २ अवबोध अर्थात् ज्ञान ३ चित अर्थात् चेतन स्वरूप ४ ॥

* २ उपयोगकथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

दोप्रकार उपयोग बखान। दर्शन चार आठ विधज्ञान ॥
चक्षु अचक्षु अवधिअवधार। केवैलयेसब दर्शनचार।४६।
अबसुनवसुविधज्ञानाविधान।मतिश्रुतिअवधि ज्ञानअज्ञान
मनपर्यै केवल निर्दोष। इनकेभेद प्रतक्षपरोष। ४७।
मतिश्रुति ज्ञान आदिके दोय। येपरोष जानै सबकोय ॥
अवधिऔर मनपर्यैज्ञान। एक देशपरत्यक्ष प्रमान। ४८
केवलज्ञान सकल परत्यक्ष। लोकालोक विलोकनचक्ष ॥
जहांअनंत दरबपरयाय। एकवारसब झलकैंआय।४९।
दर्शन चार आठ विधि ज्ञान। ये व्योहार चिन्हजी जान॥
निश्चैरूप चिदातमयेह। शुद्धज्ञान दर्शन गुणगेह। ५०।

* ३ कर्ताकथन *

कैल्पित असदभूत व्यौहार। तिसनयघट पटादि कर्तार ॥

१—चक्षु इंद्री समान है

२—झूठी असभूत विवहार नय कर कै यह जीव घट पट आदि वस्तुओं का कर्ता है और अनुप चारित अयथारथ रूप विवहार नयसैं कर्म पिंड का करता है अशुद्ध निश्चै नय कर कै राग दोष का हरता है शुद्ध निश्चै नय करके शुद्ध भाव कर्ता है ॥

अनुपचरित अयथारथरूप। कर्मपिंडकरता चिनरूप।५१।
जब अशुद्ध निश्चै बलधरै। तबयह राग दोष को हरै॥
यहीशुद्ध निश्चैकरजीव। शुद्धभाव करतार सदीव।५२।

* ४ भोगताकथन *

॥ सोरठा छंद ॥

प्रानी सुख दुख आप, भुगतै पुद्गल कर्म फल।
यह व्योहारी छाप, निश्चै निजसुख भोगता।५३।

* ५ देहमात्र कथन *

॥ दोहा छंद ॥

देहमात्र [१]व्यवहार कर, कह्यो ब्रह्म भगवान॥
दरवित नय की दिष्टिसों, लोक प्रदेश समान।५४।

॥ अडिल छंद ॥

लघुगुर देह प्रमान जीव यह जानये।

१—बिवहार करके॥

सोविथार संकोच शक्ति सों मानये ॥
जोंभाजन परवान दीपदुति विस्तरै।
समुदघात विनराम यहीं उपमा धरै। ५५।

* समुदघात कथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तेजस कारमान जुतभेस। बाहर निकसैं जीव प्रदेस ॥
छाड़ैं नहीं मूलतनठाम। समुदघात विधयाको नाम।५६।
सातँभेद सब ताके कहे। गोमठसार देखसर दहे॥
प्रथमवेदना नामवषान। दुतिय कषायेनाम उरआन।५७।
तन विकुर्बनातीजा येह। चौथा मारैणांत सुन लेह॥
पंचमतेजस संज्ञाजान। षष्टम आहारक अभिधान।५८।

॥ १५ मात्रा अर्ध चौपाई छंद ॥

केवल समुँदघात सातमा। ऐसीशक्तिधरै आतमा। ५९।

* १ वेदना समुदघात *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

दुसह वेदना के वश जहां। जीवप्रदेश कढ़त हैं जहां॥

१—जीव के दो भेष हैं तेजस कहिये तेजमान १ कारमान कर्मपिंडसंयुक्त २

किसीजीवकै हो परवान। पहलासमुद घातयहजान।६०।

* २ कषाय समुद घात *

जबकाही रिपुकरण विध्वंश। बाहरजाहिं जीव के अंश॥
अतिकषाय सों हो है तेह। दूजा समुदघातहै येह। ६१।

* ३ विकुर्वनासमुदघात *

नाना जाति विक्रिया हेत। निकसैं ब्रह्म प्रदेश सचेत॥
देवनारकी के यह होय। तीजा समुदघात है सोय।६२।

* ४ मारणांतसमुदघात *

किसी जीव के मरते समैं। हंसअंश तन बाहर गमैं॥
बांधीगति के परसन काज। चौथाभेद कहाजिनराज।६३।

* ५ तेजस समुदघात *

जो मुनि के कछु कारनपाय। उपजे क्रोधन थांवोजाय॥
तेजसतनको औसर यही। वामकंध सों प्रघटै सही।६४।
ज्वालामई [1]काहलाकार। अरुण सिंदूर पुंज उनहार॥
बारह जोजनदीरघ सोय। नौजोजन विस्तीरण होय।६५।
[2]दंडक पुरवतप्रलै करेय। साधसमेत भस्म करदेय॥

१—कुत्सित आकार अर्थात् वेडौल आकार॥
२—दंडक पुर नगर का नाम जिसको ? मुनि ने भस्म कर दियाथा शरीर ५ प्रकार है तेजस १ कारमाण २ औदारिक ३ आहारिक ४ वैक्रयक ५॥

अशुभकषाययहीविख्यात। अवसुनशुभतेजसकीबात।६६।
दुर्भिक्षादिक दुख अविलोय। दयाभाव मुनिवर के होय॥
शुभआकृत सों निवसैंताम। दक्षणकांधे सोंअभिराम।६७।
पूरब कथित देह विस्तार। रोगसोग सब दोषनिवार॥
फिरनिज थान करैपैसार। पंचम समुदघात यहधार।६८।

* ६ आहारकसमुदघात *

करत साधुपद अर्थ विचार। मन संशय उपजै तिहिं बार॥
तहांतपोधन चिंत्याकरै। कैसेयह विकल्प निर्वैरै। ६९।
भरथखेत आदिक भूँमाहि। अवह्यां निकट केवलीनाहि॥
तातैंकरये कौनउपाय। विनभगवान भरमनाहिंजाय।७०।
तबमुनि मस्तकसों गुणगेह। प्रघट होय आहारक देह॥
एकहाथातिसपरमितकही। श्रीजिनशासनसौंसरदही।७१।
फटक बरन मनहरन अनूप। तहांजाय जिहिंकेवलरूप॥
दर्शनकर संदेह मिटाय। फेरआन निजथान समाय।७२।
षष्टम समुदघात यहमान। मुनिके होहिंछटै गुणथान॥

* ७ केवल समुदघात *

जबसयोग जिनकेपरदेस। बाहरनिकसैं अलषअभेस।७३।

१—सयोग केवलीके जीव प्रदेश जब बाहर निकलतेहैं पहले दंड आकार फिर कपाट अर्थात् किवाड़ वत चौड़े फिर प्रतर अर्थात् फैलेहुए होकर लोक पूरित होजाते हैं॥

दंड कपाटादिक विधठान । क्रमसों होंयलोक परवान ॥
सप्तमसमुद्घात यहभाय । शरधाकरो भविकमनलाय।७४।
मरणांतक आहारक जेह । एक दिशा गतजानो येह ॥
बाकीपांच रहेजेआन । तसवदसों दिशागतजान । ७५ ।

* ६ संसारी जीवकथन *

दुविधरास संसारी जीव । थावर जंगम रूप सदीव ॥
तहांपांच विधिथावरकाय। भूँजलतेँज वनस्पतिवाय । ७६ ।
चारजाति के जंगम जन्त । चलत फिरतदीपें बहुभन्त ॥
संपसीपकौड़ी क्रिमिजोक। इत्यादिक वेइन्द्रीथोक । ७७ ।
चैंटीदीम कुंथ पुनिआदि । येतेइन्द्री जीव अनादि ॥
माषीमाछर भृंगी देह । भ्रमरप्रमुख चौइन्द्री येह । ७८ ।
देवनारकी नर विख्यात । केतक पशु पचेंन्द्री जात ॥
येसवत्रस थावरकेभेव । इनकोविषय छत्रमुनलेव । ७९ ।

* छप्पै छंद *

फरस चौरमै चाप, जीभ चौसठ सोनोंमा ।

१—स्पर्श इन्द्री का विषय ४०० धनुष का ६४ नाकका १०० धनुष है इस इन्द्रीका विषय २९५४ धनुष है ऐसा क्रम दिखाया है आगेनीके दूगना जानना चाहिये और अन्तकी जो श्रवण इन्द्री असेनी के है इसका विषय ८००० धनुष है और सैनी के स्पर्श इन्द्री जीभ इन्द्री नाक इन्द्री इनका विषय ९ योजन और नेत्र इन्द्री का विषय ४७२६३ योजन और श्रवण इन्द्रीका बारह योजन है ।

द्रगजोजन उँनतीस[२९], शैंतकचौवनक्रम[६४००] भासा ॥
दुगुन असैनी अन्त, श्रवनवसु सहस धनुषसुनि ।
सैनी सपरस विषै, कह्यो नौंजोजन[९] श्रीमुनि ॥
नौंरसन[९] घ्राणनो[९] चक्षप्राति, सैंतालीसहजारागिन[४७२६३] ।
दोसैत्रेसठि वौंरह[१२] श्रवण, विषैक्षेत्रपरवानभन ।८०।

* जीव समास कथन *

* १५ मात्रा चौपाई छंद *

एकेन्द्री सुक्ष्म अरुथूल । तीनभेद विकल त्रियमूल ॥
दोयप्रकार पचेन्द्रीकहे । मनसोंरहित सहितशरदह । ८१

* दोहा छंद *

सातोंही परयाप्त तैं, अपरयाप्त तैं जान ॥
चौदह जीव समास यह, मूलभेद उरआन । ८२।

१—दो इन्द्री १ तेइन्द्री २ चौइन्द्री ३ ॥ २—असेनी १ सेनी २॥
३--परयाप्त ६ हैं आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ स्वासो स्वास ४ मन ५ वचन६ जिस नैयह ६ पर्याय पूरण धारण करी सो परयाप्त हैं और जिसने पूरण धारण नहीं करी सो अपरयाप्त हैं ॥

* १५ मात्रा चौपाई छंद *

ऐसेही चौदह गुणथान । चौदह मारगणा उरआन ॥
जबलगहै इनरूपीराम । तबलों संसारी यहनाम । ८३ ।

* अड़िल छंद *

यहअनादि संसार, जीवकी भूलहै ॥
इसकारजमें और, हेतुनहिं मूल है ॥
तौअशुद्ध नयन्याय, जीव जगरूप है ॥
द्रव्यद्रष्टि सों देष, सबै शिवभूप है । ८४ ।

* दोहा छंद *

भयेकर्म संयोगतें, संसारी सब जीव ।
साधनबल जीतें करम, तबयहसिद्धसदीव । ८५ ।

* ७ सिद्ध जीव कथन *

---

* अड़िल छंद *

अष्टै[1] गुणातम रूप, कर्म मलमुक्त हैं ॥

१—आठगुण आत्म रूप धारी हैं और कर्मों के मल से छूटेहुए हैं और त्रिविध १ उपत्ति २ बिनाश ३ इनतीन धर्मकर संयुक्त हैं ॥

थिति उतपत्ति विनाश, धर्म संयुक्त हैं ॥
चरम देहतैं कछुक, हीनपर देश हैं ॥
लोकअग्र पुरवसैं परम परमेश हैं । ८६ ।

सिद्धजीवविषय उत्पादव्यय
* ध्रौव्य स्थापन *

* दोहा छंद *

अथिर अर्थ परयाय जो, हानवृद्ध मयरूप ॥
तिसमैंसिद्ध वषानिये, उतपाति नाशसरूप । ८७ ।
ज्ञेयात्रिविध परनातिधरै, ज्ञान तदाकृत भास ॥
योंभी शिवपदमैंसधै, थित उतपात्ति विनाश ॥८८॥
अथवा सबपरनतिनसे, भईसिद्ध पर्याय ॥
शुद्धजीव निश्चल सदा, योंतीनों ठहराय ॥ ८६॥

१- सिद्धों की अर्थकहिये द्रव्य पर्याय अथिर रूप मैं हानि वृद्धि मानी है जो ६ हैं संख्यात गुण वृद्धि १ असंख्यात गुण वृद्धि २ अनंतगुण वृद्धि ३ अनंतगुण हानि ४ असंख्यात गुण हानि ५ संख्यात गुणहानि ६ ॥

२—तिथि १ उतपत्ति २ विनाश ३ ॥

❀ ८ अरूप कथन ❀

❀ अड़िल छंद ❀

वरनपांच रसपांच, गंध दोलीजिये ॥
आठ फरस गुनजोर, वीस सबकीजिये ॥
जीवविषै इनमाहिं, एकनहिं पाइये ॥
यातैं मूर्तिहीन, चिदातम गाइये ॥ ९० ॥
जगमें जीवअनादि, बंध संजोगतैं ॥
छूटो कबहीं नाहिं, कर्म फलभोगतैं ॥
असदभूत व्योहार, पक्ष जोठानयै ॥
तोयह मूर्तिवंत, कथंचित मानयै ॥ ९१ ॥

❀ ९ ऊर्द्ध गमन कथन ❀

❀ दोहा छंद ❀

प्रकीति बंधथितैं बंधपुनि, अरु अनुभाग प्रदेश ॥

१—ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी आदिवर्णों की प्रकृति बंध १ कालकी सीमा थिति बंध २ अनुभाग कहिये तिव्रमंद दुःख सुख अवस्था बंध ३ प्रदेश कहिये आत्मा के प्रदेश परकर्म बंध ४ ॥

चारभेद यह बंध के, कहेपास परमेश ॥ ६२ ॥
बंध विवर्जित आत्मा, ऊरध गमन करेय ॥
एकसमय कर सरलगति, लोकअंत निवसेय ।६३।
ज्यों जल तूंबी लेपबिन, ऊपर आवैसोय ॥
त्योंऊरध गति रामयह, कर्म बंध विनहोय ।६४।
जबलों चहुंविध बंधसों बंधे जीव जगमाहिं।
सरलबंक तबलोंचलै, विदशा मैं नहिजाहिं। ९५ ।
अमृत चंद्रमुनि राजकृताकिमपि अर्थअवधार ।
जीवतत्ववर्णनालिषा, अबअजीव अधिकार। ९६ ।

* २ अजीवतत्त्व कथन *

पुद्गल धर्म अंधर्मनभ, कालनाम अवधार ।
येअजीव जडतत्त्व के, भेद पंच परकार । ९७ ।
तिनमें पुद्गल दोय विध, बन्ध रूप अणुरूप॥
यहसब मैं रूपी दरव, चारों और अरूप । ६८ ।
अणुरूपी पुद्गल दरव, छेदभेद नाहिं जास ॥
अगन जलादिक जोगसों, होयन कबही नास।६६।
जा अविभागी मैं नहीं, आदिमध्य अवसान ॥

१—विग्रह गति में. ॥

शब्द रहित पर शब्दको, कारन भूत वपान।१००।

❁ सोरठा छंद ❁

भूँजल पावक वाय, हेतु रूप सबको यही॥
बहुविधि कारन पाय, वरणादिक पलटें तुरत।१०१।
अवनाशी जिस माहिं, सदापंच गुण पाइये॥
इन्द्री गोचर नाहिं, अवधि ज्ञानसों जानिये।१०२।

❁ दोहा छंद ❁

वरण पांचरस पांचमें, एक एकही होय॥
एक गन्ध दो गन्ध में, आठ फरस में दोय।१०३।
ये परमाणू पंचगुण, सात बंध में जान॥
वर्णादिक जे बीसहैं, तेगुण जात वपान।१०४।
आगे पुद्गल बंद्ध के, सुनोभेद षट सोय॥

१—वरण ५ (हरा १ लाल २ काला ३ पीला ४ सुपेद ५) रस ५ (खट्टा १ मीठा २ चरचरा ३ कडुवा ४ कषायला ५) इनमेंसे १ वर्ण और १ रस होगा दो २ गंध में (सुगंधि १ दुर्गंधि २) इन में से कोई १ गंध होगी-स्पर्श ८ (गर्म १ ठंडा २ हलका ३ भारी ४ कोमल ५ कठोर ६ रूखा ७ चिकना ८) इन में से २ गर्म ठंडे से १ रूखे चिकने से १ इस प्रकार ५ गुण सदांव पाये जाते हैं और अविनाशी हैं॥

२—बंध में दोगुण चिकना अथवा रूखा १ कोमल अथवा कठोर २ ये और बढ़कर ७ होजायेंगे॥

सरधा करतैं समझतैं, संशय रहै न कोय। १०५।

* १५ मात्रा चौपाई छंद *

प्रथम भेद अतिथूल वषान। दुतिय थूल संज्ञाउर आन॥
तृतियथूल सुक्षमसर दहो। सुक्षमथूल चतुर्थम गहो॥१०६।
पंचमसुक्षम नाम गिनेह। षष्टम अतिसुक्षम षटयेह॥
अबइनको वरणन विरतंत। सुनोएक मनसों मतिवंत।१०७।
षण्डषण्ड कीने जेबन्ध। फेरन मिलै आपसों सन्ध॥
माटीईंट काठपाषान। इत्यादिक अतिथूल वषान। १०८।
छिन्नभिन्न होंफिर मिलजाहिं। ऐसेपुद्गल जे जगमाहिं॥
घृतअरुतेल जलादिकजान। येसबथूल कहेभगवान१०९।
देखतलगै दिष्टिसों थूल। करमेंगहे जाहिं नहिं मूल॥
धूपचांदनी आदिसमस्त। जानथूल तेसुक्षम वस्तु। ११०।
आँषन सौं दीषै नाहिं जेह। चारों इन्द्री गोचर तेह॥
विविधसपर्स शब्दरसगंध। सुक्षमथूल जानतेवंध।१११।
नाना भांत वर्गना भिंड। कारमाण परमाणु पिंड॥
कालीइन्द्री गोचरनाहिं। तेसुक्षमाजिन शासनमाहिं।११२।

१— कारमाण परमाण पिंडकी जोनानाभांत वरगना लियेहुये एकभिंड है और इन्द्री गोचरहै नही सो सूक्ष्महै कर्म वरगना आदि सूक्ष्म है दो आदि प्रमाण का समूह सूक्ष्म अर्थात् सूक्ष्म सूक्ष्म जानो॥

कर्म वर्गना सोही कहा। जो अतिही सुक्ष्म सरदहा ॥
दुणकआदि परमाणूबंध। सोसुक्ष्म सुक्ष्मसुनबंध। ११३।
षटप्रकार पुद्गल इहिंभाय। मुख्य गौनसव में गुणथाय॥
इनहीसो निर्मापतलोक। और न दीषै दुजो थोक। ११४।
शब्द बंध छाया तम जान। सुक्षम थूल भेद संठान ॥
अरुउदोतआतमबहुभाय। यहदसविधिपुद्गलपर्याय।११५।

* धर्म द्रव्य कथन *

जब जड़जीव चलै सतभाय। धर्मदरव तबकरै सहाय ॥
तथामीनकोजलआधार। अपनीइच्छाकरताविहार।११६।

* अधर्म द्रव्य कथन *

योंही सहजकरैथितसोय। तव अधर्म सहकारी होय ॥
जोमगमैंपंथीकोछांहि। थितिकारनहैबलसोंनाहि।११७।

* आकाश द्रव्य कथन *

जोसव द्रव्यन को आकाश। देयसदासो द्रव्यअकाश ॥
ताकेभेददोय जिनकहे। लोकअलोक नामसरदहे। ११८।
जहिं जीवाद पदारथनास। असंख्यातपरदेश निवास ॥

लोकाकाशकहावैसोय । परैअलोकअनंताहोय ॥ ११९ ॥

* काल द्रव्य कथन *

लोकप्रदेश असंषे जहाँ । एक एक कालाणू तहाँ ॥
रत्नराासि वत निबसैं सदा । द्रव्यसरूपसुथिरसर्वदा १२० ।
बरतावन लक्षण गुणजास । तीनकाल जाको नहिंनास ॥
समैंघड़ी आदिक बहुभाय । येव्योहार कालपर्याय ।१२१।
पहले कहौ जीव अधिकार । और अजीव पंचपरकार ॥
येहीछहोंद्रव्य समुदाय । कालविना पंचासतिकाय । १२२ ।

॥ दोहा छंद ॥

वहु परदेशी जो दरब, कायवन्त सो जान ॥
तातै पचअथिकाय हैं, कायकाल विनमान । १२३ ।

॥ ३१ मात्रा सवैया छंद ॥

जीवधर्म अधर्म ये तीनों, कहेलोक प्रदेश परवान ॥
असंख्यात परदेशी राजैं, नभ अनन्त परदेशी जान ॥
संखअसंख अनंत प्रदेशी, त्रिविध रूप पुद्गल पहिंचान॥
एकप्रदेश धरै कालाणू, तातैं काल कायविन मान । १२४ ।

* शिष्यप्रश्न *

॥ दोहा छंद ॥

कालकाय विनतुम कहो, एक प्रदेशी जोय ॥
पुद्गल परमाणू तथा. सो सकाय क्यों होय । १२५ ।

* गुरू उत्तर *

॥ ३१ मात्रा सवैया छंद ॥

अलख असंख दरव कालाणू, भिन्नभिन्न जगमाहिं वसाहिं॥
आपस माहिंमिलै नहिंकवहीं, तातैं कायवन्त सो नांहिं ॥
रूष सचिक्कन तैं परमाणू, ततखिन बन्धरूप होजाहिं ।
योंपुद्गलको कायकल्पना, कही जिनेश्वरके मतमाहिं ।१२६।

आकाश प्रदेशरूपतथा शक्तिकथन

जितने मानएक अविभागी, परमाणू रोकैं आकास ॥
ताका नांव प्रदेश कहावै, देयसर्व दरवन को वास ॥
तहां एक कालाणू निवसैं, धर्मअधर्म प्रदेश निवास ॥
रहैंअनन्त प्रदेश जीवके, पुद्गल बंधलहैं अवकास । १२७।

* शिष्य प्रश्न *

॥ पोमावती छंद ॥

धर्मअधर्म कालअरु चेतन, चारोंदरब अरूपीगाये ॥
तातैंएक अकाश देशमें, प्रभुसबके परदेश समाये ॥
मूरतवन्त अनंते पुद्गल, तेउस नभमें क्योंकरमाये ॥
यहसंशयसमभावकहोगुर, दासहोयहम पूछनआये १२८

* गुरु उत्तर *

॥ सोरठा छंद ॥

बहु प्रदीप परकाश, यथा एक मंदिर विषै ॥
लहैंसहज अवकाश, बाधा कछु उपजै नहीं। १२९।

॥ दोहा छंद ॥

त्योंहीं नभ परदेश में, पुद्गल बंध अनेक ॥
निराबाध निवसैं सही, ज्यों अनन्त त्यों एक। १३०।

* आश्रव तत्त्व कथन *

जो कर्मन को आगमन, आश्रव कहिये सोय ॥

१—समाये ॥

ताके भेद सिद्धांत में, भावित दरवित होय । १३१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मिथ्या अविरत योग कषाय । और प्रमाद दशा दुखदाय॥
एसब चेतन को परनाम । भावाश्रव इनहीं कोनाम।१३२।
तिनही भावन के अनुसार । ढिग वरती पुद्गल तिहिवार ॥
आवैंकर्म भावकेजोग । सोदरवित आश्रवअमनोग।१३३।

*४ बंध तत्त्व कथन *

॥ सोरठा छंद ॥

रागादिक परनाम, जिनसों चेतन बंधतहै ॥
तिन भावनको नाम, भावबंध जिनवर कहो । १३४।

॥ दोहा छंद ॥

जो चेतन परदेश पै, बैठो कर्म पुरान ॥
नए कर्म तिनसों बधैं, दरब बंधसो जान । १३५ ।

* ५ संवर तत्त्व कथन *

॥ पद्धड़ी छंद ॥

आश्रव अविरोधन हेतभाव।सोजानभाव संवरसुभाव ॥

जोदर्वितआश्रवशुद्धरूप । सोहोयदरवसंवरसरूप ।१३६।
व्रतपंचैंसमितिपांचों सुकर्म । वरतीनें[3]गुप्ति दसैंभेदधर्म ॥
वारहें[12]विधअनुप्रेक्षाविचार ।वाईसें[22]परीषहविजयसार।१३७।
पुनि पांचजात चारित अशेष । येसर्वभाव संवर विशेष ॥
इनसैंकर्मआश्रवरुकै एम । परनालीकेमुहँडाटजेम । १३८।

॥ दोहा छंद ॥

शुभउपयोगीजीवके, व्रतआदिकआचार ॥
पापाश्रव अविरोध को, कारणहै निर्धार । १३९ ।
शुद्ध उपयोगी साधजे, तिनकै ये आचार ॥
पुन्नपाप दोऊन को, संवर हेत विचार । १४० ।

* ६ निर्जरातत्त्वकथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तपबल कर्म तथा थितपात । जिनभावों रस देखिरजात ॥
तेई भावभाव निर्जरा । संवर पूरबहै शिवंकरा[2] । १४१ ।

१—सामायक १ छेदोपस्थापना २ परिहारविशुद्धि ३ सुक्षमसांपराय ४ यथाख्यात ५ ॥ २—मोक्ष करने वाला ॥

बंधेकर्म छूटैं जिसवार । दरव निर्जरा सो निर्धार ॥
इहिविधजिनशासनमैंकहेया।समकितवंतसांचसरदहेया ॥

❋ ७ मोक्षतत्त्व कथन ❋

जो अभेद रत्नत्रिय भाव । सोईभाव मोष ठहराव ॥
जीवकर्मसोंन्याराहोय । दरबमोक्षअविनाशीसोय। १४३।
येसब सात तत्व बरनए । पुन्नपाप मिल नौपद भए ॥
आश्रव तत्त्व विषै वे दोय। गर्भित जानलीजियेसोय।१४४

॥ दोहा छंद ॥

जीव यथारथ दिष्टिसों, सरधै तत्त्व सरूप ॥
सो सम्यक दर्शन सही, महिमा जास अनूप। १४५।
नयप्रमाण निक्षेप कर, भेदाभेद विधान ॥ ।
जो तत्त्वनको जाननो, सोई सम्यक ज्ञान। १४६।
सोसामान विलोकये, दर्शन कहिये जोय ॥
जो विशेष कर जानये, ज्ञान कहावै सोय । १४७।
चारित किरया रूपहै, सोपुनि दुविध पवित्त ॥
एक सकल चारित्र है, दुतिय देश चरित्त । १४८।

॥ अड़िल छंद ॥

जहां सकल सावद्य, सर्वथा परिहरै।
सो पूरन चारित्र, महामुनि वर धरै॥
लेश्य त्याग जाहिं होय, देश चारित वही।
सो ग्रहस्थ को धर्मग्रहीं पालै सही।१४६।

॥ दोहा छंद ॥

तिर्थंकर निर्ग्रंथपद, धर साधो शिवपंथ॥
सोई प्रभु उपदेशयो, मोषपंथ निर्ग्रंथ।१५०।
दसविध बाहिज ग्रंथमै, राषै तिलतुसमान॥
तो मुनिपद कहियै नहीं, मुनि विननाहिं निर्बान १५१।
जेजन परिग्रह वंतको, मानैं मुक्ति निवास॥
तेकवही मुकतनलहैं, भ्रमैं चतुर गतिवास।१५२।
क्रोधादिक जबही करैं, बंधे कर्म तब आन॥
परिग्रहके संजोगसों, बंध निरंतर जान।१५३॥
बंध अभावै मुक्ति है, यह जानै सबलोय॥
वंध हेत वरतैं जहां, मुक्ति कहाँतै होय।१५४।
पश्चिमभान न ऊगवै, अगननशीतलहोय॥
यथाजात जिन लिंगविन, मोष न पावै कोय।१५५।

॥ छप्पै छंद ॥

धन्य धन्य तेसाधु, देह भवभोग विरक्ते।
धन्य धन्य तेसाधु, आप अपने रसरच्चे॥
धन्य धन्य तेसाधु, पीठ जगकी दिशकीनी।
धन्य धन्य तेसाधु, दिष्टिशिवसन्मुख दीनी॥
तज सकल आस वनवास बस, नगन देहमदपरहरे॥
ऐसेमहंतमुनिराज प्रति, हाथ जोर हम सिरधरे। १५६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पंच महाव्रत दुद्धरधरैं। सम्यक पांच समति आदरें॥
तीनगुप्तिपालैंयहकर्म। तेरहविधचारित मुनिधर्म। १५७।
यातैंसधैं मुक्ति पदषेत। गिरही धर्म सुरग सुखदेत॥
सोएकादश प्रतिमारूप। ते वरनूं संक्षेप सरूप। १५८।

॥ १ दर्शनप्रतिमा ॥

पंचं उदंबर तीनेंमकार। सात विषन इनको परिहार॥
दर्शनहोयप्रतिज्ञायुक्त। सोदर्शन प्रतिमा जिन उक्त। १५९।

* सप्त विषन निषेध *

* ढाल *

श्रीगुरु शिक्षा सांभलौ, (ज्ञानी) सात विषन परित्यागीये॥

एजगमें पातगबड़े, (ज्ञानी) इनमारगमतलागोरे १६०
जूवा खेलन मांडये, (ज्ञानी) जोधन धर्म गमावैरे ॥
सबविषनन कोबीजहै, (ज्ञानी) देषंता दुखपावैरे। १६१।
रजबीरज सों नीपजै, (ज्ञानी) सोतन मास[1] कहावैरे ॥
जीवहतेबिन होयना, (ज्ञानी) नांवलियांघिन आवैरे। १६२।
सड उपजैकी डांभरी, (ज्ञानी) मद दुर्गंध निवासोरे ॥
छीयासों शुचितामिटै, (ज्ञानी) पीयाबुद्ध विनासोरे। १६३।
धिक वेश्या बाजारनी, (ज्ञानी) रमती नीचन साथैरे ॥
धनकारन तनपापनी, (ज्ञानी) वेचैविषनी हाथैरे। १६४।
अति कायरसबसोंडरै, (ज्ञानी) दीन मिरग बनचारीरे ॥
तिनपै आयुंधसाधते, (ज्ञानी) हाअतिकूर शिकारीरे १६५
प्रघट जगतमें देखये, (ज्ञानी) प्रानन धनते प्यारोरे ॥
जेपापी परधनहरैं, (ज्ञानी) तिनसमकौन हत्यारोरे। १६६।
परतियंबिषनमहाबुरो, (ज्ञानी) यामें दोष बड़ेरोरे ॥
इहिभवतनधनयशहरै, (ज्ञानी) परभवनरकबसेरोरे १६७
पांडवआदि दुखीभये, (ज्ञानी) एक विषन रतमानीरे ॥
सातनसों जेसठरचे, (ज्ञानी) तिनकीकौनकहानीरे १६८

॥ दोहा छंद ॥

पंच उदंबर फल कहे, मधुमद मास मकार ॥

१—छूने से ॥

इनके दूषण परिहरो, पहली प्रतिमा धार । १६९ ।

* २ व्रत प्रतिमा *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पांचं अणूव्रत गुण व्रत तीन । शिक्षाव्रत चारों मलहीन ॥
बारहव्रत धारैंनिर्दोष । यहदूजी प्रतिमा व्रतपोष । १७० ।

॥ दोहा छंद ॥

अवइन बारह व्रतनको, लिषूं लेश विरतंत ॥
जिनकोफल जिनमतकहो, अच्युतस्वर्ग पर्यंत।१७१।

* ढालचाल जिनजपाजिनजपजीवड़े *

जोनितमन वचकायसों, कृतआदिक सौंजैहोंजी ॥
त्रसको त्रासन दीजिये, प्रथमअणू व्रतएहोंजी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं । १७२ ।

१—कृतआप करना १ कारित दूसरे से कराना २ अनुमोदना दूसरे को करते देख आनंदमानना ३ ॥

झूंठेबचन नहिंबोलये, सबही दोष निवासो जी ॥
दूजोव्रत सोजानये, हितमित बचनसंभाखो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं। १७३।
भूलो बिसरो भूंपरो, जोपरधन बहु भायो जी ॥
बिनदीये लीजै नहीं, जनम जनम दुख दायोजी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं। १७४।
ब्याही बनिता होय जो, तासों कर संतोषो जी ॥
परिहरिये परकामनी, यासम औरन दोषो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं। १७५।
धनकन कंचन आदिदे, परिग्रह संख्या ठानो जी ॥
तिशना नागन बसकरो, यहव्रत मंत्र महानो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं। १७६।
अवधि दसोंदिश खेतकी, कीजैसंवर जानो जी ॥
बाहर पांव न दीजये, जबलग घटमें प्रानो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं। १७७।
कर मरयादा कालकी, करिये देश प्रमानो जी ॥
बनपुरसरिता आदिदे, नित्त गमनको थानो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं। १७८।
जहां स्वारथ नाहिं संपजे, उपजे पाप अपारो जी ॥
अनरथ दंडवही कहो, त्यागे पंच प्रकारो जी ॥

बारहव्रत विध वरणऊं । १७९ ।
सामायक विध आदरो, थलएकांत विचारो जी ॥
उर धर ये शुभ भावना, आरत रुद्र निवारो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८० ।
पोषह व्रत आराधये, चारौं परव मझारो जी ॥
चहुँविध भोजन परिहरो, घरआरंभसब छारोजी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८१ ।
भोजन पान तँबोल त्रिय, खटभूषण बहुएमो जी ॥
भोगयथा उपभोग है, कब इनको पम नेमो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८२ ।
उत्तम अतिथिन कोसदा, दीजे चोविध दानो जी ॥
मान बड़ाई त्याग कै, हिरदै सरधा आनो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८३ ।
अन्त समै संलेखणा, कीजै शक्ति संभालो जी ॥
जासोंव्रत संजम सबै, येफल दोहि विशालो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८४ ।

* ३ सामायक प्रतिमा *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तीनकाल सामायक करै । पांचो अतीचार परिहरैं ॥

शत्रुमित्र जानै इकसार । सोनर तीजी प्रतिमाधार।१८५।

* ४ पोषह प्रतिमा *

परब चतुष्टय तज आरंभ । पोषह व्रत मांडै मनथंभ ॥
सोलहपहरधरैशुभ ध्यान । सोयहचौथी प्रतिमावान।१८६।

* ५ सचित्त त्याग प्रतिमा *

त्यागै हरी जाति जावंत । दल फल कंद बीजबहु भंत ॥
प्राशुकजल पीवैतजराग । सोसचित्त त्यागीबड़भाग।१८७।

* ६ दिवा मैथुन त्याग प्रतिमा *

जोदिन में मैथुन परिहरै । मनबच कायशील दिढ़धरै ॥
षष्टमप्रतिमाधारीधीर । यहजघन्य श्रावक वरबीर।१८८।

* ७ ब्रह्मचर्य्य व्रत प्रतिमा *

जोसब नार सर्बथा तजै । नौविधि शीलसदा ब्रत भजै ॥
कामकथा रतकबहिनहोय।सप्तमप्रतिमा धारीसोय।१८९।

१—त्रिय अस्थानमें वसना १ प्रेम रुचि से देखना २ प्रीतिके मधुरवचन बोलना ३ शृंगारकरना ४ त्रियसेजपर सोना ५ पूर्वभवके रस चितवन ६ पुष्टअहार भोजनकरना ७ मन्मथ कथा कहना ८ पेटभर भोजनकरना ९ ॥

* ८ आरंभ त्याग प्रतिमा *

जिनसब तजे वरन व्योहार । खेती लेन देन ए भार ॥
छेदनपालन करैनरंच । तेपुनि मंदिर नाज न संच।१६०।
निरारंभ बरतै मदछार । जीव दया हितकरै विचार ॥
अहनिश हिंसासोंभयभीत। अष्टमप्रतिमा वंतपुनीत।१६१

* ९ परिग्रह त्याग प्रतिमा *

जोसमस्त परिग्रह परित्याग।उचितवसन राखैविनराग ॥
सोनोमीप्रतिमा निर्ग्रन्थ। यहमध्यम श्रावक कोपंथ।१९२।

* १० अनुमति त्याग प्रतिमा *

जोग्रहस्थ कारज अघमूल। तिनको अनुमति देयनभूल ॥
भोजनसमैं बुलायो जाय। सोदसमी प्रतिमा सुखदाय।१९३।

* ११ उद्दिष्ट प्रतिमा *

॥ दोहा छंद ॥

अब एकादशमी सुनो, उत्तम प्रतिमा सोय ॥

१—जिसने सर्व वरण क्षत्री आदि के विवहार तजदिये ॥

ताके भेद सिधान्त में, छुल्लक ऐलक दोय। १९४।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जोगुरु निकट जाय व्रतगहै। घरतज मठ मंडप में रहै ॥
एकवसन तनपीछीसाथ। कटिकोपीन कमंडलहाथ। १९५।
भिक्षा भाजन राखैपास। चारों परब करै उपवास ॥
लेउदंड भोजन निर्दोष। लाभअलाभ रागनारोष। १९६।
उचित काल उतरावै केश। डाढ़ीमोछ न राखै लेश ॥
तपविधानआगम अभ्यास।शक्तिसमानकरैगुरुपास।१९७।
यह छुल्लक श्रावककी रीत। दूजो ऐलक अधिक पुनीत॥
जाकेएक कमरकोपीन।हाथकमंडल पीछीलीन । १९८ ।
विधिसे खडा लेहि आहार। पान पात्र आगम अनुसार ॥
करैकेश लुंचन अतिधीर। शीलघाम सबसहै शरीर।१९९।

॥ सोरठा छंद ॥

पान पात्र आहार, करै जलांजुलि जोड़मुनि ॥
खड़ो रहै तिहिवार, भक्तिरहित भोजन तजै। २००।

॥ दोहा छंद ॥

एक हाथ पै ग्रासधर, एक हाथ से लेय ॥

श्रावक के घर आयके, ऐलक अशन करेय। २०१।
यहग्यारह प्रतिमा कथन, लिख्यौंसिधांत निहार॥
औरप्रश्न बाकीरहे, अव्रतिनको अधिकार। २०२।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जे जगमें पापी परधान। सात विपन सेवक अज्ञान॥
रुद्रध्यान धारैं अघमई। अतिही क्रूर कर्म निर्दई। २०३।
झूठवचन बोलैं सतछोर। परधन पर बनिता के चोर॥
बहुआरंभी बहुपरिग्रही। मिथ्यामतको पोषैंसही। २०४।
चंड कषाई अधिक सराग। जिन प्रतिमा निंदक निर्भाग॥
मुनिवरनिंद पापसिरलेहिं। जैनधर्मको दूषणदेहिं। २०५।
नीच देव सेवा रस रचे। धरैं कृश्न लेश्या मद मचे॥
इत्यादिक करनी रतरहैं। ऐसेनीचनरक गतिलहैं। २०६।

सातों नरक से जीवनिकल कौनगति * धारण करे हैं *

॥ छप्पैछंद ॥

सप्तम सों पशु होय, देश संयम न संभालैं॥

छैठेनरक सो मनुष, होय व्रत नाहीं पालैं ॥
पंचम सों व्रत धरैं, मोषगति को नहिंसाधैं ॥
चौथे सों शिव जांय, नहीं तीरथ पद लाधैं ॥
सबशुभ्रबाससों आयकै, वासुदेव नहिंभवधरैं ॥
प्रतिबासदेव बलदेवपुनि, चक्रवर्तनाहिं अवतरैं।२०७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मायाचारी जे दुठ जीव। पर पंचन में निपुन अतीव ॥
झूठलिखैंअरुचुगलीखाहिं। झूठीसाषभरत भयनाहिं।२०८
शीलन पालैं मोहउदोत। लेश्या जिनकै नील कपोत ॥
आरतध्यानी धर्मविहीन। पशुपर्यायलहैं अकुलीन। २०९।
आरत रुद्र रहित निर्राग। धर्म शुकल ध्यानी वड़भाग ॥
जिनसेवकपालैं व्रतशील। कसैंकरण मदमातेकील।२१०।
जिनप्रतिमा जिन मंदिर ठवैं। सातखेत उत्तम धनबवैं ॥
सदाचारसुन श्रावकहोय। यथाजोग पावैसुर लोय।२११।
सहज सरल परनामी जीव। भद्रभाव उर धरैं सदीव ॥
मंदमोह जिनके देखये। मंद कषाय प्रकृत पेषये। २१२।

१—मदमाती इन्द्रियों को कीलकर अर्थात् रोककर कसैं ॥

२—मुनिको १ आर्जिका २ श्रावक ३ इनतीनों कोदानदेना जिन मंदिर बनवाना ४ जिन प्रतिष्ठा कराना ५ तीर्थयात्रा करना ६ शास्त्रदान देना ७ ॥

अलपारंभ अलप धनचहैं। उरकपोत लेश्या निर्वहैं॥
पुण्यपापजहिं वरतैंदोय। मिश्रभावसों मानुषहोय। २१३।
परकै दोष सुनैमनलाय। विकथा बानी बहुत सुहाय॥
कुकविकाव्य सुनहरषैंजोय। तेवहरेउपजैं परलोय। २१४।
पढ़ैं सुछंद विवेक न करैं। मृषा पाठ विकथा विस्तरैं॥
परनिंदाभावैं बहुभाय। निजपरशंसा करैं बढ़ाय। २१५।
मलमुत्रादिक भोजन काल। मौनछार[1] बोलैं वाचाल॥
झूठकहतकछु शंकैनाहिं। तेगूँगेजनमें जगमाहिं। २१६।
परतिय मुख देखैं करनेह। निरखैं सब योनादिक देह॥
वधवंधन याचैंधर राग। तेमरआंधे होहिंअभाग। २१७।
जेनर करैं कुतीरथ गौन। बहुत बोझलादैं विन मौन॥
वृथाविहारी देखनचलैं। होयपंगुते पातक फलैं। २१८।
नीतिवनज कर लच्छमी लेहिं। ओछालेहिं न अधिकादेहिं॥
अलपवित्त दानादिककरैं। तेनरदिरब धनीअवतरैं।२१९।
जेधन पाय धरैंअभिमान। समरथ होकर देहिं न दान॥
धनकारन छलछिद्रकराहिं। बढ़तपरिग्रह धापैंनाहिं।२२०।
लच्छमीवन्त कृपन जनजेह। परभो होहिं दरिद्री तेह॥
मंदकषाई सरलसुभाव। अहनिश वरतैंपूजाभाव। २२१।
निज वनिता संतोषी सदा। मंदराग दीखैं सरवदा॥

[1] मौनमान अर्थ अर्थात् प्रमान में॥

दुराचारजिनके नहिंहोय। पुरुषवेद पावैं सुरलोय। २२२।
जे अतिकामी कुटिल अतीव। महा सरागी मोहतजीव॥
परबनितारत शोकसँजुक्त। तेकामिनतनलहैंनिरुक्त।२२३।
रागअन्ध अतिजे जगमाहिं। कामभोग सोंतृपतै नाहिं॥
वेश्यादासी रत्तकुशील। तेनरलहैं नपुंसक डील। २२४।
मनबच काय महानिर्दई। बध बंधन ठानै अघमई॥
परकोपीड़ा बहुबिधकरैं। तेजियअलप आयुधरमरैं।२२५।
कृपावन्त कोमल परणाम। देखबिचार करैं सब काम॥
जीवदयामें तत्परसदा। परकोपीड़ा देहँनकदा। २२६।
सबही जीवन सों हितभाव। धरैं पुरुषते दीरघ आव॥
जेजिनयज्ञपरायणनित्त। पात्रदानरतशीलपवित्त।२२७।
इन्द्री जीत हिये संतोष। तेनर भोगलहैं व्रत पोष॥
पूजादानविमुखमदलीन। इन्द्रीलुब्ध दयागुणहीन।२२८।
दुराचार दुरध्यानी लोग। इनको प्रापत होहिन भोग॥
समैविचारि पढ़ै जिनग्रंथ। पढ़ैपढ़ावै जेसुभपंथ।२२९।
हितसों धर्म देशना कहैं। ते परभो पण्डित पदलहैं॥
ज्ञानगरब हिरदैधरलेहिं। जिनसिधांतकोदूषनदेहिं।२३०।
इच्छाचारी पढ़ैं अशुद्ध। ज्ञानबिना बराजित जड़ बुद्ध॥
पढ़नेजोग पढ़ावैनाहिं। ऐसे नर मूरख उपजाहिं। २३१।
अनाचार रत आरंभवान। परको पीड़न करैं अयान॥

पापकर्मरत धर्म न गहैं। तेपरभव में रोगी रहैं। २३२।
परदुख देखहरष उरधरैं। परवनिता परधन जो हरैं॥
नरपशुजीव विछोहैंजोय। सोपुत्रादि वियोगी होय। २३३।
नीचकर्म रतकरुणा नाहिं। हाथपांव छेदैं छिनमाहिं॥
जेपरको उपजावैं पीर। तेनरपावैं विकल शरीर। २३४।
जो मिथ्या मत मदरा पिये। पापसूत्र की शरधा हिये॥
धर्मनिमित्त जीववधकरैं। महाकषाय कलुषताधरैं। २३५।
नास्तिक मतीपाप मगगहैं। ते अनन्त संसारी रहैं॥
रतनत्रय धारीमुनिराज। आगमध्यानी धर्मजहाज। २३६।
इच्छा रहित घोरतप करैं। कर्मनाश करभव जल तिरैं॥
उत्तमदेवन में शिरनाय। पूजेंपरम साधके पांय। २३७।
साधरमी वतसल मुनिप्रीत। उत्तम गोतबंधै इहिंरीत॥
जेजिनयतीजिनागमजान। नमैंनहींशठकरअभिमान। २३८।
मानैंनीच देव गुरुधर्म। ये सब नीच गोत के कर्म॥
जिनकेहिये रमैं वैराग। धारैंसंजम तृश्ना त्याग। २३९।
अतिनिर्मल चारित्त भंडार। ज्ञान ध्यान तत्पर अविकार॥
ख्यातिलाभ पूजानहिंचहैं। तेअहामिंद संपदागहैं। २४०।
पंच करण वैरी वसआन। चारित पालैं अति अमलान॥
दुद्धरतपकर सोखैंकाय। चक्रीहोंय देवपदपाय। २४१।
जेसम्यक दिष्टी गुणग्रही। सोलह कारन भावें सही॥

तेतिर्थंकर त्रिभुवनधनी । होहितीन जग चूड़ामनी । २४२ ।

॥ दोहा छंद ॥

इहि विधि पूछन हारको, समा धान जिनराज ॥
कीनो गणधर देवप्रति, जगतजीव हितकाज । २४३ ।
बानी सुन बारह सभा, भयो सबन आनन्द ॥
जैसे सूरज के उदै, बिकसै बारिज वृन्द । २४४ ।
बचन किरण सों मोहतम, मिटोमहा दुखदाय ॥
बैरागे जगजीव बहु, काल लवधि बलपाय । २४५ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

केईमुक्ति जोग बड़भाग । भरा दिगंबर परिग्रह त्याग ॥
किनहींश्रावक व्रतआदरे । पशुपर्याय अणू व्रतधरे । २४६ ।
केई नार अर्जिका भई । भर्ता के संग बनको गई ॥
केईनरपशु देवीदेव । सम्यकरत्न लह्यो तहांएव । २४७ ।
केईशक्ति हीन संसार । व्रत्त भावना करी सुखकार ॥
पूजादान भावपरनरा । यथाजोग सबसेवक भरा । २४८ ।

॥ दोहा छंद ॥

कमठ जीव सुरजोतषी, कर बचनामृत पान ॥

वमों वैर मिथ्यात विष, नमो चरण जुग आन ।२४९।
सम्यक दरशन आदरो, मुक्ति तरोवर मूल ॥
शंकादिक मलपरिहरे, गई जनमकी शूल । २५० ।
तहां सातसै तापसी, करत कष्ट अज्ञान ॥
देख जिनेश्वर संपदा, जग्यो यथारथ ज्ञान । २५१ ।
दई तीन परदक्षणा, प्रणमें पारस देव ॥
स्वामि चरण संयम धरो, निंदी पूरव टेव । २५२ ।
धन्य जिनेश्वर के वचन, महा मंत्र दुख हंत ॥
मिथ्यामत विषधर डसे, निर्विष होहिं तुरंत । २५३ ।
कहां कमठ से पातकी, पायो दर्शन सार ॥
कहांपाप तप तापसी, धरोमहा व्रत धार । २५४ ।
जिनके वचन जहाज चढ़, उतरे भवजलपार ॥
जेप्रत्यक्ष आएशरन, क्यों न होय उद्धार । २५५ ।
अवश्री गणधर देवतहँ, चार ज्ञान प्रवीन ॥
जिस समुद्र तैं अर्थजल, मतभाजन भरलीन । २५६ ।
नाम स्वयंभू दयानिध, विविध रिद्धिगुणखेत ॥
द्वादशांग रचना करी, जगत जीव हितहेत । २५७ ।
परमागम अमृत जलधि, अवगाहे मुनिराय ॥
जन्म जरामृत दाहहर, होंयसुखी शिवपाय । २५८ ।

* द्वादशांगपद प्रमाण कथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथम एकसोबारह कोड़ । लाख तिरेणावैं ऊपर जोड़ ॥
बावनसहस पांचपदसही । द्वादशांग कीपरमितकही ।२५९ ।

* एकपद श्लोक संख्या *

॥ पद्धड़ी छंद ॥

इक्यावन कोड़ी आठलाख । चौरासी सहसश्लोकभाख ॥
छस्सैसाढ़े इक्कीस जान । यहएक महापदको प्रमान । २६० ।

॥ दोहा छंद ॥

इहिं विध सभा समूहसब, निवसैं आनन्दरूप ॥
मानोअमृत नीरसों, सिंचत देह अनूप । २६१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तबसुरेश उठ विनती करी । हाथजोर सिर अंजुलिधरी ॥

१--५१०८८४६२१ $\frac{1}{2}$ ॥

भोजगनायक जगआधार। तीनभवन जनतारनहार।२६२
यहविहार औसर भगवान। करये देव दया उरआन॥
भविकजीव खेतीकुमलाय। मिथ्यातपसों सूकीजाय।२६३।
भोपरमेश अनुग्रह करो। वानी वरषा सों तप हरो॥
मोषमहापुरके परधान। तुमबिनजारे दयानिधान।२६४।
प्रभुसहाय भविसुख पदलेहिं। आवागमन जलांजलिदेहिं
इहिविधिइन्द्रप्रार्थनाकरी।सैंहसनामकरथुतिविस्तरी २६५
भयोअनिच्छया गमन जिनेश। भविजीवन के भागविशेश॥
सकलसुरासुरजयजयकियो।जिनविहारअमृतरसपियो२६६।
गमनसमैं और विधभई। समोसरन रचना थिरगई॥
चलेसंगसुरचतुरनिकाय।चहुंविधिसकलचलेसुरराय२६७
सुरदुंदुभि बाजैं सुखकार। जिन मंगल गावैं सुरनार॥
हाथधुजाजुत देवकुमार। चलेजाहिंनभमैं छविसार। २६८।
चहुंदिश चार चारसौ कोष। होयसुभक्ष सदानिर्दोष॥
नभविहारजिनवरकैहोय। जीवघाततहांकरैनकोय। २६९।
सब उपसर्ग रहित भगवंत। निरआहार आव परयन्त॥
चतुरानन देखैसंसार। सब विद्यापति परम उदार।२७०।
प्रभुके तनकीपरैं नछांहिं। पलक पलकसों लागै नाहिं॥
नषअरुकेशबढ़ैंनाहिंजास।येदसकेवल अतिशयभास२७१।
भाषासकल अर्ध मागधी। थिरै सकल संशय हरनधी॥

[2]नैरपशुजाति विरोधीजीव। सबउरमैत्री धरैंसदीव। २७२।
[3]नानाजाति बिरछ दुखदलैं। सबरितु के फलफूलैं फलैं ॥
[4]प्रभुसंचारि भूमिमणिमई। दर्पनवत आगमवरनई। २७३।
[5]सुरभिपवन पीछै अनुसरै। बायुकुमार जनित सुखकरै ॥
सुर[6]नरपशू शुभागतिजेह। परमानन्द सहित सबतेह। २७४।
[7]मारुत सुरयोजनमित मही। करैंधूल तृण वर्जित सही ॥
[8]मेघकुमारकरैं मनलाय। गंधोदकवरषा सुखदाय। २७५।
[9]चरन कमल जिनधारैंजहां। कंचन कमल रचैंसुर तहां ॥
सातकमलते आगैंठान। पीछेसात एकमध जान। २७६।
योंपंकज की पंद्रह पांति। सबादोइसै सब इहिभांति ॥
[10]शुक्लध्यानउपजैंबहुभाय। [11]निर्मलदिशनिर्मलनभथाय२७७
मुदित[12]बुलावै देव समाज। भविजनकों जिनपूजनकाज ॥
धर्म[13]चक्र आगेसंचरै। सूरज मण्डलकी छविहरै। २७८।
[14]मंगलदर्ब आठ झलकाहिं। यथाजोग सुरलीये जाहिं ॥
येचौदह देवनकृतजान। बरआतिसै मंडितभगवान। २७९।
करैंबिहार परमसुख होत। भविजीवन के भाग उदोत ॥
स्वर्गमोषमारगप्रभुसार। प्रगटकियोभ्रमतिमरनिवार२८०।
कहीं कुलिंगी दीखैनाहिं। भान उदैज्यों चोर पलाहिं ॥
सबनिजनिज बांछाअनुसार। पूरणआसभयेतनधार। २८१।
काशी कौशलपुर पंचाल। मरहट मारूदेश बिशाल ॥

मगधअवंती मालवठाम । अंगवंग इत्यादिकनाम । २८२ ।
कीनौ आरजखंड विहार । मेटोजग मिथ्या अँधियार ॥
अवसबकीगणनागणसुनौ।यथापुराणकथितविधमुनो।२८३।
प्रथम स्वयम्भू प्रमुखप्रधान । दैंसगणधर सर्वागम जान॥
पूरवधारी परमउदास । सर्वतीन सै अरु पैंचास । २८४ ।
शिष्य मुनश्विर कहैपुरान । दसहँजार नौसे परवान ॥
अवधिवन्त चौदहँसैसार । केवल ज्ञानी एकहँजार ।२८५।
विविध विक्रिया रिद्धवलिष्ट । एकसैंहस जानो उतकृष्ट ॥
मनपरजैज्ञानी गुनवन्त । सातशैंतक पंचासमहन्त।२८६।
छैंसैवाद विजई मुनिराज । सबमुनि सोलैंसहस समाज ॥
सहसैछैंवीस अर्जिकागनी।एकलाँखश्रावकव्रतधनी।२८७।
तीनलाँख श्रावकनी जान । वरनी संख्यामूल पुरान ॥
देवीदेव असंपअपार । पशुगणसंख्याते निरधार । २८८ ।
इहविध बारह सभासमेत । रतनत्रय मारग विध देत ॥
विहरमान दरसावतवाट । सँत्तरवरष भयेकछुघाट । २८९
सम्मेदाचल शिषर जिनेश । आयेश्री पारस परमेश ॥
एकमासजिन योगनिरोध।मनवचकायक्रपासवरोध।२९०।
सूक्षमकाय योगथितिठान।त्रितियशुक्लसंजुत तिहिंठान॥
तजसयोग थानकस्वयमेव । आएफिरअयोगपददेव।२९१
पंचलघुक्षर हैं थितिजहां । चैंतुरथ शुकल ध्यानवल तहां॥

दोयचरम समयेजिनभनी । प्रकृतिबेहत्तर तेरहहनी२९२।
इहविध कर्मजीत भगवान । एकसमै पहुँचे निर्वान ॥
औछैत्तीसमुनीश्वरसाथ।लोकशिखर निवसेजिननाथ२९३
सावन शुदिसातैं शुभवार। विमल विसाखा नखत मंझार॥
तजसंसार मोषमैंगए । परमसिद्ध परमातमभए । २९४ ।
पूर्ब चरम देह तैं लेश । भए हीन आतम परदेश ॥
अष्टगुनातममयब्योहार । निहचैगुणअनंतभंडार।२९५।
सादिअनंत दशापरनरा । सिद्धभाव बसु गुनजुतधरा ॥
परमसुषालयबासोलियो।आवागमनजलांजलिदियो२९६

॥ दोहा छंद ॥

पंच कल्यानक पायसुख, जगत जीव उद्धार ॥
भएपूज परमातमा, जयजय पास कुमार ।२९७।
जिनकेसुखको ज्ञानकी, नहीं उपमा जगमाहिं ॥
जोतिरूप सुषपिंडथिरि, इंद्रीगोचर नाहिं ।२९८।
अब तिनको आकार कछु, एकदेश अवधार ॥
लिखोंएक दिष्टांतकरि, जिनशासन अनुसार।२९९।

॥ १५मात्राचौपाईछंद ॥

मोममई इकपुतला ठान। नखशिख सम्म चतुर संठान ॥

१—जिनके आत्म प्रदेश चरम शरीर से कुछकम भये ॥

सबतन सुंदर पुरुषाकार। नराकारइसहीविधसार। ३०० ।
माटी सौं इम लेपहु सोय। जैसेत्वचा देह पर होय ॥
कहींअंग खालीनहिंरहै। सबउपचार कलपनायहै। ३०१ ।
फुनिसो लीजै अगनि तपाय। सांचारहै मोमगल जाय ॥
अबताभीतर करोविचार। कहारह्योबुध ताहिनिहार।३०२।
अन्तर मूसपोल है जहां । पुरषाकार रह्यो नभ तहां ॥
याहीअंबर के उनहार। ब्रह्मसरूप जाननिरधार। ३०३ ।
यहआकाश सुन्य जड़रूप । वह पूरन चेतन चिद्रूप ॥
यहीफेरहै या वा माहिं। आकृति मैं कछुअंतर नाहिं। ३०४।
याविध परम ब्रह्मको रूप। निराकार साकार सरूप ॥
यहदृष्टांत हियेनिजधरो। भविजियअनुभौ गोचरकरो३०५

॥ दोहा छंद ॥

बसैं सिद्धशिव खेतमें, ज्यों दर्पन में छांहिं ॥
ज्ञाननैंन सौं प्रगटहै, चर्म नैंनसौं नाहिं। ३०६ ।

॥ १५ मात्रा चौपाईछंद ॥

तब इंद्रादिक सुर समुदाय। मोषगए जाने जिनराय ॥
श्रीनिर्वाणकल्याणककाज। आएनिजानिजवाहनसाज ३०७
परमपवित्त जानजिन देह। मणिशिवका परथापी तेह ॥

करीमहापूजा तिहिंबार। लियेअगर चंदनघनसार ।३०८।
और सुगंधदरब शुचिलाय । नमैंसुरासुर शीस नमाय ॥
अगनिकुमार इंद्रतैंताम। मुकटानल प्रगटीअभिराम३०९
ततषिनभस्मभई जिनकाय। परम सुगंध दंसौ दिसथाय॥
सोतनभस्म सुरासुरलई। कंठहियेकर मस्तगठई। ३१०।
भक्तिभरे सुरचतुर निकाय। इहविध महा पुन्य उपजाय॥
करआनंद निरतबहुभेव। निजनिजथान गयेसबदेव।३११।

॥ दोहा छंद ॥

पंच कल्यानक पूजप्रभु, शिवाशिरिकंत जिनेश॥
सबजग सुख संपतिकरो, श्रीपारस परमेश।३१२।

श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके भवोंका
* सामान रूप कथन *

॥ पद्धड़ी छंद ॥

पहलेभव वामन कुल पवित्त। मरुभूत उपन्नो सरलचित्त॥
दूजेबनहस्तीवज्रघोष ।जिनपालेबारहव्रतअदोष। ३१३।
तीजेभवद्वादसस्वर्गबास । सहस्रारनामसबसुख निबास ॥

चौथेभवविद्याधरकुमार। लघुवेसलियो चारित्रभार।३१४।
पंचमभवअच्युतसुरगथान।बाईसजलधिजहिंथितप्रमान॥
छट्ठेभवमैचक्रीनरेश। जिनसाधेसहसबत्तीस देश।३१५।
सातवेजनम अहमिंद्रहोय। सुषकीनेचिरउपमानकोय॥
आठमभौश्रीआनंदराय।तजराजरिद्धिवनवसेजाय ३१६।
सोलह कारन भाएमुनिंद्र। फुनिभए बारमै स्वर्गइंद्र॥
इहविधउत्तमनौजनमपाय।वामाजननीउरवसेआय।३१७।
जेगरभजनमतपज्ञानकाल। निर्वाणपूज कीरतविशाल॥
सुरनरमुनिजाकीकरैंसेव। सोजयोपासदेवाधिदेव। ३१८।

॥ दोहाछंद ॥

नाम लेत पातिक भजै, सुमरतसंकट जाहिं॥
तेईसम अवतारसुभ, वसो सदा हिय माहिं। ३१९

* सामान्यरूप कथन *

॥ छप्पै छंद ॥

कमठ जीव तनछोर, द्वुतिय कुरकट अहिजायो।
नरक पंचमें जाय, आय अजगर तन पायो॥

धूम प्रभा में उपज, भील अतिभयो भयानक।
चरम नरक पुनिसिंघ, फेर पँचमभूं थानक॥
पशुजौनि भुंजमहिपालनृपं, देव जोतिषीअवतस्यो।
इहविधअनेकभवदुखभरे, वैरभावविषतरुफलो।३२०।

॥ दोहा छंद ॥

छिमाभावफलपासाजिन, कमठवैरफलजान॥
दोनोंदिशाविलोककै, जोहित सो उर आन। ३२१।

॥ सोरठा छंद ॥

जीव जाति जावंत, सब सौं मैत्री भावकर॥
याको यह सिद्धंत, वैर विरोध न कीजिये। ३२२।

* उक्तंच संस्कृत वाला छंद *

सत्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं। क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं॥
माध्यस्थभावंविपरीतवृत्तौसदागमात्माविधधातुदेवः३२३

* भाषा टीका *

सच्चे शास्त्र ज्ञाता पुरुष अर्थात् महान पुरुष प्रति जीव मात्रों में मित्रता भाव और गुणवान पुरुषों में हर्षभाव और दुखिया जीवों में दयाभाव विपरीत वृत्तिवालों में माध्यस्थ भाव अर्थात् भला बुरा रहित भाव रखते हैं॥

॥ पोमावती छंद ॥

जो भगवान वखान करीधुनि, सोगुरु गौतम नें उरआनी॥
तापर आइ ठईरचना कछु, द्वादश अंग सुधारस वानी ।
ताअनुसार आचारज संघ, सुधीवलसों वहुकाववखानी ॥
योंजिनग्रंथ यथारथहै, अयथारथहैं सवऔरकहानी॥३२४॥

॥ दोहा छंद ॥

जितने जैन सिद्धांत जग, तेसव सत्य सरूप ॥
धर्म भावना हेतसव, हितमित शिक्षा रूप । ३२५ ।
कलपित कथा सुहावनी, सुनते कौनअरत्थ ॥
लाषदाम किसकाम के, लेखनालिखे अकत्थ ।३२६।

॥ सोरठा छंद ॥

सुन श्रीपास पुरान, जान शुभा शुभ कर्मफल ॥
सुहितहेत उरआन, जगत जीव उद्यमकरो । ३२७।

॥ दोहा छंद ॥

प्रभुचरितामिस किमपियह, कीनोप्रभुगुनगान॥
श्रीपारस परमेश को, पूरनभयो पुरान । ३२८ ।

पूरब चरित्र बिलोकि कै, भूधर बुद्धि समान ॥
भाषाबंध प्रबंध यह, कियो आगरे थान । ३२९ ।

* कविलघुता *

॥ छप्पैछंद ॥

अमरकोष नहिं पढ्यो, मैं न कहि पिंगल पिष्यो ॥
काव्य कंठनहिं करी, सारसुत सों नहिं सिष्यो ।
अछर संधि समास, ग्यान वार्जित बुद्ध हीनी ॥
धर्म भावना हेत, किमपि भाषायह कीनी ।
जोअर्थछंद अनमिल कही, सोबुध फेर सवांरियो ॥
सामान्यबुद्धिकविकीनिरखि, छिमाभावउरधारियो ३३०

॥ दोहा छंद ॥

जिनशासन अनुसारसब, कथनकियोअबसान॥
निजकपोल कल्पितकही, मतसमझो मतिवान।३३१
छयउपशाम कीओछसौं, कैप्रमाद बस कोय ॥
इहबिधि भूल्योंपाठ मैं, फेर सवांरो सोय । ३३२।
पंचबरष कछु सरससे, लागे करत न बेर ॥

बुधथोरी थिरताअलप, तातैं लगी अबेर । ३३३ ।
सुलभकाज गरुवो गनै, अलपबुद्धि की रीत ॥
ज्योंकीड़ीकण लेंचलै, किधौंचली गढ़जीत । ३३४ ।
विघनहरननिरभयकरन, अरुनबरनअभिराम॥
पासचरन संकटहरन, नमोनमो गुनधाम । ३३५ ।

॥ छप्पैछंद ॥

नमोदेव अरहन्त, सकल तत्वारथ भाशी ॥
नमो सिद्ध भगवान, ज्ञान मूरति अविनाशी ।
नमोसाध निर्ग्रन्थ, दुविध परिग्रह परित्यागी ॥
जथा जात जिन लिंग, धार बन बसे विरागी ।
बंदोंजिनेश भाषित धरम, देवसर्व सुख सम्पदा ॥
येसारचार तिहुँलोक में, करोछेम मंगल सदा । ३३६ ।

॥ दोहा छंद ॥

संबत् सतरहँ शतक मैं, औरनंवासी लीय ॥
सुदि अषाढ़ तिथिपंचमी, ग्रंथसमापत कीय ।३३७।

श्री पार्श्व पुराण भाषा भगवत निर्वाण गमन वर्णन नाम नवम अधिकार संपूर्णम्॥

इति श्री पार्श्वपुराण भाषा कविवर
भूधरदास रचित समाप्तं ॥

* अन्तिम सूचना *

क्रोड़ा क्रोड़ि धन्यबाद है उस परम पवित्र विज्ञान रूप निर्मलबाणी को जिसकी अनुकम्पा दृष्ट सहायता से श्री पार्श्वपुराण भाषा छंद बद्ध कविबर भूधरदास जी रचित मेरे बिचार पूर्वक शुद्धता के सुन्दर बसन धारण कर छंद नामावली यंत्र आदि नाना प्रकार के अनुपम विचित्र भूषण से भूषित हो जैन प्रेस लखनऊ में लाला कन्हैया लाल भगवान दास जी जैन यंत्रअधिकारी के प्रबन्ध से अति उत्तम गरिष्ट चिकने कागज़ पर बम्बई मोटे टाइप (अक्षर) में छपकर अपनी अन्तर बाह्य शोभा कारण धर्म अभिलाषी पुरुषों को प्रियहो जगत प्रसिद्ध हुआ ॥

* ग्रन्थ मुद्रित काल *

॥ दोहा छंद ॥

१९५४
उन्नीससौ चव्वन अधिक, विक्रम सम्बतजान ॥
जैनप्रेस लखनऊ में, मुद्रित भयो पुरान ॥

॥ इति शुभम् ॥

कविवर भूधर दासजी रचित हिंदीभाषा पार्श्वपुराण शब्दार्थ कोष

अ

अ—अव्य०-जब किसी शब्द के आदि में आती है निषेध अर्थ में वर्ते है यथा अतुल तुल्य रहित ॥
अंक-गोद, चिन्ह ॥
अंकुश-हाथी हांकने का औजार ॥
अंकूर—अखुआ, बीज जो बोनेपर फूटता है
अंतरदीप-बड़े दीप में गरभित छोटादीप ॥
अंतरमालका-छाती के हाड़ों का पिंजर ॥
अंतरंग—आत्मीय, अपना, अंदर ॥
अंतराय—८ कर्म में से १ कर्म का नाम ॥
अंतरीक्ष—अधर, निराधार, आकाश ॥
अंतेवर—रनवास, बेगमात ॥
अंबुज—कमल ॥
अंश—भाग, हिस्सा, टुकड़ा ॥
अकसमात—चानचक ॥
अकुलीन—कुलहीन ॥
अगम—अगम्य०—जिसमैं न जासकै ॥
अगर-वृक्ष विशेष०-जिसकी लकड़ी जलाने से सुगंधि देती है ॥
अगूचार—अगवानी ॥
अगाध—गहरा, अथाह ॥
अघ—पाप ॥
अचर—१ इंद्रीजीव, [illegible]जीव का विरोधी शब्द ॥
अचल—पहाड़, पर्वत ॥
अचेतन—निर्जीव, जड़ ॥
अच्छन / अक्षन } नेत्र, आंख, इंद्री ॥
अच्युत—सोलवें स्वर्ग का नाम ॥
अजर—जराका विरोधी शब्द, बुढ़ापा रहित ॥
अजितंजै—जो न जीताजाय ॥
अजोध—जिस से कोई न लड़सकै ॥
अटवी—वन, जंगल ॥
अणिमा—८ ऋद्धि में से १ ऋद्धि का नाम ॥
अणुव्रत—छोटेव्रत,—जिनको श्रावक पालते हैं ॥
अणुरूप—अणुवत सूक्ष्म ॥
अतिशय—तिर्थकरों की अद्भुत रूप ॥
अतीचार—भोंगा, व्रत का मलीन करने वाला काम ॥
अतीव—अत्यंत, बहुत ॥
अथिति—अभ्यागत, आया हुआ,महमान
अद्भुत—अनोखा ॥
अधम—नीच पुरुष, पापी पुरुष ॥
अधर—होठ, लब, निराधार ॥
अधकार—पदवी, सम्पदा, अधिकार ॥
अधिपति—स्वामी, मालिक, राजा ॥

अधो—उर्द्धशब्द का विरोधी शब्द,नीचा
अन—नषेध अर्थ मैं ॥
अनगार—साधु, बेघर, उनाड ॥
अनहद—बाना विशेष, जो ब्रह्माण्ड मे स्वयंसिद्ध बजता है ॥
अनरथदंड—वृथादंड ॥
अन्यथा—और प्रकार, झूठ ॥
अनादिनिधन—सास्ते, सदीवके,कदीम ॥
अनाहूत—बिन बुलाया ॥
अनित्व—सबपर हैं, सब गैरहैं ॥
अनुकूल—सहायक, आधीन, मुवाफिक ॥
अनुत्तर / अनुदिश } बिमानौं के नाम ॥
अनुगृह—दयालता, मेहरबानी ॥
अनुराग—प्यार, दिलका लगाव ॥
अनुसरै—पीछेचलै, पैरवी करै ॥
अनुप्रेक्षाधर्म—बारा भावना ॥
अनुचरित्र—श्रावकों का आचार॥
अनुपम / अनूप } उपमा राहित, बेमिसाल ॥
अनेकांत—अनेक प्रकार से बस्तु स्वरूप निश्चय होना ॥
अपरविदेह—पश्चिम विदेह ॥
अपराध—पाप, दोष ॥
अपशंस—खोटा, नाकिस ॥
अपर्याप्त—जीव जो पूरीपर्याय ना पावै
अपावन—अपवित्र, नापाक ॥
अबूझ—मूर्ख, बेवकूफ ॥
अबिवेक / अबेव } बिबेक राहित, बेतमीज ॥
अभक्ष—नही खानेयोग्य वस्तु ॥
अभंग—नही टूटनेवाला ॥
अभिधान—बोलता नाम, दूसरानाम ॥
अभिशय—दौड़ना, चलना ॥
अभिराम—सुन्दर, भला ॥
अभिलाषा—इच्छा, मनोर्थ ॥
अभेद—नही टूटनेवाला ॥
अभिषेक—स्नान क्रिया
अमरकोष—१ संस्कृत शब्दार्थ कोषका नाम ॥
अमोघ—फलदाता ॥
अयान—मूर्ख बेवकूफ ॥
अराति—गिलानी ॥
अरणी—वृक्ष, विशेष ॥
अर्जुन—वृक्ष विशेष ॥
अरलू—वृक्ष, विशेष ॥
अरीठा—वृक्ष विशेष जिस कें रीठाफल लगता है ॥
अरघ / अर्घ } पूजाकी सामग्री पूजामें जलचढ़ाना ॥
अरि—वैरी, शत्रु ॥
अरुण—लालरंग ॥
अर्चि—पूजन ॥
अर्जिया—अर्जिका, साधुणी ॥
अर्द्धासण—आधा आसण ॥
अर्पै—भेटदेना ॥
अर्हंत—पूजनीक ॥
अलप / अल्प } तुच्छ, थोड़ा किंचित ॥
अलंकार—साहित शास्त्र, काव्य विद्या ॥
अलंकृत / अलंकित } शोभामान ॥
अवधार—निश्चय, विचार ॥
अवधि—हद, सीम एकदेशका नाम ॥
अवधिज्ञान—ज्ञान विशेष देखो ज्ञानशब्द

अवतार—उतरने वाला ॥
अवनी-पृथ्वी, धरती ॥
अवसान—अंत, अंजाम ॥
अवक्तव्य—जो कहने में न आवै ॥
अवकाश—मौका, अवसर ॥
अवरोधन—रोकना ॥
अवंती—एक देशका नाम ॥
अविलोकन } देखना ॥
अविलोय }
अविनाशी—नाश रहित, परम आतमा ॥
अविशेष—विस्तार रहित अर्थात् सामान्य
अशन—भोजन ॥
अशरण } निराधार ॥
असरण }
अशुच—मलीन ॥
अशोक—वृक्ष विशेष ॥
अशेष—सारा कुल, सर्व, ॥
असद्भूत विवहार—? नयकानाम, जो निश्चय मे संत न हो ॥
असमान—जिसकी बराबर दूसरा नहो ॥
असंख—अनगिणत, बेशुमार ॥
असि— तलवार, शस्त्र ॥
असिमसि—चाकू आदि लिखनेकी सामग्री
असीस } आशीर्वाद ॥
अशीश }
असैनी—मन रहित जीव ॥
अस्ति—है अर्थमें ॥
अस्ति नास्ति—हैभी, नहीभी ॥
अस्ति—हाड़—
अस्थिजाल—हाड़ोंका पिंजर, ढांच ॥
अह—दिन ॥
अहि—सर्प
अहो—संबोधन या आदरनें वा हर्ष समय बोला जाता है ॥

आ

आकिंचन—कुछपास न रखना ॥
आकृत—आकार शकल, मूर्ति ॥
आगति—धर्मशास्त्र वेद, आना ॥
आगर—घर, समूह ॥
आघोर—मलीन, नापाक ॥
आचार्य } आचार्य ग्रंथ रचना, निश्चित ॥
आचारज }
आचरै—करै ॥
आठभांतपूजा—अष्टद्रव्यसे पूजनकरना ॥
आतम—आत्मा, जीव ॥
आतुर—लीन, डूबाहुवा ॥
आदेश-आज्ञा, इजाजत, हुकुम ॥
आधार—साहारा, टेक
आन—आज्ञा, सौगंध और ॥
आनत—? विमान का नाम ॥
आनन-मुख ॥
आनमु-झुकना ॥
आभरन-गहना, जेवर, भूषण ॥
आयस-हुकम, आज्ञा ॥
आयाम-लंबाव, तूल ॥
आयुध—हथियार, शस्त्र ॥
आरति—दुख ॥
आरतिध्यान—खोटाध्यान ॥
आरज } उत्तम, आर्यावर्त ॥
आर्य }
आरण्य-वन जंगल ॥
आराध-सेवा, पूजा ॥
आरूढ़—सवार, चढ़ाहुवा ॥

आर्जव—सिधापन, निर्कपट ॥
आवर्त-घेरा, चक्र, भँवर ॥
आव / आयु } आयु, उमर
आवलि—पंक्ति, लड़ी ॥
आवागमन—आना जाना, मरकर जन्म लेना ॥
आश्रव—कर्मोंका आना ॥
आसन-बैठक, बैठनेकी वस्तु, समीप ॥
आहार-भोजन करना ॥
आहारक-१ प्रकार का शरीर ॥

इ

इंद्रायन-विसलूँभा फल ॥
इंद्रयुध-धनुष, जो बर्षा में निकलती है ॥
इंद्रीजनत-इंद्री से उत्पन्न हुवा ॥
इंद्रीविजय-इंद्रीयो का जीतना ॥
इंदु-चंद्रमा ॥
इष्ट-प्यारा, प्रय ॥
इक्ष्वाक-छत्री वंशका नाम ॥

ई

ईर्यापथ-४ हाथ पृथ्वीदेख कर चलना ॥
ईश-बड़ास्वामी, सरदार ॥
ईशान-दूसरे स्वर्ग का नाम ॥

उ

उक्त-कहाहुवा ॥
उग्र-कठोर, भयंकर ॥
उच्छेपण-उखेड़ना, तोड़ना ॥
उज्झाय-उपाध्याय मुनियों का पढ़ानेवाला
उडगण—तारागण ॥
उत्पाद—उपद्रव, अखेड़ा बखेड़ा ॥
उतंग—ऊंचा ॥
उत्कृष्ट—उत्तम, भला ॥
उत्तरगुण—मूलगुण ॥
उत्तरभेद—मूलभेद ॥
उदक—उछलन, कूदन, जल ॥
उदधि—समुद्र ॥
उदर—पेट ॥
उदंड—मैंठेका विरोधीशब्द, अर्थात् खड़ा ॥
उदंबर—अभक्षफल, जो ५ हैं ॥
उदार—दाता, महान पुरुष ॥
उदयाचल—१ पर्वत का नाम, जिसपर सूर्य उदय होता है ॥
उद्धत—ऊपर होना, उछलना ॥
उद्धार—ऊपरलेना, द्वितिय पलका नाम ॥
उद्यम—विचार, तजवीज ॥
उद्यान—जंगल, उजाड़ ॥
उद्योत—प्रकाश ॥
उधरन—ऊंचा ॥
उनहार—तुल्य, बराबर ॥
उन्नती—अधिकता, बढ़वारी ॥
उपकरन—पूजाके बरतन पूजाकी सामग्री ।
उपकार—सहायता ॥
उपकिलकी—नीच, खोटा ॥
उपदेशो—उपदेशदियो ॥
उपचार—उपाय, सेवा, बिवहार ॥
उपद्रव—उपाधी, विघ्न ॥
उपवन—बागीचा, बाड़ी ॥
उपसमुद्र—खाड़ी, छोटा समुद्र ॥
उपसर्ग—दुख, तकलीफ ॥
उपभोग—जोवस्तु बार २ भोगीजाय ॥

उपयोगी—विचार करनेवाला ॥
उपशांत } दबै, घटै, कमहो ॥
उपशमे }
उपाधि—उपद्रव, विघ्न ॥
उपाय—तजवीज, इलाज ॥
उपासक—पूजनेवाला ॥
उभयादिश—दोनोओर, दोनोतरफ ॥
उभयपक्ष—दोनोपक्ष दोनोपखवार ॥
उर—हृदा, मन ॥
उरज—छाती, चूची, ॥
उर्ध्वलोक—स्वर्गलोक ॥
उशण } गरमी, तपत ॥
उशणता }

ऊ

ऊद्व—ऊजड़, वैरान ॥
ऊन—घटना ॥
ऊपमा—मुकाबला, तशबीह ॥
ऊंबर—१ फलका नाम जो अभक्ष है ॥
ऊर्ध } ऊंचा, अधोका विरोधीशब्द॥
ऊर्धे }

ऋ

ऋतु—मौसम, फसल, ऋतु ६ हैं वसंत १ ग्रीषम २ वर्षा ३ शर्द ४ हिम ५ शिशिर ६
ऋतुराज—बसंतऋतु ॥

ए

एकत्व—एकपना ॥
एमो—ऐसेही ॥
एव—इस प्रकार, यह, निश्चय ॥
एवम—इस प्रकार, यह, ऐसी तरह ॥

ऐ

ऐरावत—इन्द्रनिज हाथी का नाम, देश विशेष ॥
ऐलक—११ प्रतमाधारी श्रावकों में से १ प्रकार का श्रावक ॥

औ

औ—और ॥
औंगा—वृक्ष विशेष ॥
औदारक—शरीर, देह ॥
औषधी—दवा ॥
औसर—समय, काल, मौका ॥

क

कंकोल—कबाबचीनी वृक्ष ॥
कंचन—सुवर्ण, सोना धातु ॥
कंज—कमल ॥
कंटकमई—कांटो वाला ॥
कंठ—गला, हलक, जबानी ॥
कंठिका—कंठी, माला, गहना ॥
कंत—स्वामी, पति ॥
कंद—जड़, गांठ ॥
कंदर } गुफा, पहाड़कीखोह,
कंदरा }
कच्छप—कछुवा, सानार,
कटक—कड़ा, गहनाविशेष, सेना, फौज॥
कटि—कमर ॥

कटिभूषण—तगड़ी,गहनाविशेष ॥
कटू—कड़वा,तल्ख ॥
कटुकरस—कड़वारस ॥
कथिक—कहने वाला ॥
कदा—कभी ॥
कदाभि—किसी कालभी ॥
कन } नाज, गल्ला ॥
कण }
कनकाचल—सुमेरु पर्वत ॥
कन्हार—वृक्ष विशेष ॥
कपि—बंदर ॥
कपोत—कबूतर रंगलेश्या ॥
कपोल—गाल, रुखसार ॥
कवच—जिरह, बकतर, लोहे की कड़ियों का जामा ॥
कमलनि—कुमोदनी, कमलोंका समूह ॥
कमलामज्जन—लक्ष्मीस्नान, देवीस्नान ॥
कमंडल-पानीका भाजनजो मुनि रखते हैं ॥
करण—इंद्री ॥
करना—फूल विशेष ॥
करपट—वृक्ष विशेष ॥
करहा—ऊँट ॥
करवत-लकड़ी चीरने का औजार,आरा ॥
करा—करने वाला, यथा शिवकरा ॥
कराल—भयंकर, डरावनी सूरत ॥
करि } हाथी, गज ॥
करी }
करनी—हथनी, रानका औजार, करतूत ॥
करुणा—दया ॥
कर्णिका—फूलकी डोडी ॥
कल—चैन, आराम, सुख ॥
कल्पित—झूंठी, फरजी ॥
कलपलोक—स्वर्गलोक ॥
कलपवासी— देवताविशेष,जो १० प्रकारहैं
कलेवर—लाश लोथ ॥
कला—सामर्थता, अंश, भाग, ६४ कलारागादि विद्या प्रसिद्ध हैं ॥
कलाप—दुःख, समूह, मोर पक्षी ॥
कलानिधि—चंद्रमा ॥
कलश—घड़ा, कुंभ, सोनेका उपकरन जो मंदिर के शिखर पर लगाया जाता है॥
कल्पतरु } स्वर्ग का वृक्ष जो मन वांछित फल देता है ॥
कल्पवृक्ष }
कलत्र—स्त्री, घरकी स्त्री ॥
कलित—भरी हुई ॥
कलुसता—कालस, स्याही ॥
कल्लोल—लहर, मौज ॥
कलमलाय—कुल बलाना ॥
कषाय—क्रोध मान माया लोभ,कसैलारस लाल रंग ॥
काँड—तीर विशेष अध्याय ॥
काँति—चमक, दमक ॥
काउसगमुद्रा—खड़े होकर ध्यान लगाना
काकणी—रत्न विशेष ॥
कादो—कीचड़, गारा ॥
कापुरुष—खोटा पुरुष ॥
कायर—डरपोक ॥
कारागृह—कैदखाना, जेलखाना ॥
काल—मौत, समय, काला रंग ॥
कालमा—कालौंस, स्याही ॥
कारमाण—१ प्रकार का शरीर ॥
कालाणू—काल परमाणु ॥
काशिप—गोत्र का नाम ॥
काशी—काशीदेश १ नगर का नाम ॥
काइलाकार—बिलाव कैसी सूरत ॥

किंकर—दास, बांदा, सेवक ॥
किधौं—मानो, गोया, कधी, किधो ॥
किंनरी—देव अंगना जाति जो गीत गाती हैं
किर्माला—फालसा वृक्ष, पलास वृक्ष ॥
किरीट—मुकट, ताज ॥
किलकी—अधम पुरुष धर्मविध्वंसी पुरुष ॥
किलकिलंन—किलकी मारना, किल किल करना ॥
कीरति—कीर्ति, यश ॥
कीधो—किया ॥
कु—खोटे अर्थ में यथा कुभाव खोटा भाव
कुंकुम-केसर, जाफ़रान ॥
कुंजर-हाथी ॥
कुंत-भाला, बरछा अस्त्र ॥
कुंद-फूल विशेष ॥
कुंभ-घड़ा, मटका ॥
कुटिल-नीच पुरुष, क्रूर पुरुष ॥
कुठार-कुहाड़ा, कुल्हाड़ा ॥
कुमार-बाल अवस्था ॥
कुरंग-हिरन, मृग ॥
कुल-वंश ॥
कुलगिर-पहाड़ विशेष ॥
कुलाचल—पर्वत विशेष ॥
कुलीन-कुलवाला, खांदानी ॥
कुबेर-कोषाध्यक्ष, खजानची ॥
कूंचा-आगका पलीता ॥
कूंची—ताली, कुंजी ॥
कूट—पहाड़ की चोटी ॥
कूप—कुवा ॥
केवलज्ञान—देखो ज्ञानशब्द ॥
केल—कलोल, क्रीड़ा, खेलकूद ॥
केश—बाल ॥

केहर
केहरी } सिंह, शेर ॥
केदरनाद—जोतिषी देवताओं का स्थान विशेष ॥
कोक—मेंढक जानवर ॥
कोट—कोट सिमानी, ओट, फसील ॥
कोटर—वृक्षका खोखल ॥
कोदौं—१ अनाजका नाम, जिससे नशा होता है ॥
कोप—क्रोध, गुस्सा ॥
कोपीन—लिंगोट ॥
कोविद—पंडित बुद्धिमान ॥
कोलाहल—रौला, पुकार ॥
कोष—खज़ाना, भंडार, शब्दार्थ ग्रंथ ॥
कृत—बनाई हुई ॥
कृतम—बनावट ॥
कृपान—तलवार, खांडा ॥
कृपाल—दयाल ॥
कृम—परपाटी सिलसिला, कीड़ा, जंतु ॥
कृश—कमज़ोर, हलका, निर्बल ॥
क्रीड़ा—खेल, कूद, चलना फिरना, सैर ॥

ख

खंड-टुकड़ा, हिस्सा ॥
खग—विद्याधर, आकाश गामी ॥
खनी-गढ़ा खड्ड ॥
खजूर-फलखजूर जानवर ॥
खड्ग—तलवार, खांड़ा ॥
खर—गधा पशु ॥
खरदूं—वृक्ष विशेष ॥
खातिका-खाई, खंदक ॥
खारक—छुहारा, वृक्ष ॥

खिन्न—भिन्न भिन्न ॥
खिरी—चई, गिरी, उतरी ॥
खजड़—वृक्षविशेष ॥
खेट—खेड़ा, आबादी ॥
खेत—क्षेत्र ॥
खेद—दुःख
खेपी—बखेरी, फेंकी ॥
खैर—वृक्ष विशेष ॥
ख्याति—फैलाव प्रकाश ॥

ग

गंड—आखों के नीचेका भाग, कपोल ॥
गंध—बास, बू, सुगंधि ॥
गंधकुटी—केवली के बैठनेका देवरचित स्थान
गंधर्व—गानेवाले देवता ॥
गंभीर—गहरा, अथाह ॥
गगन—आकाश, आसमान ॥
गज—हाथी ॥
गजदंत—पहाड़ विशेष ॥
गजै—गाजै, शोरकरै, गूंजैं ॥
गढ़—किला, दुर्ग ॥
गणईश, गणराज, गणधर, गणवृद्ध—भगवान की धुनिका अर्थ करने वाला ४ ज्ञानका धारक, मुनियों के गणमें प्रधान मुनि ॥
गणिका—वेश्या, रंडी, कसबी ॥
गति—चलना फिरना, नरक १ तिर्यंच २ देव ३ मनुष्य ४
गयंद—हाथी, गज ॥
गरव, गर्व, गर्भ—पेट, आधान, मान ॥
गरिष्ठ, गरीष्ठ—भारी बोझल ॥
गांडर—एक प्रकारकी घास ॥
गामी—चलनेवाला ॥
गिर—पहाड़ ॥
गिरदाकार— गोल ॥
गिले—निगले ॥
गीध—गिद्ध पक्षी ॥
गुँझा—चिरमटी, घूंघची ॥
गुप्त—छिपा, पोशीदा ॥
गुप्ति—३ हैं, मन १ बचन २ काय ३ रोकना ॥
गुफा—पहाड़ की खोह ॥
गुडहल—वृक्ष विशेष ॥
गुणव्रत—३ वृत जिनको श्रावक पालते हैं ॥
गुलमखेटपुर—१ नगरी का नाम ॥
गेह—घर ॥
गैल—साथ, रस्ता ॥
गोट—सभा, टोली ॥
गोंदी—वृक्ष बिशेष, जिसका फलगोंदनी है ॥
गोपति—बैल ॥
गोपुर—गौशाला ॥
गोमठसार—ग्रंथका नाम ॥
गोरखपान—पानविशेष ॥
गौतम—महावीर स्वामी के प्रधान गणधर का नाम
गौन—गवन, चलन, फिरन ॥
ग्रंथ—पुस्तक पोथी ॥
ग्रह—घर ॥
ग्रीव—गला गर्दन ॥
ग्रैवेयक—बिमानों की संज्ञा ॥

घ

घट—घड़ा, कुंभ, हृदा, चित्त ॥

घन—बादल, घटा, समूह ॥
घनसार—कपूर, जल, चंदन ॥
घनघोर—बादल का समूह, घटा ॥
घरट्टी—चक्की ॥
घरमूसन—घर लूटना ॥
घाट—दरिया पहाड़ का रस्ता ॥
घान—समूह ॥
घाम—धूप, गरमी ॥
घिघाय—रोना ॥
घुटियागमन—घुटनों के बल चलना ॥
घूघू—उल्लूपक्षी ॥
घोर—समूह, गरज, मलीन ॥
घोरवीर—सूरवीर ॥

च

चंड—तेजमान ॥
चंद्रोपक—चंदोया, सामियाना ॥
चंपक—चंपावृक्ष ॥
चंपत—चापना, दबाना, भागना ॥
चक्र—हथियार विशेष, गाड़ी के पहिये, चक्रवर्तराजा ॥
चाप—धनुष शस्त्र ॥
चामीकर—सोना धातु ॥
चारण—मुनिजाति विशेष ॥
चारित—चारित्र, चलन ॥
चारु—सुंदर, भला ॥
चिंतामणी / चिंतारैन —रत्न विशेष, १४ रत्नमें से १ रत्न का नाम ॥
चिन्ह—लक्षण, निशान ॥
चिंता—इच्छा ॥
चिद्रूप / चिदातम —ब्रह्म ॥
चिर—सदैव ॥
चाह—दुख ॥
चूड़ामणि—एक सिरपेच जो चोटी में लगाते हैं
चैतवृक्ष—१ प्रकार का वृक्ष, जिसमें प्रतिमा आकार होता है ॥
चोल—मजीठ वृक्ष, जिसका रंग बनता है ॥
चौपथ / चौहट —चौराहा ॥

छ

छंटा—छींट, बूंद, कनरा ॥
छंदशास्त्र—पिंगल शास्त्र ॥
छत्रभंग—राजनाश ॥
छन्न—छाया हुआ ॥
छवि—शोभा, रौनक ॥
छय—क्षय, नाश ॥
छींट—छींट, बूंद, कनरा ॥
छानी—छिपा, पोशीदा ॥
छाप—मोहर ॥
छायक—क्षायक सम्यक दर्शन ॥
छिद्र—छेद, सूराख ॥
छिन्नभिन्न—टूटेफूटे, टुकड़े टुकड़े ॥
छुद्रघंटका—घुंघरू भूषण ॥
छुधा—क्षुधा, भूख ॥
छुल्लक—११ प्रतिमाधारी श्रावकों में १ प्रकार का श्रावक ॥

ज

जंगम—चलने वाले जीव, स्थावर का विरोधी शब्द ॥
जंबू—जांबूफल प्रसिद्ध है ॥

जंतु—जानवर, जीव ॥
जंपत—जापै, स्मरण करै ॥
जंबू—१ द्वीपका नाम, जामनवृक्ष ॥
जंभीरी—नीबूं, वृक्षविशेष ॥
जघन्य—छोटा ॥
जड़—अचेतन ॥
जनक—पिता, बाप ॥
जननी—माता ॥
जयो—पैदाहुआ, जैवंताहो ॥
जरा—बुढ़ापा ॥
जलधि—समुद्र, सागर, प्रमाण ॥
जलधर—बादल, मेघ ॥
जातिस्मरण—पिछलेभवकीबातयादआना
जाम—पहर, जिससमय ॥
जावजीव—जीनेतक ॥
जावंत—जितने, जिसक़दर ॥
जिनमुद्रा—जिनधर्मका चिह्न ॥
जिनयज्ञ—जिनपूजा ॥
जिनसेन—१ आचार्यका नाम ॥
जीरण—पुराना, गलाहुआ ॥
जीवन—जिंदगी, जल ॥
जेठा—बड़ाबेटा ॥
जै, जय—जीत, फतह ॥
जोग—ठीक, मुनासिब ॥
जोजन—१ प्रमाण का नाम, जो ४ कोस का होता है ॥
जोट—जोड़ा ॥
जोतषी—१ प्रकारके देवता ॥

झ

झंझावाय—क्रूरपवन, आंधी ॥
झालर—घड़ियाल बाजा ॥

ट

टेक—सहारा, आधार, थंभ ॥
टेव—स्वभाव, आदत ॥

ठ

ठयो—ठैरायो, धरो, करा, हुवा ॥

ड

डंड—डंडा, लठ ॥
डकारत—डकारताहुवा, दहाड़ताहुवा ॥
डाकिनी—पिशाचजात स्त्री ॥
डाहै—झकोलै, खदूंलै ॥

ढ

ढोक—प्रणाम, झुकना, डंडोत ॥

त

तंबोल—पान, गर्भवती वा जच्चा स्त्री के पान मेवा आदि सामग्री भेजना ॥
तगर—वृक्ष विशेष ॥
तट—नदीका किनारा ॥
तटनि—नदी ॥
ततखिन—तिसहीकाल ॥
ततकाल—उसीसमय ॥
तत्त्व—मूल, सार, प्रकृति ॥
तथा—तैसा, तनक, थोड़ा ॥

तम—अंधेरा ॥
तमाल—वृक्षविशेष ॥
तयो—पानीहुयो, तगयो ॥
तरंग—लहर, मौज ॥
तरंगनि—नदी ॥
तरंड—नौका, किश्ती ॥
तरल—चंचलता ॥
तांडव—नृत्यविशेष ॥
ताम—तिससमय, तिसकाल ॥
तानै—तीरखैंचे, निगाह जोड़ै ॥
ताल / तार — ताड़वृक्ष, खटतालबाजा, पंखा, तालाब
तालीस—अमलतासवृक्ष ॥
तात—पिता, बाप ॥
तिमर—अंधेरा ॥
तिय—स्त्री ॥
तियवेद—त्रियाचरित्र, त्रियइच्छा ॥
तिर्थंकर—पवित्र, पाक ॥
तिलक—टीका, शोभा, विवर्ण ॥
तृषा—प्यास ॥
तींदू—वृक्षविशेष ॥
तीनकाल—प्रातः १ मध्याह्न २ संध्या ३ ॥
तुंग—ऊंचा ॥
तुंडा—चोंच, मुख ॥
तुचा—खाल, चमड़ा ॥
तुरंग—घोड़ा ॥
तुरिय—चौथा ४ ॥
तुस—छिलका ॥
तुसार—पाला, बर्फ ॥
तूंबी—१ बेलका फल प्रसिद्ध है ॥
तूत—वृक्ष विशेष ॥
तेला—३ दिनका व्रत ॥
तैजस—१ प्रकारका शरीर ॥
तोय—जल, पानी ॥
तोरण—फूलमाला, बंदरवाल ॥

थ

थपति—राज, मेमार ॥
थयो—हुयो ॥
थरपिये—स्थापन करिये ॥
थल—रेतली धरती ॥
थान—स्थान ॥
थाप—थापकर, बैठाकर
थावर—जंगमका विरोधी शब्द, १ इंद्रीजीव
थिति—आयु, स्थिति, ठैराव ॥
थितिपात—कर्मोंका थिति बंद गिरना ॥
थुति—स्तुति ॥
थूल—स्थूल, भारी, १ प्रकार का शरीर ॥

द

दंडपुर—१ नगर का नाम ॥
दंपति—स्त्रीपुरुष, जोड़, खाविन्द ॥
दरवित-द्रव्य संबंधि ॥
दरसत-देखंत
दर्पन-मुंह देखने का शीशा ॥
दर्शन-देखना, निश्चय करना ॥
दल-पत्ता, सेना, फौज ॥
दलन-दलना, तोड़ना ॥
दसन-दांत ॥
दह—गहराव, पानी का भँवर ॥
दहे-जले ॥
दाम-माला ॥
दामनि-बिजली ॥
दारै—विदारै, चीरै ॥

दारुण—क्रूर, कठोर ॥
दाह–तप, गरमी, आग, जलना ॥
दिगविजय—चारोंदिश जीतना ॥
दिग्गज–पहाड़ विशेष ॥
दिगपाल—देवता विशेष ॥
दिगंबरमुद्रा–नग्न चिन्ह ॥
दिठ—नजर, निगाह ॥
दिट्ठी—देखी, निगाहकरी ॥
दिढ—मजबूत ॥
दिननाह, दिनपति — सूर्य, भानु ॥
दिवस—दिन ॥
दिवाकर, दिवायर — सूर्य, भानु ॥
दिशा—तरफ, ओर, सिम्त ॥
दिशाकुमारी—देवी विशेष ॥
दिशाचार—चौपड़, ४ दिशा ॥
दिष्ट—नजर, निगाह ॥
दिक्षा—गुरुमंत्र, उपदेश, क्रिया विशेष ॥
दीन—रंक, महुताज ॥
दीप—दिवला, चिराग, बहुत बड़ा मुल्क ॥
दुकूल—रेशमी कपड़ा, महीन वस्त्र ॥
दुठ—दुष्ट, क्रूर ॥
दुज—ब्राह्मण, विप्र ॥
दुति—चमक दमक ॥
दुद्धर—कठिन, कठोर ॥
दुवार—दरवाजा, पौल ॥
दुर्जन–खोटा आदमी ॥
दुर्भिक्ष—अकाल, कहत ॥
दुर्ग—गढ़, किला ॥
दुरस—दुरस्त ठीक, योग्य ॥
दुरी—छिपी ॥
दूब—घास विशेष ॥
देवभाषा—संस्कृतबोली ॥
देशना—उपदेश ॥
दैत्य—असुर, राक्षस ॥
दौं—आग ॥
दौर—दौड़, हद ॥
दृष्टांत—मिसाल ॥
द्रोणामुख—समुद्र के नीचकी खुशकी की आबादी ॥

ध

घन—डंगर, ढोर, रुपया, पैसा ॥
धनंजय—अग्नि ॥
धनद, धनपति — कोषाध्यक्ष, खजानची ॥
धनुष—कमान, आयुध ॥
धरा—धरती ॥
धरेंद्र—भवनवासी देवताओं का इंद्र ॥
धात—सोना आदि ७ धातु हैं ॥
धाम—स्थान, घर, किरण ॥
धाय—दूध पिलानेवाली स्त्री ॥
धायधाय—दौड़दौड़ ॥
धिक—फिटकार ॥
धरि—धीर्जमान ॥
धुजा—झंडी, पताका ॥
धुनि—शब्द, घोर, नदी ॥
धुर—हद, किनारा ॥
धुलिसाल—मकान विशेष ॥
धौल—सफेद, श्वेत ॥
ध्रुव—तारा विशेष ॥

न

नंदन—पुत्र, बेटा ॥

नंदीसुर—आठवेंद्वीप का नाम ॥
नग—पहाड़.मणि ॥
नति—नम्रता, झुकना ॥
नपुंसक / नपुंस्क — हिजड़ा, नामर्द ॥
नरवै / नरेश — राजा ॥
नव—नया, ९ का अंक ॥
नरिंद्र—राजा, १ छंदका नाम ॥
नसा—नस, रग ॥
नाग—हाथी, सर्प ॥
नागर—उत्तम, भला, चतुर ॥
नाटक—नाच तमाशा ॥
नाथ—स्वामी, मालिक ॥
नाद—शब्द, बाजा विशेष ॥
नाभगिर—पर्वत विशेष जो ४ हैं ॥
नाभि—आदनाथ स्वामी के पिताका नाम ॥
नायक—सरदार ॥
नास्ति—नहीं है ॥
नास्तिकमत—जिसमत में पुण्य पाप न माना जाय ॥
नापै—तोड़ै, टुकड़े करै ॥
नाह—नाथ, स्वामी, प्राकृत शब्द ॥
नाहर—सिंह, शेर ॥
निंदा—मज़म्मत, बुराई ॥
नंदाविरध / नंदवरध — आनंद रहो, बढ़ो ॥
निकुंज— रमणीक स्थान ॥
निकट—समीप, नजदीक ॥
निकाज—निरर्थक, निष्फल ॥
निकेत—घर ॥
निग्रह—दंड, सजा, जुरमाना ॥
निग्रंथ—शुद्धमना, साफ़दिल ॥
निठुर—कठोर ॥
निदय—बेरहम ॥
निदान—निश्चय, तहक़ीक़ ॥
निधान—स्थान, घर ॥
निधि—कोष, निधि ९ हैं ॥
निमेष—पलक ॥
निमित्त—कारण ॥
नियोग—काम, शग़ल ॥
निर्धार—निश्चय ॥
निरत—नाच ॥
नृप—राजा ॥
निरमान—रचाहुवा ॥
निरंतर—लगातार ॥
निरवरै—दूरहो ॥
निरमायो—बनायो, रचो ॥
निर्जरा—कर्मोंका गिरना ॥
निरख—देखकर ॥
निरोध—रोक, थाम ॥
निर्वहै—चलै, निबहै ॥
निवसै—बैठै ॥
निवास—स्थान ॥
निवेद—प्रार्थना ॥
निहोर—कृपा, उपकार ॥
निशा—रात्री ॥
निशनाथ—चंद्रमा ॥
निशान—बाजाविशेष, झंडा ॥
नीत—प्रबंध कानून ॥
नीतनिपुन—नीतजाना, पंडित ॥
नीरज—कमल ॥
नीलानिषध—पर्वत विशेष ॥
नेक—थोड़ासा ॥
नेह—प्यार ॥
नेवर—पायजेब ॥

नैर—नगर ॥
न्यात—पंक्ति, पांति ॥
न्याय—तुल्य, बराबर, भलीरीत ॥
न्होंनपीठ—चौकी, पटड़ा ॥

प

पंक—कीचड़, गारा ॥
पंचकरण—पांचइंद्री ॥
पंचमज्ञान—केवल ज्ञान ॥
पंचलघुअक्षर—अ—इ—उ—ऋ—ऌ ॥
पंचागनि—चार अग्निचारोंओरकी पांचमी सूरजकी गरमी सिरपर उठाते हैं, या अंगीठी आगकी सिरपर धरते हैं ॥
पंचानन—शिह, शेर ॥
पंचालदेश—पंजाबदेश ॥
पंचास्तिकाय—काल रहित पटद्रव्य की पंचास्तिकाय संज्ञा है ॥
पंति—पंक्ति, पांति ॥
पगे—मिलै ॥
पट—वस्त्र, किवाड़ ॥
पटतर—उपमा, मिसाल ॥
पटराणी—प्रधानराणी ॥
पटल—परदा, ओट ॥
पटह—ढोलबाजा ॥
पठायो—भेजो ॥
पठनपाठन—पढ़ना पढ़ाना ॥
पडगाहे—पूजे, आदरकरा ॥
पणच—कमानका चिल्ला ॥
पतंग—वृक्षविशेष प्रसिद्ध है जिसका रंग बनता है ॥
पति—स्वामी, मालिक खाविंद ॥
पत्यारा—प्रतीत, विश्वास ॥

पथ, पंथ — रस्ता, गैल ॥
पथिक—बटेऊ, मुसाफिर ॥
पद—पैर, दरजा, अधिकार ॥
पदार्थ—वस्तु चीज ॥
पद्मराग—हीरा, चुन्नी, लालरंग कमल ॥
पन्नग—सर्प ॥
पय—दूध, जल ॥
पयान—चलना, यात्रा, कूंच ॥
पयासै—फैले ॥
पयूष—अमृत ॥
परयन—परलोग, गैरआदमी ॥
परणत—हालत, अवस्था ॥
परनी—व्याही ॥
परपंच—छल, द्रोह, छलया ॥
पर्वत—पहाड़ ॥
परब्ब—पुन्नका दिन ॥
परम—उत्तम, श्रेष्ठ, बड़ा ॥
परमर्दितमार्ग—चलता रस्ता, साफरस्ता ॥
परमाद—आलस, सुस्ती ॥
परधान—बड़ा, महान ॥
परमारथ—बड़ा प्रयोजन ॥
परमित—अन्दाजा, अटकल ॥
परमेठ—परमइष्ट, अतिप्यारा ॥
पर्याय—अवस्था, अलटपलट ॥
पर्याप्त—पूरेप्राणकी प्राप्ति ॥
परवीन—चतुर ॥
परशंसा—बड़ाई ॥
परसै—छूवै ॥
परागा—रज, धूल ॥
परिहरै—छोड़ै ॥
परिखा—खाई, खंदक ॥
परिग्रह—सामान, असबाब ॥

परिपाक—फल, नतीजा ॥
परिवार—कुटंब, कुनबा ॥
परिसह—दुःख, तकलीफ ॥
परोक्ष—पीठपीछे, परदेमें ॥
पल—मास, पलक, कालकी १ गिनती ॥
पसत्थ—प्रशस्त, भला, सुंदर ॥
पल्लव—पत्ता, पत्र ॥
पक्ष—पखवारा १५ दिन ॥
पसाय—फैलना ॥
पहुमी-पृथ्वी, धरती ॥
पैर्य—अलटपलट ॥
प्रति-सनमुख, हरएक, नकल ॥
प्रणाम—नमस्कार ॥
प्रमुख—मुखिया, आदिलेकर ॥
प्रकृति—स्वभाव, आदत, वाण ॥
प्रतिज्ञा—नेम, आखड़ी ॥
प्रभाव-यश, प्रताप ॥
प्रभ—प्रकाश ॥
प्रदक्षना—परकम्मा ॥
प्रयंग—प्यारा, सुंदर ॥
प्रभा—चमक ॥
प्रमोद—आनंद ॥
प्रथमअवतार—आदिनाथ स्वामी ॥
पाखर—वृक्ष विशेष ॥
पायकसंघ—प्यादोंकी सेना ॥
पादुका—खड़ाऊँ ॥
पषान—पत्थर ॥
पावक—आग ॥
पाल—ढौल, हद ॥
पावस—वर्षा, ऋतु ॥
पात्र—बरतन ॥
पातक—पाप ॥
पारना—व्रतखोलनेका भोजन ॥
पारियात—हारशृंगार वृक्ष ॥
पारन—पहार, फूलवाला वृक्ष ॥
पाट—१ प्रकारका वस्त्र ॥
प्रकार—किला, गढ़ ॥
प्रासुक—उत्तम, शुद्ध ॥
प्राणु-जीव ॥
पिंड—गोला ॥
पिंगल—छंदविद्या ॥
पिशुन—दुष्ट, कठोर ॥
पिज्ञा-निरमलबुद्धि, सरस्वती ॥
पीठका-चौकी ॥
पीलू वृक्षविशेष ॥
पीहर-पिताका घर, पीवका घर ॥
पीची—मोरपंख, मोहनी ॥
पीर—दुःख, दर्द ॥
पुंग- सुपारी वृक्ष ॥
पुराण—तिर्थंकरोंकी कथाका शास्त्र ॥
पुनीत—निर्मल, उत्तम ॥
पुर—नगर, बस्ती ॥
पुव्व—पूर्वदिशा, पहलाभाग ॥
पुन्नयोग—धर्मका समय ॥
पुनि—फिर ॥
पुग्गल—पुद्गल, परमाणु ॥
पुरंदर—इंद्र ॥
पुरानपुरुष—महापुरुष ॥
पुनपद—पूर्णयोग पुरुष ॥
पूर्व-प्रथम, पहला ॥
पेर—पेड़ वृक्ष ॥
प्रेत—भूतजाति ॥
पै—पर, लेकिन, परंतु ॥
पोत—जहाज, बड़ीनाव ॥
पोल—खाली, मुफ्त, आकाश ॥
पोष—पालन ॥

पोसह—व्रत ॥
पौर—दरवाजा ॥

फ

फणि } सर्प, नाग ॥
फणी }
फरस—स्पर्श ॥
फुलिंग—चिंगारी, पतंगा ॥
फुनि—फिर, पुनि ॥

ब

बंदीजन- कैदी ॥
बंदूं—नमस्कार करूं ॥
बंधव—भाई ॥
बई—बोई ॥
बक्रता—टेढ़ापन,बांकापन ॥
बज्र—बिजली, हीरामणि ॥
बज्रघोष—बिजलीकी कड़क ॥
बदन—मुख ॥
बध—मारना ॥
बधिर—बहरा ॥
बधू—स्त्री,औरत ॥
बनपालक—माली,बागवाना ॥
बनस्पति—वृक्षादिक,घासफूस ॥
बमो—उलटदियो ॥
बय—समय,उमर ॥
बयाल—पवन ॥
बरग—समूह ॥
बरती—बरतनेवाले,रहनेवाले ॥
बरयां—बार,समय,वक्त ॥
बर्गना—पिंड,समूह, मजमूआ ॥
बर्द्धमान—महावीरस्वमी ॥
बल—सामर्थ,ताकत ॥
बलदेव—बलभद्र ॥
बलिव्याकार—गोल ॥
बलि—बलवान ॥
बसन—बस्त्र,कपड़ा ॥
बसा—चरबी ॥
बसु—आठ८ ॥
बहन—चलन ॥
बाघ—सिंह,शेर,बघेरा ॥
बाचाल—बोलनेवाला ॥
बाज—घोड़ा ॥
बाज़ारनी—वेश्या,कसबी ॥
बाजित्र—बाजा ॥
बाड—रोक,फसील ॥
बाणीगोचर—बाणी में आनेयोग ॥
बातसल्य—गौ,बच्चेजैसीप्रीतिपालना ॥
बाद—निष्फल चरचा,वृथाशब्द ॥
बान—स्वभाव,आदत ॥
बापी—बावड़ी ॥
बामा—पार्श्वनाथ स्वामीकीमाताका नाम ॥
बाय—पवन'हवा ॥
बायक—वचन,बोल ॥
बायुकुमार—देवताविशेष ॥
बारण—हाथी ॥
बारिध—समुद्र ॥
बारिज—कमल ॥
बाल—बालक,बच्चा ॥
बासर—दिन ॥
बासुदेव—नारायन ॥
बाहन—सवारी ॥
बाह्य—बाहर ॥

बिंब—प्रतिमा, मूर्ति ॥
बिलास—नाचगांत विशेष ॥
बृष्ट—वर्षा ॥
बीजना—पंखा ॥
बीना—बाजा विशेष ॥
बुध—पंडित ॥
बे—दो, २ ॥
बेग—जलदी, जल्दी ॥
बेगवती—नदी ॥
बेढ़े—घेरेहुए ॥
बेदन— } दुःख, व्याकुलता ॥
बेदना— }
बेदनीकर्म—८ कर्मों में से १ कर्म का नाम॥
बैन—वचन, बोल ॥
बैस्वानर—अग्नि ॥
बोध—ज्ञान ॥
बोधो—समझायो, उपदेश दियो ॥

भ

भँग—टूटना ॥
भंजो—काटो ॥
भट—जोधा, सूरवीर ॥
भण—कहने अर्थ में ॥
भद्र—भगवान ॥
भद्रमाल—वन विशेष ॥
भर्तार—पति, स्वामी ॥
भव—संसार, जन्म ॥
भरम—भ्रम, संदेह ॥
भवि—भव्य जीव, सीझने वाला जीव ॥
भक्षण—भोजन करना ॥
भ्रमर—भवरा जानवर ॥
भाग—हिस्सा, नसीबा ॥
भाज } पात्र, बरतन ॥
भाजन }
भान—सूर्य ॥
भाय—भांति, स्वभाव, भाई ॥
भाल—माथा, पेशानी ॥
भारजा—स्त्री ॥
भारती—सरस्वती, बोली ॥
भावना—चितवन करना ॥
भास } चमक दमक, प्रकाश ॥
भासुर }
भ्राता—भाई ॥
भिन्न—टुकड़े टुकड़े ॥
भिक्षाभाजन—कमंडल ॥
भीत—भयवान ॥
भुजा—बाजू, टंड ॥
भुजंगम—सर्प ॥
भूताचल—पर्वत विशेष ॥
भूपाल—राजा ॥
भूमिगोचरी—पृथ्वीपर चलनेवाले ॥
भूर—बड़ा, बहुत ॥
भूषण—गहना, जेवर ॥
भेट—उपहार, नजर, मिलने अर्थ में ॥
भेद—फूट ने अर्थमें, दिलकी बात ॥
भेरि—बाजा विशेष ॥
भेव—भेद ॥
भो—संसार, जन्म, संबोधन अर्थ में ॥
भोग—जो १ बार भोगाजाय ॥
भृंगार—पूजाकी कटोरी ॥
भृंगी—जानवर विशेष, कीट विशेष ॥

म

मंगल—कल्यान, आनंद ॥
मंडप—छाया दुवास्थान ॥
मंडल—घेरा, गिरदा, इलाका ॥

मंडली—सभा, गोष्ट ॥
मंत्री—सलाहकार ॥
मँझार—विस्रव ॥
मकरंद—फूलका रस ॥
मगध—देश विशेष ॥
मझार—मध्य अर्थ में ॥
मणिरैन—रत्न विशेष ॥
मत्त—मस्त ॥
मति—बुद्धि, अकल ॥
मद- घमंड- हाथीकेकपोलकाचुवाव
मदिरा- शराब ॥
मदन }
मनमथ } कामदेव ॥
मनसाहार—मन से आहार करना ॥
मनोहर—सुन्दर ॥
मयमंत—मस्त, शराबी ॥
मय—मदिरा मिले अर्थ में ॥
मयँक—चन्द्रमा ॥
मस्तक—माथा, पेशानी ॥
मसान—मरघट, छला ॥
मसि—लिखने की स्याही ॥
महंत—बड़ा,प्रधान पुरुष ॥
महिमा—बड़ाई, ॥
मंदार—वृक्ष विशेष स्वर्ग में है ॥
मधुप—भवरा जानवर ॥
मनपर्य्य—१ज्ञान का नाम देखो ज्ञानशब्द ॥
मरम—हृदा ॥
मचकंद—पुष्प विशेष ॥
मरुवा—वृक्ष विशेष ॥
महुवा—वृक्ष विशेष ॥
मदगज—मस्त हाथी ॥
मघवा—इंद्र ॥
महीधर—पहाड़, पर्वत ॥
मरहट—मरहटा देश ॥

माचन—घुमेर ॥
माणक—चुन्नी ॥
मातंग—हाथी, गज ॥
मानसीक—मनसेही आहार करना ॥
मानखेत्र—१पहाड़ का नाम ॥
माया—फरेब, धोका, मकर ॥
मार—कामदेव, ॥
मारणांत—मरनेका समय ॥
मार्गप्रभावन—धर्म मार्गकी प्रभावना ॥
मार्गहार—मुसाफिर, रस्तेके हारेहुये ॥
मारुत—देवजाति ॥
मारू }
मारूथल } बागड़ का देश, निरजल देश ॥
मालती—पुष्प विशेष ॥
मालव—मालवा देश ॥
मित—तोल, अंदाजा ॥
मिथ्यात—झूंठ ॥
मिश्र—मिलाहुवा ॥
मीन—मछली, ॥
मुकर—दर्पन, आइना, शीशा ॥
मुक्ताफल—मोती, ॥
मुंड—खोपरी, मूंडकर ॥
मुद्रा—अंगूठी, छाप, चिन्ह ॥
मुद्रित—छपाहुवा ॥
मुरज—बाजा विशेष ॥
मुष्ट—मुट्ठी, मुक्का ॥
मुसलोपम—मूसलकीहै उपमा जिसकी ॥
मूक—गूंगा ॥
मूल—जड़ ॥
मूसै—लूटै ॥
मेरू—पहाड़ ॥
मेघकुमार—देवजाति ॥
मैथुन—स्त्री भोग, रति ॥

मोचनी—दूर करनेवाली, उखेड़नेवाली ॥
मोष—मोक्ष, मुक्ति ॥
मोपा—मोतिया पुष्प ॥
मोह—ममत, चाहत, आकुलता ॥
मोहनी—८ कर्म में से १ कर्मका नाम ॥
मौलसरी—वृक्ष विशेष ॥
मृगछाला—हिरनकी खाल ॥
मृगांक—चंद्रमा ॥
मृगेश्वर—सिंह, शेर ॥
मृतक—मराहुवा ॥
मृदु—मुलायम, कोमल, नर्म ॥
मृदंग—बाजा विशेष ॥

य

यथा—जैसे अर्थ में ॥
यथार्थ—ठीक, जैसेका तैसा ॥
यमकगिर—पहाड़ विशेष जो ४ हैं ॥
यश—कीर्ति ॥
यषदेव—यक्षदेव ॥
यज्ञपुरुष—उत्तम पुरुष ॥
यज्ञ—पूजा ॥
याचक—भिखारी, मंगता ॥
युगलया—भोग भूमिया ॥
योग—योग्य, लायक ॥
योतिषी—देवता जाति ॥
योवन—जवानी ॥

र

रंक—दीन, महताज ॥
रंगधरा } रंगभूमि } रंगमही } नाचघर, तमाशेकास्थान, अखाड़ा,
रंग—घोड़ा ॥
रक्त—लालरंग ॥
रज—धूल, मिट्टी ॥
रजत—चांदी ॥
रजनी—रात्री ॥
रजनीपति—चंद्रमा ॥
रण—युद्ध, लड़ाई ॥
रत्नधरा—रत्नमई धरती ॥
रत्नकुक्ष—रत्नकोष ॥
रत्नाकर—रत्नग्रह ॥
रति—कामदेव की स्त्री, रचने अर्थ में ॥
रतिपति—कामदेव ॥
रतिवंती—रतियोग स्त्री ॥
रती—भाग, नसीब ॥
रमा—लक्ष्मी ॥
रमणीय—सुंदर, रमणे योग ॥
रयणायर—समुद्र ॥
रवन्न } रवाना } सोहना, सुंदर ॥
रवि—सूर्य ॥
रस—धातु, स्वाद ॥
रसाल—रसीला, आम ॥
राग—ममत, प्यार ॥
राजग्रिही—१ नगरका नाम ॥
राजपत्र—परवाना, फरमान ॥
राजैं—शोभादें ॥
राते—लालहुये ॥
रानो—बड़ो ॥
राय—आत्मा, जीव ॥
राय—राजा ॥
रावण—लंकाके राजाका नाम ॥
रास—समूह, ढेर ॥
रिजु—विमान का नाम ॥

रिपु-वैरी, शत्रु, दुश्मन ॥
रिस—कोप, गुस्सा ॥
रीति—चलन, व्यवहार ॥
रुद्र-महादेव, नरकगामी पुरुष ॥
रुद्रध्यान-खोटाध्यान ॥
रुधिर-लहू, खून ॥
रूपाचल—पहाड़ का नाम ॥
रेणु—चूर, बुरादा, चूर्ण ॥
रोम—रूंगटे, बाल ॥
रोमांचित-आनंद में रूंगटे खड़ाहोना ॥
रोस—क्रोध, गुस्सा ॥
रोहिणि-नक्षत्र, तारा, स्त्री विशेष ॥

ल

लंघ—लंघना, उलंघना ॥
लंबमान—लटकते हुये ॥
लगार—पांति, कतार, थोड़ासाभी ॥
लघु } छोटा ॥
लघू }
लता—बेल ॥
लँपटी—लबाड़, झूठा ॥
लवधि—प्राप्ति ॥
ललित-सुंदर, प्यारा ॥
लवलेश—थोड़ा, जरासा ॥
लसैं—शोमादें ॥
लहै—देखै, पावै ॥
लक्ष्मी—स्त्री, देवीकानाम जिसका कमल में वासा है, धन, दौलत, मोक्ष ॥
लक्षित—लक्षणवान ॥
लाभ—फायदा ॥
लार—साथ, हमराह, प्यार ॥
लावंती-सुंदरी, नमकीन स्त्री, रूपवतीस्त्री ॥

लीन—डूबाहुवा, मग्न ॥
लीला—पतिसंग स्त्रियोंका खेलकूद ॥
लीलावती—खिलारस्त्री, हंसमुख स्त्री ॥
लुब्ध—लोभी, लालची ॥
लेश-थोड़ा, जरा ॥
लेश्या—योग कषाय सहित प्रणामों की अवस्था ॥
लोकोत्तर—लोकसे बाहर ॥
लोकनाड़ी—नाली ॥
लोकान्तिक—स्वर्गस्थान विशेष ॥
लोचन—आंख, लोंचना, उखेड़ना ॥
लोय-लोक, लोग ॥
लोयन—आंख ॥
लोहित—लाल, कठोर ॥

व

वंड } वाले अर्थ में, यथा वलवंड मलवंत
वंत } वलवाला ॥
वत्सल—प्यार, प्रीत ॥
वरी—ब्याही ॥
वलि—सदका ॥
वहिरंग—बाहरके ॥
वहिरलापिका—? प्रकारकी पहेली ॥
वाट—रस्ता ॥
वाल—पवन, हवा ॥
वापिका—बावड़ी ॥
व्याल—सर्प, हाथी ॥
व्याधि—उपद्रव ॥
व्याकर्ण-वाक्यवा शब्दका स्पष्ट करने वालाशास्त्र ॥
विकसना-खिलना ॥

विकट—कठोर, खोटा ॥
विक्रया—अनेक शरीर धारण करना ॥
विगत—दूर करने वाली ॥
विख्यात—प्रत्यक्ष, फैला ॥
विगूचै—रोकै, बांधे ॥
विघन—उपद्रव, विघ्न ॥
विजै—फतह ॥
विंजन—छोटेचिन्हतिल आदि ॥
विथा—दुःख, पीड़ा ॥
विंतरदेव—१ जातिके देव ॥
विजयारध—पर्वत विशेष ॥
विदश—दिशा ॥
विदेह—क्षेत्र विशेष ॥
विद्युत—बिजली ॥
विद्रुम—लालमूंगा ॥
विध्य—बिंधाहुवा ॥
वित्य—धन ॥
विध्वंश—नासकरै ॥
विधान—चलन, व्यवहार ॥
विनय—अदब, बड़ाई ॥
विपीत—उलटी ॥
विपाक—फल, नतीजा ॥
विपुल—ऊँचा ॥
विप्र—ब्राह्मन ॥
विंब—प्रतिमा, मूर्ति ॥
विविध—नाना प्रकार ॥
विभंगा—मिथ्याज्ञान ॥
विभूति—संपदा ॥
विमला—पार्श्वनाथस्वामी की पालकी का नाम ॥
विमुख—विरुध, फिराहुवा ॥
विराधै—मारै, हतै, विरोध बैरभाव ॥
विरतंत—क़िस्सा, कहानी, कहना ॥
विरचन—मुछेद होना, जुदाहोना ॥
विरद—कीर्ति, यश, प्रशंसा ॥
विललाय }
विलाप } दुःख याद कर रोना ॥
विव्हल—आकुलहोना, बेकरारहोना ॥
विशेष—खास, बहुत ॥
विश्व—संपूर्ण, संसार ॥
विश्वाश—यकीन, निश्चय ॥
विष—ज़हर ॥
विषधर—सर्प ॥
विषम—क्रूर, कठोर ॥
विषनी—विषन सेनेवाला ॥
विसरूँ—भूलूं, छोड़ूं ॥
विसमय—आश्चर्जमान होना ॥
विस्तर—फैलाव ॥
विहसाय—हंसना ॥
विहन—मारने वाला ॥
विहार—चलना ॥
विहरमान—चलते हुए ॥
वीथी—गली, कूचा ॥
वीरज—पराक्रम ॥
वृज—गौशाला ॥
वृन्द—समूह, झुंड ॥
व्यय—नाश ॥
वृषभसेन—आदनाथ स्वामी के प्रधान गण धर का नाम ॥
वृषभ—बैल ॥
वृषभाचल—पहाड़ विशेष ॥
वेताल—यन्त्र, प्रेतजाती ॥
वेगवती—नदी ॥
वैडूरय—१प्रकार की मणी नीलरंग ॥
वैतरनी—नर्क की नदी ॥
वैरूप—शरण, सहारा, क्रोध, विरोध रहित

व्योम—आकाश ॥

श

शक्ति—सामर्थता, बल ॥
शम्बर—दैत्य ॥
शशि—चन्द्रमा ॥
शक्र—इन्द्र ॥
शची—इंद्राणी ॥
शल्य—फांस, कांटा ॥
शलाका—महान पुरुष जो ६३ हैं ॥
शत्रु—वैरी ॥
शंसनो—प्रशंसित, भला, सुन्दर ॥
श्रवण—कान ॥
श्रवै—बहै ॥
शाकिनि—पिशाच विशेष, यक्षणी ॥
शिथल—सुस्त, कमज़ोर ॥
शिखर—चोटी ॥
शिव—मोक्ष, कल्याण ॥
शिशु—बालक, बच्चा ॥
शिल्पी—राज, मेमार, संगतराश ॥
शिल्पकला—मेमारी विद्या ॥
शिला—पत्थर की चटान ॥
शील—उत्तमस्वभाव, परस्त्रीभोग त्याग ॥
श्रीवच्छ—१ चिन्ह का नाम जो महान पुरुषों की छातीपर होता है ॥
श्रीगृह-कोष, खज़ाना ॥
श्रीवंत-लक्ष्मीमान, धनवान ॥
श्रीवृक्ष-कल्पवृक्ष ॥
शुचि-निर्मल, पाक, साफ़ ॥
शुक्ल—सफेद, शुक्लध्यान ॥
श्रुति—शास्त्र, धर्मशास्त्र ॥
श्रेय—आनंद, कल्यान ॥
श्रेणी—सीढ़ी, ज़ीना ॥
शैल—पहाड़ ॥
श्रोणित—लहू ॥

ष

षंडै—तोड़ै ॥
षंदरूप—परमाणु रूप ॥
षंद—परमानुका समूह ॥
षग—आकाशगामी, पक्षी, विद्याधर ॥
षांडा—तलवार, शास्त्र ॥
षीर—दूध ॥
षीणो—क्षीणो ॥
षैकाल—क्षैकाल ॥

स

संकेत—इशारा, संक्षेप ॥
संष—बाजा विशेष ॥
संख्या—गिणती ॥
संग्राम—लड़ाई ॥
संगी—साथी ॥
संगीत—राग, गीत ॥
संघ-ग्रोह, फिरका ॥
संघाती—साथी ॥
संघार—मारना ॥
संचित-इकट्ठे हुवे ॥
संजम-व्रत, इंद्रीदमन ॥
संठान—सूरत, मूर्ति ॥
संपा—बिजली ॥
संवतसर—वर्ष, साल ॥
संपजै— पूर्तिहो, मिलै ॥
संगलेशण—मिलने अर्थ में ॥

संवर—आतेहुए कर्मों की रोक ॥
संपति—दौलत, हसमत ॥
संक्षेप—कम करके ॥
सकंटक—कांटो वाला ॥
सकटाकृत—गाड़ी के आकार ॥
सखा—मित्र, दोस्त ॥
सघन—घिनके, मिले मिले ॥
सची—इंद्राणी ॥
सठ—मूर्ख ॥
सदाफल—वृक्ष विशेष ॥
सनतकुमार—देवजाती ॥
सन्यास—दिगंबर धर्म ॥
समचेत—शुद्ध चित ॥
समप्पै—इकट्ठा करै, जमाकरै ॥
संतूल—बराबर ॥
समाज—गोट, सभा ॥
समान—बराबर, तुल्य ॥
समाधान—सबूत ॥
समाप—धरै ॥
समास—मिलाप, जोड़ ॥
समिति—जैन शास्त्र में ५ है ॥
समीप—पास, नजदीक ॥
समुदाय—समूह, मजमुआ ॥
समेदाचल—समेद सिखर का पहाड़ ॥
समोसरण—वैरभाव को छोड़कर जिस स्थान में जीव बैठते हैं अर्थात् तिर्थंकरों की सभा ॥
सयन—सोना ॥
सयाल—गीदड़ पशु ॥
सयोग—योगसंयुक्त केवली ॥
सरवर—तालाव, ताल ॥
सर } शर } तीर, बाण ॥

सरल—सीधा ॥
सरस—अति, ज्यादा ॥
सरिता—नदी ॥
सल्लकी—वृक्ष विशेष ॥
सरोज—कमल ॥
सलिल—जल, पानी ॥
ससक—मृगपशु, मूस ॥
सहज—स्वभाव ॥
सहस—हजार ॥
सहोदर—छोटाभाई ॥
सह—ठीक, मुनासिब ॥
स्वमेव—आपही आप ॥
स्वजन—अपने लोग ॥
स्वयंगसिद्ध—आपही आप बना ॥
साख—गवाही ॥
सागर—समुद्र, १ कालकी गिनती का नाम
सांधर्णी—मिणकी, मिलीजुली ॥
साज—सामान, बाजा ॥
साता—सुख, आनंद ॥
सायर—सागर, समुद्र ॥
सार—उत्तम, मूल ॥
सारदा—सरस्वती ॥
सारस्वत—व्याकरण के १ ग्रन्थका नाम ॥
सार्थवाही—व्योपारियोंके समूह का प्रधान पुरुष ॥
सावधान—चौकस, होशियार ॥
सावद्य—पापसंयुक्त काम ॥
सासन—शास्त्र, आज्ञा ॥
सासते—सदैव ॥
सासऊसास—स्वांस, दम ॥
स्वातजल—कन्याके सूरज में जो जल बरसै
स्वान—कूकर, कुत्ता ॥
स्याद—कथंचित, कहना ॥

स्याल—गीदड़ पशु ॥
सिकताथल—रेतली धरती ॥
सिथल—आलसी ॥
सिंघाटक—शरकी अटकाने वाली ॥
सिली—भवरा जंतु ॥
सीरी—साझी, शरीक ॥
सीता } सीतो } २नदियों के नाम ॥
सीस } शीस } सिर, मूड़, कपाल ॥
सु—उत्तम अर्थ में ॥
सुकमाल—कोमल, मुलायम ॥
सुजान—भला, अच्छा आदमी ॥
सुछंद—मनमौजी, आज़ाद ॥
सुत—बेटा, पुत्र ।
सुदर्शन—पहाड़ विशेष, चक्र विशेष ॥
सुधारस—अमृत ॥
सुपथ—उत्तम पंथ ॥
सुंडाल—हाथी ॥
सुन्य—विंदु, खाली, थोथ ॥
सुमेर } सुमेद } शिषरजीका पहाड़ ॥
सुरतरु—कल्पवृक्ष ॥
सुराभि—सुगंधित ॥
सुरम्य—उत्तम, भला, १ देशका नाम ॥
सुभ्र—नरक ॥
सुलभ—आसान, सहज ॥
सुमन—फूल, पुष्प ॥
सुहाग—सुभाग्य ॥
सुहान—भला, उत्तम ॥
सुदंसनो—सुदर्शनमेरू ॥
स्वयंभू—पार्श्वनाथ स्वामीके गणधरकानाम
सुभित—आकालका विरोधीशब्द,समा ॥

सूल—कांटा, दर्द ॥
सुप्रतीक—ठौणा, साथिया, भला ॥
सूचक—विवर्ण,तफसील ॥
सूर—सूरवीर, योधा ॥
सूरि—आचारियोंकी १ पदवी ॥
सेना—फौज ॥
सैनी—मनवाला जीव ॥
सैनासन—पैरपसार चितसोना ॥
सोम—शीतल, चंद्रमा ॥
सोपान—सीढी, जीना ॥
सोहना—सौहजनावृक्ष ॥

ह

हंस—जीव, पक्षी विशेष ॥
हट—जिद ॥
हट्ट—हाट, दुकान ॥
हस्ती—हाथी ॥
हनहन—मारमार ॥
हरि—इंद्र ॥
हा—येशब्द शोककेस्थान में बोलाजाता है ॥
हाटक—सोना धातु ॥
हिगोट—वृक्षविशेष ॥
हिम—सरदी ॥
हिमगिर—हिमालपहाड़ ॥
हिंसानन्दी—हिंसामैं आनंदमाननेवाला ॥
हींस—वृक्षविशेष ॥
हुँडक—बेडौल शरीर ॥
हुलास—आनंद ॥
हेठ—तुच्छ, नीच ॥
हेत—कारण, सबब ॥
हेम—सोनाधातु ॥

त्रिलोकमहापति—१ ग्रंथकानाम ॥
त्रिसा—२ इंद्रीनीत ॥

हेरैं—देखैं ॥
होम—अग्निमें घृतडाल मंत्र पढ स्थान शुद्ध करना ॥
होराहार—उत्तममणि ॥

त्र

त्रास—दुःख, तकलीफ ॥

ज्ञ

ज्ञान—जैनशास्त्रमें ५ हैं, मति १ श्रुति २ अवधि ३ मनपर्यय ४ केवल ५ ॥

—:०:—

॥ इति भाषापार्श्वपुराणशब्दार्थकोष संपूर्णम् ॥

शुद्धाशुद्धपत्रश्रीपार्श्वपुराणभाषाछंदबद्ध

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१३	सिद्ध	सिद्धि	८२	१४	डर	डर
७	१७	लोकोन्तर	लोकोत्तर	८७	२	रत्नाश्रय	रत्नत्रय
११	११	शौकीन	सौकन	८७	७	तुरंग	तुरंग
१३	१०	रतिमुरे	रतिगुरुरे	९६	१५	कोविदा	कोविद
१९	१	नहिलोय	नलोय	९७	१६	आकप	आकार
२१	८	चोभवन्त	शोभवन्त	१०३	११	तुरंग ने	तरंगनि
३७	१	सपर्थे	समर्थे	१०४	१०	नाग	बाग
४१	७	सन्त	सत्त	१०५	४	त्रिवभुन	त्रिभुवन
४४	२	कोइ	को	११२	२	पंचनन	पंचानन
४७	४	ताही तैतैं	ताही तैते	११४	५	आनन्द	आनँद
४८	१३	त्रिपजै	त्रिपैल	११७	१४	आनन्द	आनँद
४९	१	तय	तपे	११९	२०	गहभाग	बड़भाग
५६	१२	पाद	पार	१२७	१०	हांतैं	रहैं
६८	२	जोयांचत	ज्यौंयाचत	१३७	१७	दृगा	दगा
८१	१	वाँण	वाण	१४०	२१	आ	आदि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४३	१४	सामे	सोम	२०७	२	दहेया	दहो
१४६	१	कतर	करत	२०८	२	विरच्ये	विरचे
१४९	११	समुप	समुद	२०९	३	रमरच्ये	रमरचे
१५६	३	यसा	यस्य	२१०	१२	धनते	तेधन
१६४	११	जुथा	जुथ	२११	९	पम	यप
१६७	८	सा	त	२१६	४	पीछी	पीछी
१८२	१६	तिथि	थिति	२१६	७	मांन्न	मून
१८७	६	सैनी	सेनी	२१६	१०	पीछी	पीछी
१८८	१६	असभूत	असद्भूत	२१९	३	परकैं	परके
१९४	२	असैनी	असेनी	२२२	१४	करी	करि
१९४	३	सैनी	सेनी	२२३	१४	प्रवीन	परवीन
१९४	९	देह	दहे	२२७	१०	सोल	सोलह
२००	१६	काली	काई	२३४	७	अछर	अत्तर
२०१	१४	आकाश	अवकाश	२३५	११	देन	देउ
२०७	२	कहेया	कहो				इति

॥ विज्ञापन ॥

जैन पुस्तकालय कृपापात्र अमनसिंह जैन सुनपत नगर निवासी अपील नवीस ज़िला दिल्ली की विक्रयार्थ पुस्तक, दिल्ली कशमीरी दर्वाजे से मिलसक्ती हैं ॥

(१) जिनमतकी पुस्तक जो आपही संशोधन टीका-टिप्पण-कोषसे सुभूषित कर अति उत्तम चिकने कागज़ पर मुद्रित कराई हैं इन पुस्तकों में १० प्रति के मूल्य आने पर १ पुस्तक उपहार में दीजायगी डाकव्यय ग्राहक के ओर है-

(१) भूधर जैनशतक भाषा छंदबंद्धच कविवर भूधरदास रचितजो शब्दार्थ सरलार्थ टीका कर छपवाया है बड़ीप्रिय पुस्तक है जिल्द सहित ॥=) बिनाजिल्द ॥)

(२) सज्जनचित्तवल्लभ काव्य संस्कृत मुनिमल्लिसेन आचार्य्यकृत जिसको पंडित मिहरचंद जीने पदच्छेद अन्वय संस्कृत वा भाषा विवर्णकर प्रतिश्लोक अतिललितभाषा छंदबनाये जिल्दसहित॥।) बिनाजिल्द ॥-)

(३) सुक्तमुक्तावली भाषा छंदबंद क-

विवर बनारसीदासजी का संस्कृत सुक्तमुक्तावली सोमप्रभाचार्य्यकृत से उल्थाकराहुवाशुद्धकरकोपसहित जिल्ददार।ᐟ)बिनाजिल्द।)

(४) आलोचनापाठ भाषा छंदबंद जिस का प्रतिदिन पाठ मनुष्य को अपनी पिछली खोटीकृत यादकराकर आगे को खोटे कार्मों से बचाता है मोल ᐟ)

(५) छहढाला भाषा पंडित दौलतराम जी लश्कर गवालियर निवासी कृत जिस को सरलार्थ टीका वा शब्दार्थ कोष से भूषित कर छपवाया है अवश्य देखो जिल्द सहित ।≈) बिनाजिल्द ।ᐟ)

(६) जिनगुणमुक्तावली भाषा भूधरदास जीकृत कोष सहित ᐟ)

(७) पार्श्वनाथ स्तुति अर्थात् भाषा कल्याण मंदिर बनारसीदासजी कृत कोष सहित ᐟ)॥

(८) जिनदेव स्तुति अर्थात भाषा एकीभाव भूधरदासजी कृत कोष सहित ᐟ)॥

(९)जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र अर्थात् भाषा भूपाल चौबीसी भूधरदासकृतकोष सहित ᐟ)॥

(१०) श्रीआदिनाथ स्तुति अर्थात भाषा भक्तामर हेमराज कृत कोष सहित छापाटाइप मोल ≈)

(११) प्रतिमाचालीसी भाषा द्यानतराय कृत जिसमेंप्रतिमापूजन सिद्धकियाहैमोल)॥

(१२) पार्श्वपुराण भाषा छंदबद्ध भूधरदासजी कृत टिप्पण वा कोष सहित मोल १)—दिल्द स० १॥)

(२) जिनमतकी पुस्तक जो बंबई आदि नगरों से विक्रयार्थ मगाई गई हैं

(१) चंद्रप्रभुकाव्य संस्कृत वीरनंदी विरचित उत्कृष्ट काव्य है १)

(२) धर्मशर्माभ्युदय काव्य महाकविश्री हरिचंद्रविरचित अतिकठिनकाव्यहै मोल १।)

(३) नेमदूत काव्य संस्कृत विक्रमकवि विरचित मेघदूत काव्य के जोड़ें में अति सुंदर काव्य है कविने प्रतिश्लोक मेघदूत कविकालीदास रचित का प्रति श्लोक एक चरण के साथ तीन चरण अपने बनाकर रचित श्लोकपूराकियाहै देखनेयोग्यहैमोल।)

(४) शृंगारवैराग्य तरंगिणी संस्कृत सोमप्रभाचार्य कृत संस्कृत टीका सहित मोल ≈)

(५) तत्वार्थसूत्र संस्कृत १० अध्याय अर्थ प्रकाशनी भाषा टीका सदासुखजी कृत सहित मोल १)

(६) तत्वार्थसूत्र मूल संस्कृत ≈)वाᐟ)

(७) रत्नकरंडश्रावकाचार संस्कृत समंत भद्रस्वामी रचित भाषा टीका सदासुख जीकृत बड़ाउत्तम महान ग्रंथ है बड़े मोटे टाइप में छपा है मोल ५)

(८) रत्नकरंडश्रावकाचार संस्कृत समंत भद्रस्वामी रचित छोटी भाषा टीका सहित मोल ।ᐟ)

(९) पंचस्तोत्र संस्कृत-भक्तामर १ कल्याण मंदिर २ एकीभाव ३ विषापहार ४ भूपालचतुर्विंशतिका ५ मोल ।ᐟ)

(१०) भक्तामर संस्कृत मानतुंगाचार्य रचित संस्कृत टीका सहित वा भाषा भक्तामर हेमराज कृत चारागनियों में भक्तामर जिल्द सहित मोल ॥≈)

(११) कल्याणमंदिर संस्कृत कुमुद चंद्राचार्य रचित संस्कृत टीका सहित वा भाषा कल्याणमंदिर कवि बनारसीदासजी कृत मोल ॥)

[१२] क्रियाकोष भाषा छंदबद्ध किशन सिंह कृत जिसमें ५३ क्रियाश्रावग का कथन है मोल १) जिल्द सहित ॥

[१३] बारहमासा संग्रह भाषा जिसमें ४ बारहमासे हैं यती नैनसुखदासजी कृत बड़े ललित बारहमासे हैं मोल ≈)॥

[१४] मुनिराज बारहमासा भाषा जोतिषरत्न जैनी जियालालजी कृत मोल -)

[१५] प्रातसमय मंगलपाठ भाषा जोतिषरत्न जैनी जियालालजी कृत)॥

[१६] सुगुरुशतक भाषा जिनदास जी कृत मोल ।)

[१७] सम्यक्ज्ञानदीपका भाषा धर्मदास जी छुल्लक कृत मोल ॥)

[१८] भक्तामर संस्कृत मोल)॥

[१९] जैनवृतकथा छंदबद्ध मोल ।≈)

[२०] पंच मंगल भाषा रूपचंदजी कृत मोल -)।

[२१]भजन संग्रह भाषा मोल -)॥

[२२] ज्ञानानंद लावनी पहलाभाग ।) दूसरा ॥)

[२३]धर्मअमृत सारभाषा मोल ॥≈)

[२४]सप्तम गुच्छक जिसमें २१ स्तोत्र संस्कृत हैं १≈)

[२५]भाषा पूजासंग्रह मो० ।-)

[२६] शीलव्रत कथा वचनका मोल ।)

[२७] मोक्षमार्ग प्रकाश भाषा टोडरमल कृत ३)

[२८] द्रव्य संग्रह संस्कृत मोल ।)

[२९]नवकार मंत्र रंगीन ।।) सादा ≈)

[३०] गिरनार,शिषर,आबू—ढाईदीप-जंबूद्वीप ज्ञानचौसर—नक्से रंगीन फी ।-)

[३१] विषापहार भाषा मोल)॥

[३२] दश आरती मो०)॥

[१] जैनियोंकी बनाई भाषा पुस्तक वा संस्कृत जो जैन पाठशालाओं में पढ़ाई जाती हैं और देखने योग्य हैं॥

[१] कातंत्ररूपमाला व्याकरण जिस के सूत्र जैन आचार्य्य मच्छदेव रचित हैं और श्रीमति भावसेन त्रिविद्यदेव नेवक्रया रचीहै मोल १-)

[२] लिंगबोध संस्कृत पन्नालालजी रचित जिसमें लिंगका बोधहोताहै मो०≈)

[३]बालमित्रपहलाभाग≈) दूसरा।-)

[४]जैनप्रथमपुस्तक ।) दूसराभाग ॥)

[५] बालबोधसंविज्ञान मोल ≈)

[६] शिक्षापत्री उल्था पंदनामा सादी मोल ≈)

[७] पुण्योपवन उल्था गुलिस्तांसादी मोल १)

[८] अंधेके हाथ बटेर भाषा मो० ≈)

[९]चमत्कारका भाषा मोल ≈)

[१०] वनिताबोधनी भाषा मो० ≈)

[११] बाईसपरीसह भाषा जोगीरासा सहित -)॥

[१२] दयानंद छलकपट दर्पन जियालालजी रचित मोल २)

[१३] कुसंग वृत्त भाषा मो० -)

इतिशुभम् ॥

प्रार्थना

महान् पुरुषों की सेवा में सविनय निवेदन है कि इस श्रीपार्श्वपुराण भाषा छंदबद्ध के शुद्ध करने औ छपवाने में मैने बहुत कुछ परिश्रम और अपना धन खर्च किया है कोई साहब मेरी आज्ञाविना इस पुस्तक की प्रतिकराकर छपवाने का प्रबंध न करें और यह भी सूचित करताहूं कि जिन पुस्तकपर मेरी दस्ती मुहर या हस्ताक्षर और मेरेजैन पुस्तकालय की छाप न होगी वह पुस्तक चोरी की समझी जायगी॥

कृपाभिलाषी

अमनसिंह जैनी